सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 124, नई दिल्ली, रविवार 13 जुलाई 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

आदत किसी भी चीज की अच्छी नहीं होती, अति होने पर हमेशा कष्टदायक होती है।

03 इमारत ढहने के हादसे की उच्च स्तरीय जांच हो। देवेन्द्र यादव

06 शादियाँ में नई सामाजिक बीमारी

08 मैं अब सीधे चुनाव नहीं लड़ूंगा, अब युवा पीढ़ी को मौका दूंगा : केंद्रमंत्री जुएल

दिल्ली में मौजूदा ईवी पॉलिसी रहेगी बरकरार? इलेक्ट्रिक वाहन मालिकों को मिलेगा बड़ा फायदा

संजय बाटला

दिल्ली सरकार अपनी मौजूदा ईवी नीति को आगे बढ़ाने पर विचार कर रही है जो 15 जुलाई को खत्म हो रही है। नई ईवी नीति 2.0 पर काम चल रहा है जिसे अंतिम रूप देने से पहले सरकार कई विकल्पों पर विचार कर रही है। इस नीति का उद्देश्य प्रदूषण कम करना और इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा देना है।

नई दिल्ली। दिल्ली सरकार मौजूदा ईवी नीति, जो 15 जुलाई को समाप्त हो रही है, को आगे बढ़ाने पर विचार कर रही है। पिछली आप सरकार और वर्तमान भाजपा सरकार के कार्यकाल में मौजूदा ईवी नीति को कई बार बढ़ाया जा चुका है।

सूत्रों ने बताया कि नई ईवी नीति 2.0 पर अभी काम चल रहा है। ऐसे में सरकार मौजूदा नीति को तीन महीने के लिए और बढ़ा सकती है। ईवी नीति 2.0 को अंतिम रूप देने से पहले सरकार कई विकल्पों पर विचार कर रही है।

नई नीति पर प्रतिक्रिया प्राप्त करने के लिए हितधारकों के साथ परामर्श भी किया जा सकता है। यह भी संभावना है कि सरकार ईवी नीति 2.0 का मसौदा सार्वजनिक कर सकती है और जनता की प्रतिक्रिया ले सकती है।

पिछली आप सरकार की प्रमुख पहलों में से एक के रूप में अगस्त 2020 में शुरू की गई इस नीति का उद्देश्य वाहनों से होने वाले प्रदूषण से निपटना और 2024 तक इलेक्ट्रिक वाहनों को अपनाने की दर को 25 प्रतिशत तक बढ़ाना है।

ईवी नीति 2.0 का मुख्य उद्देश्य प्रदूषण कम करने के लिए इलेक्ट्रिक वाहनों को अपनाने को प्रोत्साहित करना है। इसमें दोपहिया, बस, तिपहिया और मालवाहक वाहन जैसी श्रेणियाँ शामिल हो सकती हैं, जिन्हें इलेक्ट्रिक वाहनों में बदलने का लक्ष्य रखा जा सकता है।

मसौदा नीति में इलेक्ट्रिक वाहनों को अपनाने को बढ़ावा देने के लिए कई प्रोत्साहनों की रूपरेखा भी दी जाएगी। महिला चालकों को इलेक्ट्रिक दोपहिया वाहन की खरीद पर 36,000 रुपये तक की सब्सिडी दी जा सकती है।

इसी प्रकार, इलेक्ट्रिक दोपहिया वाहनों के उपयोग को प्रोत्साहित करने के लिए, सरकार प्रति किलोवाट-घंटे 10,000 रुपये की खरीद प्रोत्साहन राशि दे सकती है, जिसकी अधिकतम सीमा प्रति वाहन 30,000 रुपये होगी।

नई नीति पर प्रतिक्रिया प्राप्त करने के लिए हितधारकों के साथ परामर्श भी किया जा सकता है। यह भी संभावना है कि सरकार ईवी नीति 2.0 का मसौदा सार्वजनिक कर सकती है और जनता की प्रतिक्रिया ले सकती है। पिछली आप सरकार की प्रमुख पहलों में से एक के रूप में अगस्त 2020 में शुरू की गई इस नीति का उद्देश्य वाहनों से होने वाले प्रदूषण से निपटना और 2024 तक इलेक्ट्रिक वाहनों को अपनाने की दर को 25 प्रतिशत तक बढ़ाना है।

सरिता विहार और पुल प्रह्लादपुर अंडरपास में जलभराव, कई मार्गों पर लगा लंबा ट्रैफिक जाम

परिवहन विशेष न्यूज

शनिवार को दक्षिणी दिल्ली में भारी बारिश के कारण सरिता विहार और पुल प्रह्लादपुर अंडरपास में पानी भर गया जिससे यातायात बाधित हो गया। फरीदाबाद जाने वाले वाहनों को डायवर्ट किया गया जिससे कई मार्गों पर लंबा जाम लग गया। नालों की डीसिल्टिंग पर भी सवाल उठे हैं। जलभराव के कारण लोगों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ा।

दिल्ली: सरिता विहार के साथ ही पुल प्रह्लादपुर अंडरपास में शनिवार देर शाम हुई वर्षा के चलते पानी भर गया। इनसे वाहनों का आवाजाही बंद कर दी गई।

फरीदाबाद जाने वाले वाहनों को एमबी रोड से मां आनंदमयी मार्ग, कालकाजी, मोदी मिल होते हुए मथुरा रोड के लिए डायवर्ट किया गया।

अचानक से वाहनों का दबाव बढ़ने से ओखला एस्टेट मार्ग, एमबी रोड, मां आनंदमयी मार्ग, मथुरा रोड पर लंबा जाम लग गया और दक्षिणी दिल्ली का ज्यादातर हिस्सा रात तक चोक रहा।

तेज वर्षा से इन इलाकों में हो गया जलभराव

तेज वर्षा के चलते महरौली-बदरपुर मार्ग, संगम विहार, रतिया मार्ग, मंगल बाजार, सैनिक फार्म, ओखला फेज-तीन से गोविंदपुरी मार्ग, कश्मीरी लाल ढींगरा मार्ग, हंसराज सेठी मार्ग, मोदी मिल फ्लाईओवर के नीचे पानी भर गया।

कालकाजी के वार्ड संख्या 175 में कश्मीरी लाल ढींगरा मार्ग स्थित नालों की डीसिल्टिंग हाल ही में कराई गई थी। पूर्व पार्षद खविंद्र सिंह कैप्टन ने आरोप लगाया कि डीसिल्टिंग सही तरीके न नहीं होने से पानी पास नहीं हो रहा है।

मुनिरका फ्लाईओवर के नीचे ऑडी कार का कहर, 11 साल की बच्ची समेत पांच लोगों को रौंदा; सफदरजंग में चल रहा इलाज

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली के मुनिरका फ्लाईओवर के नीचे सो रहे लोगों पर एक तेज रफ्तार ऑडी कार सवार ने गाड़ी चढ़ा दी जिससे पांच लोग घायल हो गए जिनमें एक 11 साल की बच्ची भी शामिल है। घटना के बाद भाग रहे चालक ने शंकर विहार में एक ट्रक को भी टक्कर मारी जिसके बाद पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया। आरोपी के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच की जा रही है।

दिल्ली: मुनिरका फ्लाईओवर के नीचे सो रहे लोगों को एक तेज रफ्तार ऑडी कार ने रौंद दिया। ऑडी सवार ने शराब के नशे में कार को लोगों पर चढ़ा दिया। हादसे में 11 साल की बच्ची सहित पांच लोग घायल हो गए, जिन्हें एम्स ट्रामा सेंटर व सफदरजंग अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

घटना के बाद ऑडी कार सवारा मौके से फरार हो गया। इसके बाद ऑडी सवार ने आगे शंकर विहार कैंप के पास एक खड़े ट्रक में पीछे से टक्कर मार दी। वहां गश्त कर रही पुलिस ने उसे पकड़ लिया।

मूलरूप से राजस्थान के अलवर निवासी सबानी ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि उसका परिवार मुनिरका फ्लाईओवर के नीचे फूल बेचने का काम करता है। रात को सभी वहीं सोते हैं।

नौ जुलाई की रात की है घटना

सबानी ने बताया कि नौ जुलाई की रात को वह परिवार सहित फुटपाथ पर सोया हुआ था। आधी रात के बाद करीब डेढ़ बजे अचानक तेज आवाज हुई और वहां चीख पुकार मच गई।

देखा तो एक सफेद रंग की ऑडी कार फुटपाथ पर सो रहे लोगों पर चढ़ा दी थी, जिससे वहां कई लोग घायल हो गए। शोर सुनकर लोग जमा हो गए तो कार सवार मौके से कार लेकर फरार हो गया।

घटना की सूचना पुलिस को दी गई। मौके पर पहुंची वसंत विहार थाना पुलिस ने घायलों को अस्पताल पहुंचाया, जिनकी पहचान सबानी, लाडी, रामचंदर, नारायणी और 11 वर्षीय बिमला के रूप में हुई है। लाडी की हालत गंभीर बताई जा रही है।

द्वारका सेक्टर-3 का रहने वाला ऑडी सवार गिरफ्तार

इस दौरान पुलिस को सूचना मिली की मुनिरका फ्लाईओवर के नीचे दुर्घटना कर फरार हुए कार चालक ने शंकर विहार कैंप के पास एक खड़े ट्रक में पीछे से टक्कर मार दी और वहां गश्त कर रही पुलिस टीम ने उसे पकड़ लिया है।

पुलिस ने ऑडी कार सवार द्वारिका सेक्टर-3 के आदर्श अपार्टमेंट निवासी उत्सव शेखर को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने उसके खिलाफ लापरवाही से वाहन चलाते हुए दुर्घटना करने की धाराओं में मामला दर्ज कर लिया है और मामले की जांच कर रही है।

मृतक को 5 लाख रुपये देगी डीएमआरसी, मेट्रो के कामकाज को लेकर फिर उठे सवाल..

दिल्ली के आजाद मार्केट इलाके में पुल मिठाई के पास एक इमारत गिरने के बाद मेट्रो के कामकाज को लेकर एक बार फिर सवाल उठाए जा रहे हैं। DMRC ने बताया कि यहां काम शुरू होने से पहले आस-पास की इमारतों का सर्वे किया गया था।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली: दिल्ली के आजाद मार्केट इलाके में पुल मिठाई के पास एक इमारत गिरने के बाद मेट्रो के कामकाज को लेकर एक बार फिर सवाल उठाए जा रहे हैं। हालांकि, डीएमआरसी ने एक आधिकारिक बयान जारी कर हादसे को लेकर स्थिति स्पष्ट की है। डीएमआरसी ने बताया है कि यहां काम शुरू होने से पहले आस-पास की इमारतों का सर्वे किया गया था और उसी दौरान जो इमारत गिरी, उसे पहले ही खतरनाक घोषित करते हुए खाली करा लिया गया था। इसके बावजूद मृतक मनोज दुकान के अंदर सोने के लिए कैसे चले गए, यह जांच का विषय है।

डीएमआरसी के प्रधान कार्यकारी निदेशक अनुज दयाल के मुताबिक, पुल मिठाई क्षेत्र में गुरुवार और शुक्रवार की दरम्यानी रात तीन दुकानें ढह गई। यहां इलाका मेट्रो फेज-4 के जनकपुरी वेस्ट-आर.के. आश्रम मार्ग कॉरिडोर के लिए चल रहे टनलिंग कार्य के प्रभाव क्षेत्र में आता है।

आस-पास की इमारतों का सर्वे किया गया था

डीएमआरसी ने बताया कि यहां काम शुरू होने से पहले आस-पास की इमारतों का सर्वे किया गया था। इस इमारत को पहले ही खतरनाक घोषित करते हुए खाली करा लिया गया था। इसके बावजूद मृतक मनोज दुकान के अंदर सोने के लिए कैसे चले गए, यह जांच का विषय है।

DMRC ने ऑनर्स को भेजा था नोटिस

बता दें कि यहां कुछ इमारतों को टनलिंग का काम शुरू होने से पहले ही असुरक्षित घोषित कर दिया गया था और DMRC की तरफ से बाकायदा नोटिस देकर उन्हें खाली करवा लिया गया था। DMRC से मिली जानकारी के मुताबिक, पिछले महीने 12 जून को ही इन इमारतों के ऑनर्स को बिल्डिंग खाली कराने के लिए पत्र जारी कर दिए गए थे, जिसमें स्पष्ट रूप से कहा गया था कि ये इमारतें बेहद जर्जर स्थिति में है और एहतियात के तौर पर इन्हें खाली करना आवश्यक है। हालांकि, ऑनर ने 23 जून को चिट्ठी पर रिसीविंग दी, जिसके बाद इमारतों को खाली करा लिया गया था और ऑनर को हिदायत दी गई थी कि वो काम पूरा होने तक किसी को भी इमारत में ना जाने दें।

इन सब प्रयासों के बावजूद बिल्डिंग गिर गई

इतना ही नहीं, टनलिंग के काम के दौरान ऐसी सभी इमारतों में संभावित नुकसान के जोखिम को कम करने के लिए उनमें सबसॉइल ग्राउटिंग की गई थी और बाहर से सपोर्ट भी लगाया गया था, ताकि इमारतों को स्थिर रखा जा सके। डीएमआरसी का कहना है कि इन सब प्रयासों के बावजूद बिल्डिंग गिर गई और दुर्भाग्यवश इस हादसे में एक व्यक्ति की मृत्यु हो गई।

हादसे की गहन जांच के आदेश दिए

डीएमआरसी ने मृतक के परिजनों को 5 लाख रुपये देने की घोषणा की है। साथ ही आस-पास की इमारतों का गहन सर्वे करके यह पता लगाया जा रहा है कि और किसी इमारत के इस तरह से गिरने का खतरा तो नहीं है। पास की एक अन्य इमारत को भी गिरने से बचाने के लिए प्रयास किए जा रहे हैं। इस हादसे की गहन जांच के आदेश भी दे दिए हैं। जिस जगह हादसा हुआ है, वह फेज-4 में बन रही मेट्रो लाइन के प्रस्तावित नबी करीम और पुल बंगश मेट्रो स्टेशनों के बीच का इलाका है। यहां मेसर्स एफकॉन्स लिमिटेड द्वारा टनलिंग का काम किया जा रहा है।

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)

TOLWA

website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल -0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मेंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

।। सावन और शिव का सम्बंध ।।

श्रावण के महीने को भगवान शिव का प्रिय मास माना जाता है। यही कारण है, कि इस महीने में महादेव की पूजा, आराधना का विशेष महत्व होता है। भगवान शिव को प्रसन्न करने के लिए श्रद्धालु सामर्थ्य अनुसार व्रत, उपवास, पूजन, अभिषेक आदि करते हैं। इस माह में की गई उपासना का विशेष फल भक्तों को प्राप्त होता है। अतः प्रस्तुत है कि शिव की आराधना के लिए यह माह विशेष क्यों-

भगवान शिव को सावन का महीना इतना प्रिय क्यों है, इसे लेकर एक पौराणिक कथा प्रचलित है, जिसमें सनत कुमारों द्वारा भगवान शिव से सावन माह के प्रिय होने का कारण पूछा, तो भगवान शिव ने इसका उत्तर दिया- कि जब देवी सती ने अपने पिता दक्ष के घर में योगशक्ति द्वारा अपने देह का त्याग किया था, उससे पहले देवी सती ने महादेव को प्रत्येक जन्म में पति के रूप में पाने का प्रण किया था। अपने दूसरे जन्म में देवी सती ने राजा हिमाचल और रानी मैना के घर में पार्वती के रूप में जन्म लिया था।

पार्वती के रूप में देवी ने अपनी युवावस्था में, सावन के महीने में अन्न, जल त्याग कर, निराहार रह कर कठोर व्रत किया था। मां पार्वती के इस व्रत से प्रसन्न होकर भगवान शिव ने देवी पार्वती से विवाह किया। तभी से भगवान महादेव सावन का महीन अतिप्रिय है।

इसके अलावा सावन मास के लिए यह भी मान्यता है, कि भगवान शिव सावन के महीने में धरती पर अवतरित होकर अपनी ससुराल गए थे और वहां उनका स्वागत अर्ध्य देकर, जलाभिषेक कर किया गया था। अतः माना जाता है, कि प्रत्येक वर्ष सावन माह में भगवान शिव अपनी ससुराल आते हैं। इसीलिए भक्तगण इस महीने में उनकी भक्ति में लीन रहते हैं, जिससे शिव की कृपा प्राप्त हो सके। सावन माह को शिव भक्ति के लिए उत्तम मान गया है।

इसके अलावा एक और कथा भी प्रचलित है, जिसके अनुसार- मरकंडू ऋषि के पुत्र मारकंडेय द्वारा लंबी आयु प्राप्त करने के लिए, सावन माह में ही घोर तप कर भगवान शिव को प्रसन्न कर उनकी कृपा प्राप्त की थी। इससे उन्हें ऐसी मंत्र शक्तियां प्राप्त हुईं, जिसके आगे यमराज भी नतमस्तक हो गए।

पंचक आज से होंगे शुरू

पांच दिनों के विशेष नक्षत्र संयोग को पंचक कहते हैं। इन पांच दिनों को शुभ और अशुभ कार्यों के लिए देखा जाता है। पंचक के दौरान कुछ कार्य करना बेहद अशुभ माना जाता है। पंचक पंचांग का विशेष भाग है।

क्या है पंचक

==========

जब चंद्रमा कुंभ से मीन राशि में गुजरता है, तो पंचक का प्रभाव होता है। आमतौर पर इसे पांच महत्वपूर्ण नक्षत्रों में चंद्रमा के गुजरने का समय माना जा सकता है। ये नक्षत्र है - धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, और रेवती। इस अवधि में कोई भी शुभ कार्य जैसे विवाह, गृह प्रवेश, या नए निर्माण कार्य से बचना चाहिए।

पंचक अशुभ क्यों माना जाता है?

==========

कहते हैं पंचक के समय किसी तरह के शुभ काम का परिणाम नहीं मिलता है और उस काम को पांच बार करना पड़ता है। हिंदू धर्म में जब किसी की मृत्यु भी पंचक के दौरान होती है, तो विशेष पूजा पाठ करके पंचक की शांति की जाती है। पंचक के दौरान ये काम बिल्कुल ना करें।

धनिष्ठा नक्षत्रः जरूरी ना हों, तो यात्रा को टालें। गैस, पेट्रोल आदि का काम ना करवाएं। नए घर का वास्तु प्रवेश ना करें। शतभिषा नक्षत्रः इस समय नया बिजनेस शुरू ना करें। पार्टनरशिप का कोई काम करने से भी बचें।

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्रः इस नक्षत्र में विवाह, नए घर का वास्तु या नई गाड़ी खरीदते हैं, तो यह शुभ नहीं होता है। कार्य करने वाला व्यक्ति बीमार हो जाता है।

उत्तराभाद्रपद नक्षत्रः इस दौरान कोई नया काम शुरू करते हैं, तो असफलता मिलती है।

रेवती नक्षत्रः इस समय काम करने से आर्थइक हानि होने की आशंका बनी रहती है। रेवती भी एक गंडमूल नक्षत्र है और इस नक्षत्र में जन्म लेने वाले व्यक्ति को हर दूसरे महीने बगलामुखी पूजा करनी होती है।

पंचक के प्रकार और उनका प्रभाव

==========

पंचांग के अनुसार पंचक एक विशेष समय होता है। इसमें किसी भी शुभ कार्य को करने से पहले सावधानी बरती जाती है। यह पांच दिनों की अवधि होती है। आइए, पंचक के विभिन्न प्रकारों को विस्तार से समझते हैं और जानते हैं कि किस पंचक में कौन-कौन से कार्य वर्जित माने गए हैं।

पंचक के पांच प्रकार-

रोग पंचक यह पंचक तब होता है जब पंचक की शुरुआत रविवार से होती है। इस पंचक के दौरान यज्ञ या धार्मिक अनुष्ठान जैसे कार्य करने से बचना चाहिए।

राज्य या नृप पंचक यदि पंचक की शुरुआत सोमवार से होती है, तो इसे राज्य पंचक या नृप पंचक कहा जाता है। इस समय नौकरी या नई सरकारी योजनाओं में प्रवेश करना वर्जित माना जाता है।

अग्नि पंचक मंगलवार से शुरू होने वाला पंचक अग्नि पंचक कहलाता है। इस समय घर का निर्माण, गृह प्रवेश, या किसी प्रकार की नई संपत्ति से जुड़े कार्य नहीं किए जाने चाहिए।

चोर पंचक शुक्रवार को शुरू होने वाला पंचक चोर पंचक कहलाता है। इस समय यात्रा करने से बचा जाता है, क्योंकि चोरी या धन हानि की आशंका रहती है।

मृत्यु पंचक पंचक यदि शनिवार से शुरू होता है, तो इसे मृत्यु पंचक कहते हैं। इस पंचक के दौरान विवाह, सगाई, और अन्य शुभ कार्य वर्जित माने जाते हैं।

पंचक के दौरान करें ये उपाय

==========

पंचक के दौरान कुछ आसान उपाय करके आप इस समय को शांतिपूर्ण और शुभ बना सकते हैं। पंचक के दौरान निम्नलिखित 5 उपाय करना विशेष रूप से लाभकारी माना जाता है:

भगवान विष्णु और भगवान शिव की पूजा करें।

जरूरतमंदों को अन्न, वस्त्र, या धन का दान करें।

पंचक के समय में असहाय गायों को हरा चारा खिलाने से शुभ फल प्राप्त होते हैं

इस समय आप घर या मंदिरों में विशेष पूजा, अनुष्ठान, या हवन करवा सकते हैं।

पंचक के दौरान नाखून और बाल काटने से बचना चाहिए।

योगासन क्या है जानिये

योग का अर्थ है जोड़ना. जीवात्मा का परमात्मा से मिल जाना, पूरी तरह से एक हो जाना ही योग है। योगाचार्य महर्षि पतंजली ने सम्पूर्ण योग के रहस्य को अपने योगदर्शन में सूत्रों के रूप में प्रस्तुत किया है.

उनके अनुसार, "चित्त को एक जगह स्थापित करना योग है।

अष्टांग योग क्या है?

~~~~~~~~

हमारे ऋषि मुनियों ने योग के द्वारा शरीर मन और प्राण की शुद्धि तथा परमात्मा की प्राप्ति के लिए आठ प्रकार के साधन बताएँ हैं, जिसे अष्टांग योग कहते हैं..

ये निम्न हैं-

~~~

यम
नियम
आसन
प्राणायाम
प्रात्याहार
धारणा
ध्यान
समाधि

इस पोस्ट में हम कुछ आसन और प्राणायाम के बारे में बात करेंगे जिसे आप घर पर बैठकर आसानी से कर सकते हैं और अपने जीवन को निरोगी बना सकते हैं।

आसन से क्या तात्पर्य है और उसके प्रकार कौन से हैं?

~~~~~~~~~~

आसन से तात्पर्य शरीर की वह स्थिति है जिसमें आप अपने शरीर और मन को शांत स्थिर और सुख से रख सकें.

स्थिरसुखमासनम्: सुखपूर्वक बिना कष्ट के एक ही स्थिति में अधिक से अधिक समय तक बैठने की क्षमता को आसन कहते हैं।

योग शास्त्रों के परम्परानुसार चौरासी लाख आसन हैं और ये सभी जीव जंतुओं के नाम पर आधारित हैं। इन आसनों के बारे में कोई नहीं जानता इसलिए चौरासी आसनों को ही प्रमुख माना गया है. और वर्तमान में बत्तीस आसन ही प्रसिद्ध हैं।

आसनों को अभ्यास शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक रूप से स्वास्थ्य लाभ एवं उपचार के लिए किया जाता है।

आसनों को दो समूहों में बांटा गया है:-

~~~~~~~~~~

गतिशील आसान
स्थिर आसान

गतिशील आसन ☞ वे आसन जिनमे शरीर शक्ति के साथ गतिशील रहता है.

स्थिर आसन ☞ वे आसन जिनमे अभ्यास को शरीर में बहुत ही कम या बिना गति के किया जाता है.

आइये अपने शरीर को स्वस्थ बनाने के लिए इन आसनों के बारे में जानते हैं।

स्वस्तिकासन

~~~~~

स्थितिः- स्वच्छ कम्बल या कपडे पर पैर फैलाकर बैठें।

विधिः- बाएं पैर को घुटने से मोड़कर दाहिने जंघा और पिंडली (घुटने के नीचे का हिस्सा) और के बीच इस प्रकार स्थापित करें की बाएं पैर का तल छिप जाये उसके बाद दाहिने पैर के पंजे और तल को बाएं पैर के नीचे से जांघ और पिंडली के मध्य स्थापित करने से स्वस्तिकासन बन जाता है। ध्यान मुद्रा में बैठें तथा रीढ़ सीधी कर श्वास खींचकर यथाशक्ति रोकें।इसी प्रक्रिया को पैर बदलकर भी करें।

लाभः-

~~

पैरों का दर्द, पसीना आना दूर होता है।

पैरों का गर्म या ठंडापन दूर होता है.. ध्यान हेतु बढ़िया आसन है।

गोमुखासन विधि

~~~~~~

दोनों पैर सामने फैलाकर बैठें। बाएं पैर को मोड़कर एड़ी को दाएं नितम्ब के पास रखें।

दायें पैर को मोड़कर बाएं पैर के ऊपर इस प्रकार रखें की दोनों घुटने एक दूसरे के ऊपर हो जाएँ।

दायें हाथ को ऊपर उठाकर पीठ की ओर मुडिए तथा बाएं हाथ को पीठ के पीछे नीचे से लाकर दायें हाथ को पकडिये .. गर्दन और कमर सीधी रहे।

एक ओर से लगभग एक मिनट तक करने के पश्चात दूसरी ओर से इसी प्रकार करें।

जिस ओर का पैर ऊपर रखा जाए उसी ओर का (दाए/बाएं) हाथ ऊपर रखें.

लाभ ☞ अंडकोष वृद्धि एवं आंत्र वृद्धि में विशेष लाभप्रद है। धातुरोग, बहुमूत्र एवं स्त्री रोगों में लाभकारी है। यकृत, गुर्दे एवं वक्ष स्थल को बल देता है। संधिवात, गाठिया को दूर करता है।

गोरक्षासन

~~~~

विधि ☞ दोनों पैरों की एडी तथा पंजे आपस में मिलाकर सामने रखिये। अब सीवनी नाड़ी (गुदा एवं मूत्रेन्द्रिय के मध्य) को एडियों पर रखते हुए उस पर बैठ जाइए। दोनों घुटने भूमि पर टिके हुए हों।

हाथों को ज्ञान मुद्रा की स्थिति में घुटनों पर रखें।

लाभ ☞ मांसपेशियो में रक्त संचार ठीक रूप से होकर वे स्वस्थ होती है.

मूलबंध को स्वाभाविक रूप से लगाने और ब्रम्हचर्य कायम रखने में यह आसन सहायक है।

इन्द्रियों की चंचलता समाप्त कर मन में शांति प्रदान करता है. इसीलिए इसका नाम गोरक्षासन है।

अर्द्धमत्स्येन्द्रासन विधि ☞ दोनों पैर सामने फैलाकर बैठें. बाएं पैर को मोड़कर एडी को नितम्ब के पास लगाएं। बाएं पैर को दायें पैर के घुटने के पास बाहर की ओर भूमि पर रखें। बाएं हाथ को दायें घुटने के समीप बाहर की ओर सीधा रखते हुए दायें पैर के पंजे को पकडें। दायें हाथ को पीठ के पीछे से घुमाकर पीछे की ओर देखें। इसी प्रकार दूसरी ओर से इस आसन को करें।

लाभ ☞ मधुमेह एवं कमरदर्द में लाभकारी।

कैसे करें डायबिटीज कण्ट्रोल?

~~~~~~~~~~~~

पृष्ठ देश की सभी नस नाड़ियों में (जो मेरुदंड के इर्द-गिर्द फैली हुई है.) रक्त संचार को सुचारू रूप से चलाता है। उदर (पेट) विकारों को दूर कर आँखों को बल प्रदान करता है।

योगमुद्रासन

~~~~~

स्थिति ☞ भूमि पर पैर सामने फैलाकर बैठ जाइए.

विधि ☞ बाएं पैर को उठाकर दायीं जांघ पर इस प्रकार लगाइए की बाएं पैर की एडी नाभि केनीचे आये।

दायें पैर को उठाकर इस तरह लाइए की बाएं पैर की एडी के साथ नाभि के नीचे मिल जाए। दोनों हाथ पीछे ले जाकर बाएं हाथ की कलाई को दाहिने हाथ से पकडें. फिर श्वास छोड़ते हुए। सामने की ओर झुकते हुए नाक को जमीन से लगाने का प्रयास करें. हाथ बदलकर क्रिया करें। पुनः पैर बदलकर पुनरावृत्ति करें।

लाभ ☞ चेहरा सुन्दर, स्वभाव विनम्र व मन एकाग्र होता है.

उदाराकर्षण या शंखासन

~~~~~~~~~~

स्थिति ☞ काग आसन में बैठ जाइए।

विधि ☞ हाथों को घुटनों पर रखते हुए पंजों के बल उकडू (कागासन) बैठ जाइए। पैरों में लगभग एक सवा फूट का अंतर होना चाहिए। श्वास अंदर भरते हुए दायें घुटने को बाएं पैर के पंजे के पास टिकाइए तथा बाएं घुटने को दायीं तरफ झुकाइए। गर्दन को बाईं ओर से पीछे की ओर घुमाइए व पीछे देखिये। थोड़े समय रुकने के पश्चात श्वास छोड़ते हुए बीच में आ जाइये. इसी प्रकार दूसरी ओर से करें।

लाभ ☞ यह शंखप्रक्षालन की एक क्रिया है।

सभी प्रकार के उदर रोग तथा कब्ज मंदागिनी, गैस, अम्ल पित्त, खट्टी-खट्टी डकारों का आना एवं बवासीर आदि निश्चित रूप से दूर होते हैं। आँत, गुर्दे, अग्नाशय तथा तिल्ली सम्बन्धी सभी रोगों में लाभप्रद है।

सर्वांगासन

~~~~~

स्थिति ☞ दरी या कम्बल बिछाकर पीठ के बल लेट जाइए.

विधि ☞ दोनों पैरों को धीरे –धीरे उठाकर 90 अंश तक लाएं. बाहों और कोहनियों की सहायता से शरीर के निचले भाग को इतना ऊपर ले जाएँ की वह कन्धों पर सीधा खड़ा हो जाए। पीठ को हाथों का सहारा दें .. हाथों के सहारे से पीठ को दबाएँ . कंठ से ठुड्ठी लगाकर यथाशक्ति करें। फिर धीरे-धीरे पूर्व अवस्था में पहले पीठ को जमीन से टिकाएं फिर पैरों को भी धीरे-धीरे सीधा करें।

लाभ ☞ थायराइड को सक्रिय एवं स्वस्थ बनाता है।

मोटापा, दुर्बलता, कद वृद्धि की कमी एवं थकान आदि विकार दूर होते हैं। Related: मोटापा कम करने के आयुर्वेदिक उपाय एड्रिनल, शुक्र ग्रंथि एवं डिम्ब ग्रंथियों को सबल बनाता है।

प्राणायाम

~~~~

प्राण का अर्थ, ऊर्जा अथवा जीवनी शक्ति है तथा आयाम का तात्पर्य ऊर्जा को नियंत्रित करनाहै। इस नाडीशोधन प्राणायाम के अर्थ में प्राणायाम का तात्पर्य एक ऐसी क्रिया से है जिसके द्वारा प्राण का प्रसार विस्तार किया जाता है तथा उसे नियंत्रण में भी रखा जाता है.

यहाँ 3 प्रमुख प्राणायाम के बारे में चर्चा की जा रही है:-

अनुलोम-विलोम प्राणायाम विधि ☞ ध्यान के आसान में बैठें। बायीं नासिका से श्वास धीरे-धीरे भीतर खींचे।

श्वास यथाशक्ति रोकने (कुम्भक) के पश्चात दायें स्वर से श्वास छोड़ दें। पुनः दायीं नाशिका से श्वास खीचें।

यथाशक्ति श्वास रूकने (कुम्भक) के बाद स्वर से श्वास धीरे-धीरे निकाल दें। जिस स्वर से श्वास छोड़ें उसी स्वर से पुनः श्वास लें और यथाशक्ति भीतर रोककर रखें... क्रिया सावधानी पूर्वक करें, जल्दबाजी ने करें।

लाभ ☞ शरीर की सम्पूर्ण नस नाडियाँ शुद्ध होती हैं।

शरीर तेजस्वी एवं फुर्तीला बनता है। भूख बढती है। रक्त शुद्ध होता है।

सावधानी ☞ नाक पर उँगलियों को रखते समय उसे इतना न दबाएँ की नाक कि स्थिति टेढ़ी हो जाए।

श्वास की गति सहज ही रहे। कुम्भक को अधिक समय तक न करें।

कपालभाति प्राणायाम विधि

~~~~~~~~~~

कपालभाति प्राणायाम का शाब्दिक अर्थ है, मष्तिष्क की आभा को बढाने वाली क्रिया। इस प्राणायाम की स्थिति ठीक भस्त्रिका के ही सामान होती है परन्तु इस प्राणायाम में रेचक अर्थात श्वास की शक्ति पूर्वक बाहर छोड़ने में जोड़ दिया जाता है। श्वास लेने में जोर ने देकर छोड़ने में ध्यान केंद्रित किया जाता है। कपालभाति प्राणायाम में पेट के पिचकाने और फुलाने की क्रिया पर जोर दिया जाता है। इस प्राणायाम को यथाशक्ति अधिक से अधिक करें।

सर्विकल पेन का आयुर्वेदिक इलाज: कारण, लक्षण और असरदार घरेलू नुस्खे

आज के डिजिटल युग में अधिकांश लोग गर्दन दर्द या Cervical Pain से परेशान हैं। यह दर्द केवल मांसपेशियों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि सिरदर्द, हाथों में झनझनाहट और नींद की समस्या का कारण भी बन सकता है। Cervical Spondylosis, जिसकी वजह से यह दर्द होता है, आयुर्वेद में वात रोग के अंतर्गत आता है।

आइए जानते हैं इसकी गहराई, कारण, लक्षण और कुछ असरदार आयुर्वेदिक नुस्खे, जो इस समस्या से राहत दिला सकते हैं।

Cervical Pain क्या है?

Cervical Pain मुख्य रूप से गर्दन के पीछे, कंधों और सिर के पिछले हिस्से में महसूस होने वाला दर्द है। यह C1 से C7 तक की रीढ़ की हड्डी (cervical vertebrae) में होने वाले डीजेनेरेटिव बदलाव के कारण होता है।

Cervical Pain के मुख्य कारण

1 गलत पोस्चर (झुककर मोबाइल/लैपटॉप चलाना)
2 लंबे समय तक एक जैसी मुद्रा में बैठना
3 ऊँचा या बहुत मुलायम तकिया
4 डिस्क का घिसना (Degeneration)
5 तनाव और वात असंतुलन

Cervical Pain के लक्षण

गर्दन में अकड़न और दर्द
सिरदर्द, खासकर पीछे की तरफ
हाथों में झनझनाहट या सुन्नता
चक्कर आना
थकान और नींद में परेशानी

Cervical Pain के लिए असरदार आयुर्वेदिक औषधियों और उपायों की सूची

उपाय / औषधि उपयोग विधि लाभ

महानारायण तेल

सुबह-शाम हल्के गुनगुने तेल से गर्दन व कंधों की मालिश मांसपेशियों की अकड़न और सूजन में राहत

अश्वगंधा चूर्ण / कैप्सूल 1 चम्मच दूध के साथ, रात में नसों को पोषण, तनाव और दर्द में राहत

त्रयोदशांग गुग्गुलु

2 गोली दिन में दो बार भोजन के बाद (वैद्य की सलाह से) पुराने वात रोग, डिस्क समस्या और जोड़ों के दर्द में लाभकारी

योगराज गुग्गुलु 2 गोली सुबह-शाम गुनगुने पानी से सूजन कम करता है, वात विकार में असरदार

दशमूल क्वाथ 15–20 ml सुबह-शाम भोजन के बाद सूजन और दर्द में आयुर्वेदिक एंटी-इंफ्लेमेटरी

हल्दी वाला दूध 1 कप दूध में 1/2 चम्मच हल्दी डालकर रोज रात पिएं सूजन और दर्द से राहत, नींद में सुधार

त्रिफला चूर्ण 1 चम्मच रात में गुनगुने पानी से शरीर से विषैले तत्व बाहर निकालता है, वात संतुलन

गिलोय रस / सत्व 10–15 ml सुबह खाली पेट इम्युनिटी बूस्ट, सूजन नियंत्रण

शतावरी चूर्ण 1 चम्मच दूध के साथ नसों को पोषण, थकान में राहत

बस्ती चिकित्सा (पंचकर्म) आयुर्वेदिक केंद्र पर करवाएं वात शमन का सर्वोत्तम उपाय रीढ़ की नसों तक लाभ पहुंचाता है

Cat-Cow आसन (मरजरी आसन)

5–10 मिनट दिन में दो बार स्पाइन की फ्लेक्सिबिलिटी और जकड़न में सुधार

सही तकिया 1–2 इंच ऊंचा, हार्ड सपोर्ट वाला गर्दन पर दबाव नहीं पड़ता, दर्द में कमी

नोट : उपरोक्त में से किसी भी आयुर्वेदिक औषधि को लंबे समय तक और डॉक्टर की सलाह से ही सेवन करें।

मालिश या योग करते समय किसी प्रकार की अत्यधिक खिंचाव या ज़ोर से बचें।

आयुर्वेद में Cervical Pain का दृष्टिकोण

आयुर्वेद के अनुसार, Cervical Pain मुख्यतः वात दोष के कारण होता है। जब शरीर में वात असंतुलित होता है, तो वह स्नायु तंत्र (nervous system) को प्रभावित करता है, जिससे दर्द, जकड़न और सूजन होती है।

क्या करें (What to Do in Cervical Pain)

कार्य क्यों ज़रूरी है

सही तकिया इस्तेमाल करें (1-2 इंच ऊँचा, orthopedic support वाला) गर्दन की प्राकृतिक अवस्था बनी रहती है, दर्द नहीं बढ़ता

हल्के योगासन और गर्दन के स्ट्रेच करें मांसपेशियों की जकड़न कम होती है, लचीलापन बढ़ता है

महानारायण तेल या वात-शामक तेल से मालिश करें रक्तसंचार बेहतर होता है, नसों को पोषण मिलता है

आयुर्वेदिक औषधियाँ जैसे योगराज गुग्गुलु, अश्वगंधा का सेवन करें सूजन कम होती है, वात संतुलन में आता है

सीधा बैठने की आदत डालें, पीठ को सपोर्ट दें गलत पोस्चर से रीढ़ पर दबाव नहीं पड़ता

हर 30 मिनट में स्क्रीन टाइम के दौरान ब्रेक लें मांसपेशियाँ तनावमुक्त रहती हैं

हल्दी वाला दूध या गुनगुना पानी पिएं प्राकृतिक एंटी-इंफ्लेमेटरी असर

क्या न करें (What to Avoid in Cervical Pain)

कार्य हानि

मोबाइल झुककर देखना या लंबा इस्तेमाल गर्दन की मांसपेशियों पर तनाव बढ़ता है

भारी सामान उठाना स्पाइन और डिस्क पर दबाव, दर्द बढ़ सकता है

बहुत ऊँचा या मुलायम तकिया इस्तेमाल करना गर्दन अस्वाभाविक स्थिति में चली जाती है

लंबे समय तक एक ही मुद्रा में खड़े या बैठे रहना रक्त संचार धीमा होता है, जकड़न बढ़ती है

ठंडी चीज़ें या सीधा ठंडी हवा लगना देना वात को और भड़काता है

दर्द के समय ज़ोर से स्ट्रेच या कसरत करना नसों में और खिंचाव या सूजन हो सकती है

तनाव लेना या नींद की कमी तनाव से मांसपेशियों की अकड़न बढ़ती है

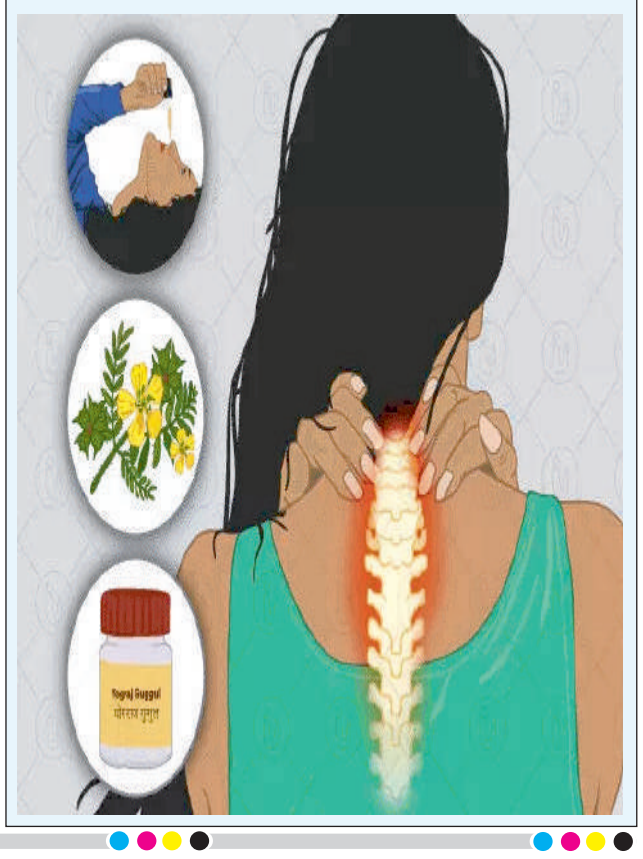

हम सब जीवन में स्वतंत्रता चाहतें हैं और इसे हमने अपना मूलभूत अधिकार भी माना है। लेकिन बिना होश के अधिकार बिल्कुल ऐसे ही हैं

जैसे किसी गंजे को नाखून मिल जायें या फिर किसी चंचल/नासमझ बच्चे को पिस्तौल/चाकू मिल जायें, वह किसी को भी जरा बोलने/हिलने मात्र पर हथियार चला देगा। दूसरों के साथ तो वह करता ही है, अपने आप को भी लहूलुहान कर लेता है। बिना होश/समझ के मानव की यह स्वतंत्रता नहीं है अपितु आत्मबंधन जैसा है। वास्तव में स्वतंत्रता, आत्म संयम के कठिन पथरीले मार्ग से प्राप्त होती है। यदि ऐसे किसी स्वमोहित की अंतर्दशा जाननी है तो किसी को एक बार गुस्सा दिला कर देखें, उसके भीतर जो भरा है, सब क्षण भर में बाहर आ जायेगा। हमारी स्वतंत्रता है कहां? ऐसी स्वतंत्रता अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारने जैसी है। यदि हम अपनी इस प्रकार स्वछंदता/स्वतंत्रता को पाने लगेंगे तो दूसरों की स्वतंत्रता का हनन अवश्य हो जायेगा। जबकि संविधान में स्वतंत्रता का अर्थ है कि किसी की स्वतंत्रता बाधित न हो। अर्थात अपनी स्वतंत्रता के साथ-साथ दूसरे/दूसरों की स्वतंत्रता के प्रति कर्तव्यनिष्ठ बनें, तभी हमारी स्वतंत्रता अक्षुण्ण रहेगी। एकतरफा स्वतंत्रता मिल जायें तो यहां अराजकता फैल जायेगी।
~~~~~~~~~~

दलित विरोधी बीजेपी एमसीडी में तैनात दलित शिक्षकों का मार रही हक- अंकुश नारंग

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी ने बीजेपी शासित एमसीडी के शिक्षा विभाग द्वारा शिक्षकों की जारी की गई पदोन्नति सूची पर गंभीर सवाल खड़ा किया है। नेता प्रतिपक्ष अंकुश नारंग ने कहा कि दलित विरोधी बीजेपी एमसीडी के शिक्षा विभाग में तैनात दलित शिक्षकों का हक मार रही है। बीजेपी और एमसीडी का शिक्षा विभाग दलित शिक्षकों को प्रमोशन में बराबरी का अवसर नहीं दे रहा है। टीचर्स एसोसिएशन ने इसकी शिकायत एससी/एसटी आयोग से की है और कहा है कि प्रमोशन में आरक्षण के नियमों की अनदेखी की जा रही है। अंकुश नारंग ने कहा कि बीजेपी और एमसीडी का शिक्षा विभाग मिलकर भ्रष्टाचार कर रहे हैं और सिर्फ अपने लोगों को आगे बढ़ा रहे हैं। मेयर राजा इकबाल सिंह को बताना चाहिए कि एमसीडी ने टीचरों की वरिष्ठता और पदोन्नति सूची कैसे बनाई और दोनों में गड़बड़ी क्यों है?

अंकुश नारंग ने कहा कि बीजेपी और एमसीडी का शिक्षा विभाग मिल कर भ्रष्टाचार कर रहा है। बीजेपी शासित एमसीडी की शिक्षा विभाग ने वरिष्ठता सूची निकाली थी और अब प्रमोशन लिस्ट भी निकाल दी है। जब वरिष्ठता सूची ही सही नहीं थी तो प्रमोशन की लिस्ट कैसे सही हो सकती है। भाजपा दलित विरोधी है। वह सफाई कर्मचारियों के अधिकारों का हनन कर रही है। अब बीजेपी शिक्षा विभाग के अंदर भी दलितों का अपमान कर रहे हैं। दलितों को बराबरी के अवसर नहीं दे रहे हैं। बाबा साहब ने बराबरी के अधिकार की बात कही थी, लेकिन बीजेपी दलितों के साथ समानता का व्यवहार नहीं करती है। एमसीडी के शिक्षा विभाग के टीचर्स एसोसिएशन ने एससी/एसटी आयोग से शिकायत की है कि प्रमोशन लिस्ट में दलित टीचरों के साथ भेदभाव हुआ है। कई दलित टीचर पात्र थे, फिर भी प्रमोशन की लिस्ट में उनको नहीं रखा गया।

अंकुश नारंग ने कहा कि के प्रिंसिपल पदों पर पदोन्नति में आरक्षण नियमों की अनदेखी हुई। टीचर्स एसोसिएशन का आरोप है कि वरिष्ठ सूची में शामिल टीचर रुचिका की जॉइनिंग मार्च 1998 की है। जबकि सुनीता की जॉइनिंग फरवरी 1997 की है। दोनों एक ही कैटेगरी की हैं, लेकिन वरिष्ठता सूची में एक साल पहले जॉइन करने वाली टीचर को नीचे और बाद में जॉइन करने वाली टीचर को ऊपर रखा गया है। भाजपा कहेगी कि मेरिट रैंक के आधार पर तैनाती दी गई है। लेकिन डीएसएसबी बोर्ड मेरिट बनाता है। डीएसएसबी की स्थापना ही 1999 में हुई। जबकि वरिष्ठता सूची 1995 से 2002 तक की है। 1995 से 2000 तक मेरिट कैसे बनी? डीएसएसबी की पहली वैकेंसी वर्ष 2000 में निकली और पहली नियुक्ति 2001 में हुई। ऐसे में एमसीडी का शिक्षा विभाग डीएसएसबी की 2001 के बाद की मेरिट को मान लिया होगा, लेकिन 1995 से 2001 तक की रैंक कैसे तय हुई?

उन्होंने कहा कि 1997-98 में भाजपा के एक वरिष्ठ नेता थे, जो मुख्यमंत्री भी रहे। उन्होंने अपने लोगों को एमसीडी में टीचर की नौकरी दिला दी। सुप्रीम कोर्ट की गाइडलाइन है कि वरिष्ठता सूची का पहला आधार ज्वाइंनिंग की तिथि होनी चाहिए। अगर जॉइनिंग की तारीफ एक समान है, तो जन्मतिथि को आधार बनाना चाहिए और अगर दोनों एकसमान हैं, तो मेरिट रैंक को आधार बनाना चाहिए। जब ज्वाइनिंग की तारीख ही अलग है तो वरिष्ठता सूची में पहले ज्वाइन करने वाले टीचर को बाद में ज्वाइन करने वाले से नीचे कैसे रख दिया। बीजेपी को पारदर्शिता दिखानी चाहिए, लेकिन उसने पोर्टल पर वरिष्ठता सूची को नहीं डाला।

अंकुश नारंग ने कहा कि वरिष्ठता सूची और पदोन्नति सूची दोनों में गड़बड़ी है। बीजेपी की एमसीडी ने प्रमोशन और वरिष्ठता सूची कैसे बनाई? इन्होंने सिर्फ भ्रष्टाचार करने और अपने लोगों को आगे बढ़ाने के लिए शिक्षकों के साथ धोखा किया। अगर मेयर राजा इकबाल सिंह या शिक्षा विभाग इसका जवाब दे सकें, तो बिल्कुल दें। सीनियरिटी लिस्ट और प्रमोशन लिस्ट देखकर साफ है कि भाजपा और एमसीडी का शिक्षा विभाग मिलकर भ्रष्टाचार कर रहा है। शिक्षा विभाग बच्चों की नींव रखता है, देश का भविष्य बनाता है। इसके अंदर इतना भ्रष्टाचार कैसे हो सकता है? उम्मीद है कि एमसीडी और शिक्षा विभाग में बदलाव आएगा। भाजपा को गलत कागजी रिपोर्ट देने की बजाय जमीन पर उतरकर काम करना चाहिए। भाजपा भ्रष्टाचार

दिल्ली पुलिस क्राइम ब्रांच ने दो अंतरराज्यीय वाहन चोर गिरोहों का किया पर्दाफाश

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली

नई दिल्ली: केंद्रीय रेंज और ईस्टर्न रेंज-I की टीमों ने दिल्ली और सिलीगुड़ी में समन्वित कार्रवाई की जिसमेंआरोपी दिल्ली-एनसीआर में कई वाहन चोरी मामलों में संलिप्त मामू का पर्दाफाश किया।कुल सात आरोपियों को गिरफ्तार किया गया चार कारें और चार डिस्मैंटल गाड़ियां की गई बरामद।गाड़ियों को खोलने के उपकरण भी आरोपियों के कब्जे से बरामद की गई।दिल्ली पुलिस की क्राइम ब्रांच ने एक बड़ी कार्रवाई करते हुए दिल्ली-एनसीआर, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल और मणिपुर में सक्रिय दो अंतरराज्यीय वाहन चोरी रैकेट्स का भंडाफोड़ किया है। गुप्त सूचना के आधार पर की गई कार्रवाई में कुल 7 आरोपियों को गिरफ्तार किया गया, 8 चोरी की गई गाड़ियाँ बरामद की गईं, और वाहन चोरी व खोलने में प्रयुक्त उपकरण व फर्जी दस्तावेज भी जब्त किए गए।

क्राइम ब्रांच की केंद्रीय रेंज ने तीन कुख्यात वाहन चोरों को गिरफ्तार किया है।रोहित (27 वर्ष), राजेंद्र उर्फ टीनू (46 वर्ष), और सतबीर उर्फ सोनू उर्फ अमृतसरिया (47 वर्ष)तीनों पश्चिमी दिल्ली के निवासी हैं।हेड कांस्टेबल प्रवीण द्वारा दी गई गुप्त सूचना पर टीम गठित की गई, जिसका नेतृत्व सब-इंस्पेक्टर बीरपाल सिंह ने किया। टीम ने 27 जून 2025 को बिजवासन के बाजघेड़ा टोल प्लाजा के पास जाल बिछाकर रोहित को गिरफ्तार किया। उसके कब्जे से एक डिस्मैंटल की गई मारुति ईको (HR38AC1223) बरामद हुई। यह वाहन पीएस अंबेडकर नगर क्षेत्र से चोरी हुआ था।पूछताछ के बाद राजेंद्र और सतबीर को क्रमशः 28 जून और 5 जुलाई को गिरफ्तार किया गया। सतबीर गिरोह का मास्टरमाइंड निकला, जिसके कब्जे से चोरी की गई गाड़ी के टायर और रिम्स बरामद हुए।

सदर बाजार में लगी भयानक आग

सदर बाजार में तारों का जंजाल हटाना जरूरी – पम्मा

मुख्य संवाददाता

फेडरेशन ऑफ सदर बाजार ट्रेड्स एसोसिएशन चेयरमैन परमजीत सिंह पम्मा ने बताया सदर बाजार की मार्केट में आज एक भयानक आग लग गई जिसमें एक दुकान काफी एक दुकान काफी बुझाने के लिए लगभग 27 गाड़ियां फायर की आई इसको लेकर व्यापारियों में काफी देशात थी। जिससे सदर बाजार की कई मार्केट बंद हो गई। परमजीत सिंह पम्मा ने बताया लगभग 4:00 यह आग लगी जिसकी सूचना फायर कर्मी व पुलिस को दी गई जिससे वह एकदम हरकत में आए और आग बुझाने में लग गई। पम्मा ने कहा अगर यह आज रात को लगती तो काफी बड़ा नुकसान हो सकता था। उन्होंने तारों के जंजाल पर भी निशाना साधते हुए कहा कि इसके कारण भी कई बार शॉर्ट सर्कल होते हैं और आग लगने का कारण बन जाता है। इसके लिए प्रशासन को जल्द से तारों के जंजाल हटाने का कार्य करना चाहिए।

गरीब विरोधी बीजेपी सरकार की बुरी नजर अब नंगली डेयरी की झुग्गियों पर- आतिशी

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली, आम आदमी पार्टी ने मटियाला विधानसभा स्थित नंगली डेयरी की झुग्गियां तोड़ने की तैयारी कर रही बीजेपी सरकार को आड़े हाथ लिया है। ''आप'' की वरिष्ठ नेता व नेता प्रतिपक्ष आतिशी ने कहा कि मद्रासी कैंप, जेलरवाला बाग, भूमिहीन कैंप तोड़ने के बाद गरीब विरोधी बीजेपी सरकार की बुरी नजर अब नंगली डेयरी की झुग्गियां पर पड़ गई है। बीजेपी की एमसीडी ने झुग्गियों में नोटिस लगा दिया है और 5 दिन में कागज नहीं दिखाने पर झुग्गियों पर बुलडोजर चलाने की चेतावनी दी है। चुनाव से पहले बीजेपी के नेता इन झुग्गियों में रात्रि प्रवास किए और जहां झुग्गी-वहां मकान का कार्ड दिए थे। लेकिन सरकार में आते ही बीजेपी लगातार गरीबों की झुग्गियां तोड़ रही है। ''आप'' इन गरीबों के साथ खड़ी है। हम झुग्गियां बचाने के लिए विधानसभा से लेकर सड़क तक लड़ाई लड़ेंगे।

शनिवार को पार्टी मुख्यालय पर प्रेसवार्ता कर नेता प्रतिपक्ष आतिशी ने कहा कि चुनाव से पहले भाजपा के नेता दिल्ली के अलग-अलग झुग्गियों में प्रवास किया। झुग्गीवालों के साथ खाना खाया, बच्चों के साथ लूडो-कैरम खेला और झुग्गीवालों को 'जहां झुग्गी वहीं मकान' के कार्ड दिए। दिल्ली चुनाव से पहले प्रधानमंत्री मोदी जी ने बार-बार कहा कि दिल्ली में एक भी झुग्गी को नहीं तोड़ा जाएगा। लेकिन चुनाव खत्म होने के बाद जैसे ही बीजेपी की सरकार बनी, गरीब विरोधी बीजेपी ने दिल्ली में एक के बाद एक गरीबों के मकान तोड़ने शुरू कर दिए। जिन झुग्गियों में 'जहां झुग्गी-वहीं मकान' का कार्ड देकर आए, उन झुग्गियों को सबसे पहले तोड़ना शुरू कर दिया।

आतिशी ने कहा कि मद्रासी कैंप, जेलरवाला बाग, वजीरपुर, भूमिहीन कैंप की झुग्गियां तोड़ने के बाद अब बीजेपी की सरकार नंगली डेयरी के जेजे कैंप को तोड़ने की तैयारी कर रही है। दो दिन पहले नंगली डेयरी में बीजेपी शासित एमसीडी द्वारा 250-300 झुग्गी वाले इस जेजे क्लस्टर पर नोटिस लगा दिया गया है। झुग्गीवालों से कहा गया है कि वह अतिक्रमण कर रहे हैं और अगर पांच दिन में अपने कागज जमा नहीं दिए तो झुग्गियों को तोड़ दिया जाएगा।

आतिशी ने कहा कि बीजेपी जहां झुग्गी वहीं मकान नहीं देने वाली है। बीजेपी ने तय कर लिया है, जहां झुग्गी है, उसे मैदान बना देंगे। इसीलिए दिल्ली में एक-एक कर सारी झुग्गियों को तोड़ा जा रहा है। नंगली डेयरी में रहने वाले लोग एक-दो साल पहले दिल्ली में नहीं आए हैं, बल्कि पिछले 15-20 सालों से दिल्ली में रह रहे हैं और इस जेजे कैंप में लगातार दिल्ली सरकार के डूसिब द्वारा गालियां, नालियां, टॉयलेट्स बनाने का काम किया जा रहा है और डूसिब द्वारा उसे मेंटेन किया जा रहा है। सरकार की जिम्मेदारी है कि झुग्गी तोड़ने से पहले वहां रहने वालों को दूसरा घर दे। लेकिन बीजेपी एक गरीब विरोधी पार्टी है, गरीबों से नफरत करती है और एक-एक करके गरीबों के घर तोड़ने का काम कर रही है।

आतिशी ने कहा कि आम आदमी पार्टी दिल्ली के गरीबों के साथ खड़ी है। नंगली डेयरी जेजे क्लस्टर के निवासियों के साथ भी खड़ी है। कोर्ट, एमसीडी, दिल्ली विधानसभा या फिर सड़कों पर लड़ने की जरूरत होगी तो आम आदमी पार्टी लड़ेगी और बीजेपी को इन झुग्गियों को तोड़ने नहीं देगी।

स्टार परिवार रोमांस की बरसात के बारे में अभिरा उर्फ समृद्धि शुक्ला ने की खुलकर बात, प्रोमो हुआ रिलीज

मुख्य संवाददाता

स्टार प्लस अपने आने वाले सावन इवेंट 'स्टार परिवार रोमांस की बरसात' से दर्शकों को खुश करने की तैयारी कर रहा है। दिलचस्प कहानियों और पसंदीदा टीवी जोड़ियों के ज़रिए परिवारों को साथ लाने की अपनी परंपरा को निभाते हुए, चैनल एक बार फिर दर्शकों को एक खास और रोमांटिक माहौल में अपनी पसंदीदा जोड़ियों के साथ जश्न मनाने का मौका दे रहा है।

हाल ही में जारी प्रोमो में दिखाया गया है कि शो में क्या खास होने वाला है। अरमान और अभिरा एक प्यार भरे और सुंदर डांस से सभी का दिल जीत लेते हैं, उनकी आपसी समझ और तालमेल माहौल को खास और भावुक बना देता है। वहीं, सचिन और साइली मंच पर अपनी मस्ती और जोश से खुशियां भर देते हैं। झनक और ऋषि को एक प्यारा और खास पल साझा करते हुए दिखाया गया है। इसी बीच, विहान गौरी को उठाकर डांस करते हैं, और उनका डांस प्यार और अपनापन

दिखाता है। इस खुशी के माहौल को और खास बनाते हैं अनुज, जो खुद डांस नहीं करते, लेकिन तालियां बजाकर, हौसला बढ़ाकर और सभी को उत्साहित करके इस पूरे प्रोमो को एक बड़ा, खुशहाल पारिवारिक त्योहार जैसा बना देते हैं।

यह रिश्ता क्या कहलाता है' की अभिरा यानी समृद्धि शुक्ला ने सावन इवेंट का हिस्सा बनने के अनुभव को साझा करते हुए कहा, * "मुझे लगता है कि योग वाला एक्ट सबसे खास रहा। जब आप इस टास्क को समझेंगे, तब आपको पता चलेगा कि मैंने इसे गेम के जरिए कैसे समझा। लेकिन फिर भी, जैसा परफेक्ट उन्होंने किया, वैसा बिल्कुल वैसा करना और वो भी आंखों पर पट्टी बांधकर, बहुत मुश्किल था। मुझे खुद नहीं पता कि मैंने ये कैसे किया। लेकिन मुझे लगता है कि ये अच्छा रहा और फैंस को यह देखना वाकई पसंद आएगा।"

जोड़ियों के साथ काम करने के अनुभव पर समृद्धि शुक्ला ने कहा, * "यह बहुत खूबसूरत है। सभी के साथ अच्छी बॉन्डिंग है और हम सभी एक-दूसरे को पहले से जानते हैं। लेकिन जब हम ऐसे किसी प्लेटफॉर्म पर मिलते हैं तो सिर्फ हेलो-हाय से ज़्यादा बात करने का मौका भी मिलता है। हम थोड़ी देर साथ समय बिता पाते हैं, जबकि हम सभी बहुत बिजी रहते हैं, फिर भी समय निकाल पाते हैं। यह बहुत अच्छा और मज़ेदार अनुभव होता है।"

इस हादसे में जिन परिवारों ने अपने प्रियजनों को खो दिया, उनके प्रति मेरी गहरी संवेदनाएं हैं- आतिशी

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। उत्तर-पूर्वी दिल्ली में शनिवार को सुबह चार मंजिला इमारत गिरने की घटना को आम आदमी पार्टी ने दुखद बताया है। ''आप'' के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल, दिल्ली विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष आतिशी समेत अन्य नेताओं ने इस घटना में अपनी जान गंवाने वाले लोगों के प्रति अपनी गहरी संवेदन प्रकट की है। इस घटना की जानकारी मिलते ही अरविंद केजरीवाल ने पार्टी के स्थानीय कार्यकर्ताओं को तत्काल मौके पर पहुंच कर राहत और बचाव कार्य में प्रशासन की मदद करने की अपील की। इसके बाद काफी संख्या में ''आप'' कार्यकर्ता प्रशासन की मदद में जुट गए।

उत्तर पूर्वी दिल्ली में चार मंजिला इमारत के गिरने की घटना पर दुख व्यक्त करते हुए अरविंद केजरीवाल ने एक्स पर कहा कि उत्तर-पूर्वी दिल्ली में चार मंज़िला इमारत गिरने की ये घटना बेहद दुखद है। इस हादसे में जान गंवाने वालों के परिजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करता हूँ। गली संकरी होने के कारण राहत और बचाव कार्य में दिक्कतें आ रही हैं। मैं पार्टी के सभी स्थानीय साथियों से अपील करता हूं कि मौके पर जाकर प्रशासन के साथ मिलकर राहत कार्य में हरसंभव सहयोग करें।

वहीं, ''आप'' की वरिष्ठ नेता और दिल्ली विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष आतिशी ने कहा कि उत्तर-पूर्वी दिल्ली के वेलकम इलाके में शनिवार को सुबह चार मंज़िला इमारत गिरने की घटना बेहद दुखद है। इस हादसे में जिन परिवारों ने अपने प्रियजनों को खो दिया, उनके प्रति मेरी गहरी संवेदनाएं हैं। चूंकि यह इमारत एक बेहद संकरी गली में स्थित थी। इसलिए राहत और बचाव कार्य में काफी कठिनाई आ रही है। पार्टी के सभी स्थानीय कार्यकर्ताओं से निवेदन है कि वे प्रशासन को हर संभव मदद दें और राहत कार्य में सहयोग करें।

इमारत ढहने के हादसे की उच्च स्तरीय जांच हो : देवेन्द्र यादव

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष देवेन्द्र यादव ने सीलमपुर की जनता मजदूर कॉलोनी में ढाई मंजिला मकान ढ़हने के बाद 4 लोगों की मौत और मेट्रो के टनल के कारण आजाद मार्केट में जर्जर इमारत ढहने से एक व्यक्ति की मौत पर गहरा दुख व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि 5 लोगों की मौत के लिए जिम्मेदार लोगों के खिलाफ मामला दर्ज होना चाहिए और उनके खिलाफ संख्त कार्यवाही करने के साथ उच्च स्तरीय जांच की जाए। उन्होंने सवाल उठाया कि दर्दनाक हादसे के बाद मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता का घटना स्थल पर नही पहुँचना, दिल्ली वालों के प्रति उनकी असंवेदनशीलता को दर्शाता है।

देवेन्द्र यादव ने मांग की कि सीलमपुर में मरने वालों के परिजनों को सरकार 10-10 लाख रुपये मुआवजा और घायलों को 2-2 लाख रुपए देने की घोषणा करे जबकि आजाद मार्केट में ईमारत ढहने के हादसे के बाद मेट्रो द्वारा मृतक मनोज के परिजनों को 5 लाख मुआवजे की घोषणा उचित नही है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता को दिल्ली के गरीब लोगों की कोई चिंता नही है, सिर्फ अपने प्रचार प्रसार में लगी है। उन्होंने कहा कि 19 अप्रैल को मुस्तफाबाद में चार मंजिला ढहने से 11 लोगों की मौत के लिए जिम्मेदार लोगों के खिलाफ आज तक कोई ठोस कार्यवाही नही हुई है।

देवेन्द्र यादव ने कहा कि दिल्ली की संकीर्ण कॉलोनियों में मकान ढ़हने के लिए वर्तमान भाजपा की ट्रिपल इंजन की सरकार की लापरवाही और अनदेखी और पिछली आम आदमी पार्टी की भ्रष्टाचार में डूबी सरकार पूरी तरह जिम्मेदार है। उन्होंने कहा कि सिर्फ 15 वर्ष पुरानी बिल्डिंग अगर तास के पत्तों की तरह ढह जाए उससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि लैंटर माफिया की शह में पड़ने वाले लैंटर कितने मजबूत है। भाजपा और आम आदमी पार्टी बिल्डरों के साथ मिलकर लोगों के जीवन के साथ खेला है। निगम खतरनाक बिल्डिंगों की पहचान तो कर लेती है परंतु उनको डिमोलिश जब तक नही करती जब तक उनको पैसे ना दिए

जाए पहाड़ गंज और चाँदनी चौक क्षेत्रों के साथ साथ पूरी दिल्ली में में खतरनाक इमारतें है पर उनपर कोई कार्यवाही नही होती।

उन्होंने कहा कि पिछले 11 वर्षों में सीलमपुर और मुस्तफाबाद में आम आदमी पार्टी और भाजपा के विधायकों के संरक्षण में बेरोकटोक अनाधिकृत निर्माण हुए है और वर्तमान में केन्द्र सहित दिल्ली सरकार और दिल्ली नगर निगम में भाजपा के तानाशाही शासन में हो रहे भ्रष्टाचार पर कोई नियंत्रण नही है।

यादव ने कहा कि हर वर्ष अधिकारी खतरनाक बिल्डिंगों की पहचान करते है परंतु होता कुछ नही है। यह पहला अवसर नही है जब खस्ताहाल बिल्डिंग गिरने से लोग मरे हो, जनवरी में बुराड़ी में 5 मंजिला निर्माणाधीन बिल्डिंग धराशाही हो गई थी जिसमें 5 लोग मरे थे और 12 घायल हुए थे, अप्रैल में मुस्तफाबाद में चार मंजिला इमारत गिरने से 11 लोग मरे थे। पिछले 12 वर्षों में दिल्ली में भाजपा और आप पार्टी के विधायक और पार्षदों के संरक्षण में अनाधिकृत निर्माण इनती अधिक संख्या में हुआ।

जमात-ए-इस्लामी हिंद ने विभिन्न धर्मों के नेताओं और बुद्धिजीवियों का सम्मेलन आयोजित किया

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली : मुख्य संवाददाता जमाअत-ए-इस्लामी हिंद ने समाज में बढ़ते अपराध और उसकी रोकथाम विषय पर एक ऑनलाइन धार्मिक सम्मेलन का आयोजन किया। सम्मेलन की अध्यक्षता जमाअत-ए-इस्लामी हिंद के उपाध्यक्ष प्रो. इंजीनियर ने की। सम्मेलन में विभिन्न धर्मों के धर्मगुरु और बुद्धिजीवी शामिल थे स्वामी सुशील गोस्वामी महाराज, स्वामी लोकानंद, फादर नॉर्बर्ट हर्मेन, रब्बी इज़ाकील इसाक मलिकर, मर्ज़बान नरीमन ज़वाला और सिस्टर बी के हुसैन ने सम्मेलन में अपने विचार व्यक्त किए।

अपने अध्यक्षीय भाषण में जमाअत के उपाध्यक्ष प्रोफेसर सलीम इंजीनियर सलीम ने समाज में बढ़ते अपराधों पर गहरी चिंता व्यक्त की। उन्होंने अपराधों के विभिन्न रूपों की ओर इशारा करते हुए कहा कि मनुष्य इस धरती पर ईश्वर की सर्वोच्च रचना है। केवल सख्त कानून बनाकर अपराधों को नहीं रोका जा सकता। जब तक समाज में अपराध के खिलाफ जागरूकता पैदा नहीं होगी, तब तक अपराधों को रोका नहीं जा सकता। अपराध बढ़ने का एक बड़ा कारण यह है कि मनुष्य अपने जीवन का मूल उद्देश्य भूल गया है। मानवीय गरिमा की रक्षा सभी धर्मों की मूल शिक्षाओं में निहित है। लेकिन इन सबके बावजूद, मनुष्य अपराध में लिप्त है। उन्होंने कहा कि समाज में अपराध तेज़ी से बढ़ रहा है। मानवीय रिश्तों का हनन हो रहा है। ताकतवर लोग कमज़ोर लोगों के ख़िलाफ़ अपराध कर रहे हैं। महिलाओं और बच्चों के खिलाफ अपराध बढ़ रहे हैं। पत्नी पति की और पति पत्नी की हत्या कर रहा है। यहाँ तक कि बुज़ुर्गों के खिलाफ भी जघन्य अपराध सामने आ रहे हैं। प्रोफेसर सलीम इंजीनियर ने कहा कि सरकार के समर्थन से होने वाले अपराध ज़्यादा खतरनाक होते हैं। सरकार को आपराधिक तत्वों का समर्थन बंद करना चाहिए। मीडिया की ज़िम्मेदारी ऐसी बातें प्रसारित करना है जिससे अपराध रोकने में मदद मिले। अदालत की ज़िम्मेदारी असली अपराधी को जल्द से जल्द सज़ा दिलाना है। विश्व स्तर पर हो रहे अपराधों का ज़िक्र करते हुए प्रोफ़ेसर इंजीनियर सलीम ने कहा कि यूक्रेन और फ़िलिस्तीन में मानवता के ख़िलाफ़ युद्ध अपराध बड़े पैमाने पर हो रहे हैं। युद्धग्रस्त इलाक़ों में महिलाओं, बच्चों और बुज़ुर्गों की हत्या हो रही है। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि

समाज में व्याप्त अपराधों के ख़िलाफ़ लोगों की चेतना जागृत करने की ज़रूरत है। सरकार को शांति और क़ानून का पालन सुनिश्चित करना चाहिए और एक ऐसे समाज का निर्माण करना चाहिए जो सभी प्रकार के अपराधों से मुक्त हो।

सर्व धर्म संसद के स्वामी सुशील गोस्वामी महाराज ने एक महत्वपूर्ण विषय पर सम्मेलन आयोजित करने के लिए उन्होंने जमाअत-ए-इस्लामी हिंद की सराहना की। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि समाज में होने वाले किसी भी अपराध से पूरा समाज प्रभावित होता है। हमने सरकार से संसद में धार्मिक बहस के अलावा इस मुद्दे पर भी चर्चा करने का अनुरोध किया था। सुशील गोस्वामी महाराज ने कहा कि सभी धर्मगुरुओं को समाज में व्याप्त बुराइयों पर विशेष ध्यान देना चाहिए। उन्होंने कहा कि अपराध एक ऐसी बुराई है जो सभी धर्मों को नुकसान पहुँचाती है। उन्होंने कहा कि अपराध और हिंसा के लिए किसी एक धर्म को दोषी नहीं ठहराया जा सकता। हम एक ऐसे देश में रहते हैं जहाँ विभिन्न धर्मों के लोग रहते हैं, ऐसे में सभी धर्मों के लोगों को एक मंच पर आकर इस समस्या के समाधान के बारे में सोचना चाहिए। धर्म के नाम पर हो रही हिंसा की आलोचना करते हुए सुशील गोस्वामी महाराज ने कहा कि धर्म के नाम पर हिंसा किसी भी तरह स्वीकार नहीं की जा सकती। उन्होंने कहा कि सभी सकारात्मक सोच वाले लोगों को एक साथ आकर समाज को अपराध मुक्त बनाना होगा।

इस विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए स्वामी सर्व लोकानंद ने कहा कि जमाअत-ए-इस्लामी ने एक महत्वपूर्ण मुद्दे पर सम्मेलन का आयोजन किया है। यह मुद्दा देश ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया के लिए महत्वपूर्ण हो गया है। मेरे विचार से इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि मनुष्य में मानवता लुप्त हो गई है। जिस मनुष्य में धर्म नहीं है, वह पशु के समान हो जाता है। ऐसे में हमें अपने भीतर मानवीय मूल्यों को जागृत करने की आवश्यकता है। माता-पिता को अपने बच्चों को उच्च नैतिक मूल्यों की शिक्षा देनी चाहिए। जब समाज में अच्छे लोग बढ़ेंगे, तो अपराध स्वतः ही समाप्त हो जाएँगे। सबसे पहले हमें स्वयं को सुधारना होगा। यह इस बात पर निर्भर करता है कि हम कैसा इंसान बनना चाहते हैं। नैतिकता की शिक्षा घर, स्कूल और कॉलेज से शुरू होनी चाहिए। एक आदर्श नागरिक बनने के लिए अच्छे संस्कारों का होना बहुत ज़रूरी है। उन्होंने कहा कि ऐसा नहीं है कि अपराध केवल भारत में ही बढ़ रहा है, बल्कि यह पूरी दुनिया के लिए एक बड़ी समस्या बन गया है। सबसे पहले हमें इसके कारणों को जानना होगा। सम्मेलन में अपने विचार व्यक्त करते हुए फादर नॉर्बर्ट हरमन ने कहा कि आज मानवीय गरिमा खतरे में है। जीवन मूल्य खतरे में हैं। समाज में असमानता और अन्याय बढ़ा है, जिसके कारण अपराध भी बढ़े हैं। ऐसी परिस्थितियाँ पैदा करने में मीडिया की बड़ी भूमिका है। मानवीय मूल्यों को बढ़ावा मिलने पर ही सभी प्रकार की बुराइयाँ दूर होंगी।

रब्बी इज़ाकील इसाक मालेकर ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि समाज में आध्यात्मिक प्रकाश फैलाने की आवश्यकता है। ईश्वर दयालु और क्षमाशील है। धर्म में समानता और करुणा का भाव लाना होगा। उन्होंने कहा कि इस मामले में न्यायालय महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। गंभीर आपराधिक मामले वर्षों तक अदालतों में लंबित रहते हैं, जिससे असली दोषियों को सज़ा नहीं मिल पाती। अगर न्यायालय अपने काम में तेज़ी लाएँ, तो आपराधिक मामलों की संख्या कम हो सकती है।

अपराधों की बढ़ती प्रवृत्ति पर, मर्ज़बान नरीमन ज़वाला ने अपराधों के मनोवैज्ञानिक पहलू पर प्रकाश डाला और कहा कि अपराध हर युग में होते रहे हैं। सवाल यह है कि इन्हें कैसे रोका जाए। उन्होंने कहा कि सबसे पहले नकारात्मक सोच को सकारात्मक सोच में बदलने की ज़रूरत है। एक निश्चित उम्र के बाद इंसान अपराध की ओर आकर्षित हो जाता है। अगर लोगों को कम उम्र से ही अपराध के नुकसान के बारे में शिक्षित किया जाए, तो इस पर काफी हद तक काबू पाया जा सकता है। इसकी शुरुआत घर से ही हो सकती है। अगर नई पीढ़ी को अपराध से बचाना है, तो अभिभावकों और स्कूलों को इसके लिए तैयार करना होगा।

मां, बेटे और मौसी की अगुवाई में कानपुर में चल रहा देह व्यापार गिरोह का भंडाफोड़ 12 गिरफ्तार

– 6 लड़के ,तीन लड़कियां और संचालक भी गिरफ्तार

सुनील बाजपेई

कानपुर। यहां पश्चिम जिले के अंतर्गत कल्याणपुर पुलिस को बीती रात देह व्यापार गिरोह का भंडाफोड़ करने में सफलता मिली है। पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक यह देह व्यापार गिरोह गूबा गार्डन के एक घर में मां बेटे और मौसी मिलकर चला रहे थे। यहां मौके से संचालकों समेत 12 लोगों को पकड़ने के बाद पूछताछ की जा रही है।

स्थानीय सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक आईआईटी कानपुर के पास गूबा गार्डन में लंबे समय से देह व्यापार गिरोह चल रहा था। आसपास के लोगों द्वारा जिसकी शिकायत पुलिस से की गई थी। पुलिस के अनुसार छापा मारने पर मौके से छह लड़के और तीन लड़कियां और संचालक भी हत्थे चढ़े हैं। उनसे पूछताछ की जा रही है। वहीं, पड़ोसियों का कहना है कि इससे क्षेत्र का माहौल खराब हो रहा था। सुबह से लेकर रात तक लड़के और लड़कियों का आना जाना लगा रहता था। वहीं कल्याणपुर थाना प्रभारी सुधीर कुमार ने बताया कि देह व्यापार गिरोह में सम्मिलित लोगों के खिलाफ कार्रवाई करने के साथ ही जुड़े अन्य लोगों की भी तलाशी जा रही है।

जीवन अजीब है।

हम कुछ भी लेकर नहीं आते और सब कुछ पाने के लिए संघर्ष करते हैं, और अंत में, हम सब कुछ छोड़कर कुछ भी लेकर नहीं जाते।

जीवन एक क्षणिक यात्रा है, जो प्राप्ति और त्याग का एक चक्र है।

हम खाली हाथ आते हैं, फिर भी हम अपने दिन उन चीजों का पीछा करने, बनाने और पकड़े रहने में बिताते हैं, जैसे कि हम समय को खुद से दौड़ने से रोक सकते हैं।

हम प्यार, सफलता, अर्थ को पकड़ते हैं, जैसे हम उन संक्षिप्त पलों में कुछ बना सकें।

फिर भी, चाहे हम कितना भी इकट्ठा कर लें, एक दिन ऐसा आता है जब हमें सब कुछ छोड़ना पड़ता है। लेकिन शायद जीवन की सुंदरता इस बात में नहीं है कि हम क्या रखते हैं, बल्कि इस बात में है कि हम क्या देते हैं, जो प्यार हम साझा करते हैं, जो दया हम पीछे छोड़ते हैं, जो जीवन हम अपनी यात्रा के दौरान छूते हैं।

सिविल डिफेंस ने पुलिस प्रशासन के साथ मिलकर भीड़ नियंत्रण एवं यातायात व्यवस्था संभाली

परिवहन विशेष न्यूज

मथुराः जिला अधिकारी नियंत्रक नागरिक सुरक्षा मथुरा सी पी सिंह के आदेश अनुसार वृन्दावन धर्म गुरुओं की धर्म स्थलीय होने के कारण गुरु पूर्णिमा के दिन विश्व प्रसिद्ध श्री बाके बिहारी महराज मन्दिर पर सिविल डिफेंस मथुरा की ड्यूटी लगाई गई बाके बिहारी जी महाराज के दर्शन हेतु पूर्व वर्षो की भांति इस वर्ष भी लाखों श्रद्धालुओं मन्दिर अपने आराध्य ठाकुर बाके बिहारी जी महाराज के दर्शन करने आय दूर दराज से श्रद्धालुओं की भीड़ को नियंत्रण करने में सिविल डिफेंस मथुरा की टीम लगाई गई। मन्दिर पर सिविल डिफेंस के वार्डन एवं स्वयंसेवक सेवा करते नजर आए उसी तरह लगातार 4 जुलाई से 11 जुलाई 2025 तक मथुरा जनपद के समस्त चौराहे, मन्दिर एवं भीड़भाड़ वाले स्थानों पर नागरिक सुरक्षा विभाग मथुरा के स्वयंसेवक अपनी आपदा मेडिकल किट के साथ पानी एवं फल देकर श्रद्धालुओं की सेवा में लगे रहे साथ ही दूर दराज से आए श्रद्धालुओं को जो मेले में अपने परिवार से बिछड गए थे उनको सिविल डिफेंस मथुरा के पोस्ट वार्डन अशोक यादव एवं उनकी टीम ने परिवार को सकुशल उनके हवाले किया साथ ही शुक्रवार की शाम को एक यात्री का बैग रेलवे स्टेशन पर छूट गया था उसको भी पोस्ट वार्डन अशोक यादव, राम सैनी, हेमन्त, जितेन्द्र धनगर ने उनको दिया गया बैग में 15000 रूपये, जरूरी दस्तेवज एवं कपड़े थे यात्री को समान मिलने पर सिविल डिफेंस का शुक्रिया किया। ड्यूटी पर चीफ वार्डन राजीव अग्रवाल डिप्टी चीफ वार्डन कल्याण दास अग्रवाल, डिविजनल वार्डन भारत भूषण तिवारी डिप्टी डिविजनल वार्डन राजेश कुमार मित्तल सीनियर स्टाफ ऑफीसर दीपक चतुर्वेदी बैंकर, घटना नियंत्रक अधिकारी सचिन अग्रवाल, पोस्ट वार्डन अशोक यादव, गिरीश वार्ष्णेय, राम कुमार चौहान, शैलेश खण्डेलवाल, प्रवेश कुमार, गुलशेर, पंकज, पवन प्रकाश, शुभम् कुमार, राजेश कुमार, सुनेना गुप्ता, शैली अग्रवाल, पिंकी अग्रवाल, रातिरंजन, वरिष्ठ सहायक जगदीश सिंह, प्रमोद शर्मा, मुकर, नितिन, दीपक, रामदुलारी, हेमलता, ज्योति, रोहतास, विक्रम, गोविंद, चंद्रशेखर अग्रवाल, रावेंद्र बंसल, जयवीर यादव, मुकेश शर्मा, नरेश अग्रवाल, मोहित पवन शर्मा, नरेन्द्र, विवेक, त्रिभुवन यादव, श्याम बाबू आदि वार्डन एवं स्वयंसेवक ने पुलिस प्रशासन के साथ मिलकर यातायात व्यवस्था एवं भीड़ नियंत्रण के साथ परिक्रमार्थियों की सेवा में लगी रही।

मरघट का सन्नाटा न पसरे, इसलिए आधे घंटे का डिजिटल मौन

(आलेख : बादल सरोज)

इंसान होने की खूबी यह है कि वह जुल्म के हद से ज्यादा बढ़ने के बाद भी समर्पण नहीं करता, प्रतिरोध तेज करता है और उसके नए-नए तरीके भी ढूंढता, तलाशता रहता है। कई बार, किसी निजी पहल के साथ सुझाए गए तरीके और किये गए आह्वान भी बिजली की रफ़्तार से दुनिया भर में फ़ैल जाते हैं।

गज़ा के एक डॉक्टर एजिदीन द्वारा फिलिस्तीन, खासतौर से गज़ा के नागरिकों पर थोपे गये नरसंहार की असहनीय पीड़ा के विरुद्ध किया गया आधा घंटे के लिए एक सप्ताह तक मोबाइल और इन्टरनेट बंद करने का पैगाम इसी तरह का आव्हान था।

दुनिया के अनेक देशों की जनता ने इसे जिस प्रभावी तरीके से व्यवहार में उतारा, वह जहां गज़ा के प्रति वैश्विक चिंता और एकजुटता का प्रतीक है, बल्कि इस भयानक नरसंहार के शरीकेजुर्मों की शिनाख्त कराने की एक असरदार मुहिम का भी उदाहरण है।

विश्व के अनेक संगठनों, दलों, आंदोलनों ने इस आव्हान को अपना आव्हान बनाया ; भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) ने भी इसे न सिर्फ समर्थन दिया, बल्कि लाखों करोड़ों हिन्दुस्तानियों ने 6 जुलाई से 12 जुलाई तक हर रोज शाम 9 बजे से 9.30 बजे तक अपने मोबाइल और इन्टरनेट बंद रखकर इसे असाधारण रूप से सफल भी किया।

यह किस तरह महज एक प्रतीकात्मक कार्यवाही नहीं थी, एक बहुआयामी प्रभाव डालने वाला प्रतिरोध था, इस पर आने से पहले यह जानना जरूरी होगा कि गज़ा पर बोलना और उसके साथ खड़े होना क्यों जरूरी है। गज़ा पर बोलने के लिए डिजिटली आधा घंटा मौन रहना क्यों आवश्यक है?

निस्संदेह एक अत्यंत छोटे, फक्त 365 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल वाले नन्हे से गज़ा में पिछले 20 महीने से जो नरसंहार हो रहा है, वह मानवीय प्रश्न है। 7 अक्टूबर, 2023 से हमास के कथित हमले के बाद गज़ा पर इजरायली हमलों में मारे गए निर्दोष नागरिकों की संख्या के अनुमान 57 हजार से लेकर 61 हजार के बीच हैं। महज 24 लाख से भी कम आबादी वाले इस छोटे से इलाके में इतनी सारी मौतें आधुनिक समाज का सबसे वीभत्स नरसंहार है। इन मारे गए लोगों में दो-तिहाई से अधिक या तो बच्चे हैं या महिलायें हैं। अब तक के इतिहास के सबसे दुष्ट राज्य इजरायल ने बर्बर बेंजामिन नेतन्याहू की अगुआई में इस नरसंहार के लिए जो तरीके अपनाए हैं, वे सभ्य समाज ही नहीं, समूची मनुष्यता को स्तब्ध करने वाले हैं।

सारे अंतर्राष्ट्रीय कानूनों की धज्जियां उड़ाते हुए बच्चों के स्कूल्स पर उस समय बम गिराए गए, जब वे पढ़ रहे थे। अस्पतालों पर बमबारी करके उन्हें मरीजों और डॉक्टरों की कब्रगाह बना दिया गया। रेडक्रॉस, विश्व स्वास्थ्य संगठन और संयुक्त राष्ट्र संघ जैसी तटस्थ संस्थाओं द्वारा भेजी जाने वाली दवाओं की खेप रोक दी गयी, मानवाधिकार कार्यकर्ताओं द्वारा ले जा रही दवाओं और राहत सामग्री को रास्ते में ही रोककर उन्हें ले जाने वालों को ही गिरफ्तार कर लिया गया – इनमें पर्यावरण कार्यकर्ता ग्रेटा थनबर्ग भी शामिल थीं। बर्बरता की हद यह थी कि भोजन और राहत सामग्री बांटे जाने का एलान करके पहले लोगों को इकट्ठा किया गया और फिर उन्हें निशाना बनाकर मिसाइल दाग कर मार डाला। जाहिर है कि इनमें भी 90 प्रतिशत से अधिक भूखे बच्चे और महिलायें थीं। इसलिए बिलाशक गज़ा एक मानवीय प्रश्न है, मगर यह सिर्फ मानवीय संवेदनाओं को झकझोरने वाला मसला ही नहीं है। यह इससे कहीं ज्यादा गम्भीर और खतरनाक काण्ड है।

गज़ा के साथ जो हो रहा है, वह कई हजार वर्षों में हासिल उन सारे कानूनों और मर्यादाओं को ध्वस्त करने वाला है, जिन्हें बीसियों करोड़ इंसानों की मौत के बाद मानव समाज ने हासिल किया है। इसने पहले विश्वयुद्ध के बाद बनी लीग ऑफ़ नेशन्स, दूसरे विश्वयुद्ध के बाद बने संयुक्त राष्ट्र संघ की दुनिया को कुछ नियमों से चलाने की समझदारी को ही उलट दिया है। पौराणिक ज़माने से सिकंदर से होते हुए युद्ध की उन सारी सीमाओं को ही मिटा दिया है, जिसमे स्त्रियों, बच्चों, नागरिकों को हमलों से अलग रखने की धारणा विकसित होकर आई थी। संयुक्त राष्ट्र संघ ने अपने पूरे इतिहास में जितने प्रस्ताव इसराइल की करतूतों और मानवाधिकारों के उल्लंघन के खिलाफ पारित किये हैं, उतने किसी और मामले में नहीं किये।

संयुक्त राष्ट्र संघ महासभा में अब तक करीब 700 बार और सुरक्षा परिषद् में कोई 60 बार फिलिस्तीन की समस्या को लेकर, इजरायल के जबरिया कब्जे को हटाने के लिए, उसके नरसंहार की निंदा करने के लिए प्रस्ताव पारित हुए हैं। इन प्रस्तावों पर जब-जब भी वोटिंग हुयी है, तब-तब ज्यादातर मामलों में इसरायल के पक्ष में सिर्फ एक वोट पड़ा है और यह वोट अमरीका का रहा है।

इस बार के हमलों में भी मुट्ठी भर छोटे-मोटे देशों को छोड़कर किसी ने – यहाँ तक कि नाटो के सदस्य और अमरीका के पिछलग्गू देशों ने भी – इजरायल का साथ नहीं दिया। तत्काल युद्ध विराम किये जाने की मांग की। यदि दुनिया को चलाने वाले सारे कानून ही अप्रासंगिक बना दिए जायेंगे, तो जो भेड़िये छुट्टे छूटेंगे, वे सिर्फ गज़ा को चीन्हने तक ही नहीं रुकेंगे। कोई भी सुरक्षित नहीं बचेगा। इसलिए गज़ा का सवाल सिर्फ गज़ा का सवाल नहीं है, पृथ्वी पर रहने वाले हर मनुष्य और खुद पृथ्वी के भविष्य की सलामती का सवाल है।

जिस आधार पर पिछले 75 वर्ष से इजरायल का यहूदीवादी निज़ाम फिलिस्तीन को लहूलुहान किये हुए है, उसकी बोटी-बोटी नोंचकर इस ऐतिहासिक राष्ट्र फिलिस्तीन को घटाकर उसके पास अपनी ही जमीन का दसवां हिस्सा भी नहीं छोड़ा है – वह आधार अगर दुनिया के बाकी दुष्ट राज्यों के लिए भी आधार बन गया, तो फिर भारत सहित कोई भी साबुत सलामत बचेगा क्या? बिना किसी ऐतिहासिक प्रमाण के महज यह दावा करके कि कोई चार हजार साल पहले यहूदी धर्म के पैगम्बर हजरत अब्राहम ने यहीं इल्हाम हासिल किया था और इस तरह हजारों साल पहले यह देश हमारा था, फिलिस्तीन पर धावा बोल दिया गया। इस इलाके को सैकड़ों वर्षों तक गुलाम बनाए रखने वाले ब्रिटेन ने फ्रांस और अमरीका के साथ मिलकर दबाव बनाया। 1947 में "नए देश" के लिए जमीन का एक हिस्सा देने की बात हुयी। उस समय यानी 1947 में फिलिस्तीन में फिलिस्तीनी अरब 13 लाख 50 हजार थे और फिलिस्तीनी यहूदी करीब साढ़े छः लाख थे और इनका कब्जा सिर्फ 6% जमीन पर था। आज यह आंकड़ा उलटा जा चुका है। बित्ता भर जमीन बची है और फिलिस्तीनी अपने ही देश में शरणार्थी हैं। यह कल्पना ही भयावह है कि यदि यह बेतुका आधार अगर दुनिया भर में कब्जे का आधार बन गया, तो बचेगा कौन? बुद्ध धर्म को मानने वाले यही तर्क बुद्ध की जन्म और सिद्धि स्थली पर लागू करेंगे, तो क्या होगा? बात उससे भी पहले आदिवासी युग तक गयी, तो कहाँ-कहाँ क्या-क्या शेष रहेगा? इसलिये गज़ा सिर्फ उस छोटे से इलाके तक महदूद सवाल नहीं है ; यह आने वाली दुनिया का एक ट्रेलर है। इसे यदि इसे पूरा साकार होने दिया, तो ऐसी फिल्म बनेगी, जिसका कोई मध्यांतर नहीं होगा!!

यह पहलू इसलिए महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि युद्ध इजरायल नहीं लड़ रहा ; इजरायल कभी नहीं लड़ा। इस पिद्दी इजरायल की औकात क्या है, यह अभी हाल में ईरान ने मात्र तीन दिन में दुनिया को दिखा दिया। अमरीकी और उसके नेतृत्व में चलने वाले साम्राज्यवाद का मोहरा है इजरायल, जिसे आगे बढ़ाकर ये लुटेरे पहले मध्य-पूर्व और उसके बाद समूची दुनिया को अपने खूंटे पर बाँध लेने का मंसूबा देख रहे हैं। ट्रूमैन, आइजनहॉवर, केनेडी, जॉनसन, निक्सन से लेकर फोर्ड, कार्टर, रीगन, बड़े-छोटे बुश, क्लिन्टन, ओबामा और बाइडेन से होते हुए डोनाल्ड ट्रम्प के अमरीका तक, इस मामले में नीति कभी नहीं बदली गयी। अमरीका का एजेंडा साफ़ रहा और हालिया संकट बढ़ने के बाद ट्रम्प की दूसरी टर्म में वह किस कदर खूंखार हो रहा है, यह टैरिफ के बहाने मरोड़ी जाने वाली बांहों से समझा जा सकता है। भारत के नजरिये से देखें, तो पाकिस्तान को गले लगाने का ट्रम्पियापा कश्मीर और दीगर सवालों पर कहाँ तक जा सकता है, यह समझने के लिए विदेश नीति का विशेषज्ञ होना जरूरी नहीं है। इसलिए भी गज़ा हमारा और बाकी दुनिया का भी सवाल है।

ठीक यही कारण है कि भारत की जनता हमेशा से इसरायल की बर्बरता के खिलाफ फिलिस्तीन की जनता और उसके मुक्ति आंदोलन के साथ रही है। उसने साम्राज्यवाद को भुगता है -- इसलिए वह फिलिस्तीनी जनता का दर्द जानती है। गांधी से लेकर कम्युनिस्टों तक, नेहरू से लेकर पटेल तक, जयप्रकाश से लेकर चौधरी चरण सिंह, चन्द्रशेखर. वी पी सिंह, देवेगौड़ा तक साम्राज्यवाद के खिलाफ लड़ने वाली सारी धाराएं, आपस के तमाम मतभेदों के बावजूद फिलिस्तीनी जनता के मुक्ति आंदोलन के साथ रहीं। यहाँ तक कि वाजपेयी भी यही बोले और आधिकारिक रूप से यही नजरिया आज भी है। भारत वह पहला देश था, जिसने फिलिस्तीन को मान्यता दी, उसे संयुक्त राष्ट्र संघ के सदस्य का दर्जा दिलाने का प्रस्ताव रखा और मंजूर करवाया। यासर अराफात की अगुआई वाले फिलिस्तीनी मुक्ति संगठन से लेकर आज का फिलिस्तीन भी हमेशा भारत के साथ खड़ा रहा। सिर्फ वही लोग इसरायल के साथ रहे/हैं, जो तब ब्रिटिश साम्राज्य का चरणवन्दन करते टेढ़े हुए जा रहे थे, अब नमस्ते ट्रम्प करते करते औंधे पड़े हैं। इन्हें इसरायल बड़ा भाता है -- इतना ज्यादा कि वे दुनिया की कुख्यात हत्यारी एजेंसी मोसाद के साथ भारतीय सुरक्षा में साझेदारी तक करने को तत्पर हो जाते हैं। इसरायल के हथियारों का सबसे बड़ा खरीददार भारत को बना देते है। मोदी के आने के बाद 70 साल में पहली बार ऐसा हुआ है, जब संयुक्त राष्ट्र संघ में इसरायल के विरुध्द आये प्रस्तावों पर भारत तटस्थ रहा। सैकड़ों देश इसरायल की निंदा करते रहे, मगर हम 140 करोड़ आबादी वाले दुनिया के सबसे बड़े राष्ट्र कभी ओबामा, तो कभी ट्रम्प का मुंह ताकते रहे। इस बार तो हद ही कर दी, जब 12 जून को संयुक्त राष्ट्र संघ में आये युद्ध विराम के प्रस्ताव पर अल्बानिया, कैमरून, डोमिनिका, किरीबाती, मलावी,तिमोरी लेस्ते, पनामा, मार्शल द्वीप, टोंगो, येचिया, जोर्जिया, स्लोवाकिया जैसे नक़्शे पर मुश्किल से ढूंढें जाने वाले देशों के साथ तटस्थ होने के लिए भारत मतदान कर रहा था।

यह कुकर्म करने के बाद झेंप मिटाने के लहजे में संयुक्त राष्ट्रसंघ में भारत के राजदूत बार-बार कह रहे थे कि हमारे देश की आधिकारिक नीति फिलिस्तीन को राष्ट्र मानने और उसकी जमीन वापस कराने की है। इसके बाद भी यह तटस्थ रुख क्यों? जाहिर है, ट्रम्प के दरबारी बनने की चाहत के सिवा और कोई कारण नहीं हो सकता। इसी गिरोह ने अपनी जहरीली मुहिम चलाकर आज फिलीस्तीन के मामले में भारत की जनता के बड़े हिस्से को भ्रमित कर दिया है। कुछ धूर्तों ने मिलकर गज़ा और फिलिस्तीन को मुस्लिम विरोधी इस्लामोफोबिक चश्मे से दिखाना शुरू कर दिया है और उनकी भक्तमंडली के मूर्खों ने उसे सच मान लिया है। इन्हें नहीं पता कि फिलिस्तीन पर हमलों का किसी भी तरह के धार्मिक विवाद से कोई संबंध नहीं है -- यह सीधे-सीधे फिलिस्तीन की जमीन पर कब्जा कर उसे अपना उपनिवेश बनाने की साजिश है। जिस पूर्वी यरुशलम पर कब्जे के लिए मई 2021 का हमला शुरू हुआ था, वह एक ही पुरखे की निरंतरता में आये दुनिया के तीन धर्मों से जुड़ा ऐतिहासिक शहर है।

उस एक किलोमीटर से भी कम दायरे में तीनो धर्मो के जन्म और उनके पैगम्बरों के साथ जुड़ाव के महत्वपूर्ण तीर्थ हैं। यहूदी मान्यताओं के हिसाब से अब्राहम यहीं के थे। ईसा मसीह को यहीं सूली पर चढ़ाया गया था और ईसाई मान्यताओं के हिसाब से यहीं वे पुनर्जीवित हुए थे। मक्का, मदीना के बाद इस्लाम का यह तीसरा सबसे पवित्र धार्मिक स्थल है। इस्लाम धर्म की घोषणा यहीं हुयी थी और इस्लामिक मान्यताओं के हिसाब से पैगम्बर हजरत मोहम्मद यहीं से खुदा के पास गए थे।

मगर जो खुद अपने देश की साझी और समावेशी विरासत को नहीं जानते, वे दुनिया के बारे में कितना जानेंगे और पूरी तरह अपराधी हो चुका मुख्य धारा का मीडिया उन्हें कैसे जानने देगा। यह एक मुख्य वजह है कि गज़ा के मुद्दे को जनता के बीच ले जाया जाना चाहिए। वाम और सीपीएम यह जानती है – उनकी अगुआई में पूरे देश में इसे लेकर हुई लामबंदियाँ यही काम करने की कोशिशें हैं। सप्ताह भर आधा घंटे के डिजिटल मौन का आव्हान इसी दिशा में किया गया आव्हान है।

यह डिजिटल मौन, आधा घंटे तक सोशल मीडिया के इस्तेमाल और किसी भी तरह के एप्प को न खोलने के सिर्फ सांकेतिक प्रभाव ही नहीं होंगे, इसके सामाजिक असर भी होंगे – इनके आर्थिक असर भी होंगे।

सोशल मीडिया और इन्टरनेट पर हमारी सक्रियता हमारी पहचान वाले पदचिन्ह भी छोड़ती है। यही पदचिन्ह हैं, जिन पर चलकर बाजार हमारे घर तक पहुंचता है। हमारी दिलचस्पी और रुचि को जानकर वह हमें अपना उपभोक्ता और अपने माल को खपाने का जरिया बनाता है। यह डिजिटल मौन इन महाकाय बहुराष्ट्रीय कंपनियों को धक्का पहुंचाएगा।

सवाल सिर्फ आधा घंटे का नहीं है, जो अल्गोरिथम समझते हैं, वे जानते हैं कि लाखों-करोड़ों का एक साथ आधे घंटे इन्टरनेट और सोशल मीडिया से दूर रहना इनके सारे ताने-बाने में व्यवधान डालकर उसे खंडित करता है। इनका सरोदा बिगाड़ देता है।

यह इसलिए भी जरूरी है, क्योंकि यही बड़े कोर्पोरेट्स हैं, जिन्होंने इजरायल को मदद की और बेदखली और नरसंहार को अपने छप्परफाड़ मुनाफों का जरिया बनाया। हाल ही में जारी संयुक्त राष्ट्र संघ के एक अध्ययन दल ने "कब्जे की अर्थव्यवस्था से नरसंहार की अर्थव्यवस्था तक" नाम की अपनी रिपोर्ट में इसका पर्दाफ़ाश किया है।*इस रिपोर्ट ने बताया है कि किस तरह कार्पोरेट्स ने इजरायल की फिलिस्तीनियों के विस्थापन और नरसंहार की उपनिवेशवादी परियोजना में पैसा लगाया है, अपने पैसे की दम पर देशों के नेताओं को उनके दायित्वों से अलग रखना पक्का किया है और विराट मुनाफ़ा कमाया है।

यह रिपोर्ट 48 बड़े कार्पोरेट खलनायकों को नामजद करती हैं, जिनमे अमरीका की दानवाकार कम्पनियां माइक्रोसॉफ्ट, अल्फाबेट इंक., गूगल की मूल कम्पनी और अमेज़न शामिल हैं। कोई 1000 कार्पोरेट कंपनियों के डाटा को आधार बनाकर किया गया यह अध्ययन वैश्विक वित्तीय पूँजी के घिनौने और पाशविक चेहरे को उजागर करता है। रिपोर्ट का कहना है कि ये कम्पनियां कब्जे के साथ जुड़ी भर नहीं हैं, ये नरसंहार की अर्थव्यवस्था के साथ नत्थी भी हैं।

इस तरह डिजिटल मौन का यह एक छोटा और सांकेतिक दिखने वाला प्रतिरोध गज़ा के साथ आम इंसान को जोड़ता तो है ही, उसे अपराधियों के असली चेहरे को देखने और पूँजीवाद के नए रूप की वास्तविकता समझने में भी मदद करता है।

(लेखक लोकजतन के संपादक और अखिल भारतीय किसान सभा के संयुक्त सचिव हैं।)

घर में खाना बनाते समय महिला की करंट से मौत

परिजनों ने बिना पोस्टमार्टम कार्यवाही के गांव में किया अंतिम संस्कार

कुंवर गांव थाना क्षेत्र के गांव अहरुइया का पूरा मामला, शनिवार सुबह लगभग आठ बजे चूल्हे पर खाना बना रही सुनीता पत्नी राजकुमार

चूल्हे के पास लगे सोलर पैनल के पाइप में अचानक उतरा करंट

महिला का हांथ पाइप से छू जाने के कारण हुआ हादसा

महिला की मौत के बाद परिजनों का रो रोकर बुरा हाल।

सरकार का ऑपरेशन कालनेमि- ढोंगी नकली पाखंडी साधु संतों में भारी हड़कंप-सभी राज्यों ने इसका संज्ञान लेना समय की मांग

आध्यात्मिक आस्था की प्रतीक भारतीय देवभूमि पर आस्था पूजा श्रद्धा के नाम पर ठगी करने वाले नकली बाबाओं पर शिकंजा कसना ज़रूरी

आध्यात्मिक आस्था व देवभूमि की छवि धूमिल करने वाले पाखंडी ढोंगी नकली बाबाओं की सफ़ल धरपकड़-उत्तराखंड सरकार का कालनेमि ऑपरेशन सराहनीय-**एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र**

वैश्विक स्तरपर पूरी दुनियाँ में संभवतःभारत ही एक ऐसा देश है जिसकी देवभूमि पर,पग-पग पर आध्यात्मिक स्थल है,लोगों में भरपूर धार्मिक आध्यात्मिक आस्था श्रद्धा है, जो एक अच्छी बात है, अभी चल रही अमरनाथ यात्रा व कावड़ यात्रा में हम सभी यह देख रहे हैं ऐसे अनेंको अवसर प्रतिदिन अनेक राज्यों में आते रहते हैं जहां भक्तों की भीड़भाड़ लगी रहती है व सबसे अच्छी बात यह है कि आध्यात्मिक स्थल, ट्रस्ट, अनेकों सेवा समितियां व संस्थाओं द्वारा भक्तों की सेवा व ध्यान रखा जाता है, ठीक उसी तरह शासन प्रशासन भी भक्तों की सुरक्षा व व्यवस्था में पूर्ण सहयोग करता है। मैं एडवोकेट किशन सनमुख़दास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं कि सुरक्षा, सेवा, देखभाल कितनी में चाक चौबंद क्यों ना हो, कुछ ना कुछ लीकेजेस होते रहते हैं जिनमें भक्तों को बहुत परेशानी, ठगी, धोखाधड़ी का शिकार होना पड़ता है, जो उनसे इस आध्यात्मिक परिसर या बाहर में हो सकता है, उसी का संज्ञान लेकर उत्तराखंड सरकार ने ऑपरेशन कालनेमि चलाया है, जो मेरे विचार से बहुत ही शानदार पहल है,मैं इसआर्टिकल के माध्यम से सभी राज्यों के मुख्यमंत्रीयों से निवेदन,अनुरोध करना चाहूंगा कि, कालनेमि, इसका संज्ञान लेकर यह ऑपरेशन तुरंत लागू करें ताकि पूरे भारत में लागू हो जाए क्योंकि इस क्षेत्र में बहुत से देशी विदेशी अपराधिक छवि वाले भी घुसे हुए हैं, जिनकी दुकानदारी जोरों से चल रही है व भक्त ठगी धोखाधड़ी पाखंड का शिकार हो रहे हैं जिनका सटीक उदाहरण है कि,उत्तराखंड सरकार ने यह अभियान चलाकर तेजी से धरपकड़ कर एक ही दिन में 25 से अधिक ऐसे पाखंडी बाबाओं को गिरफ्तार किया गया है जिसमें एक पड़ोसी मुल्क का नागरिक भी शामिल है, इस अभियान की कढ़ाई को देखकर अब नकली बाबाओं में भारी हड़कंप मच गया है, व धरपकड़ के डर से भी अपने स्थान छोड़कर अन्य राज्यों की ओर रुख़ कर रहे हैं इसीलिए सभी राज्यों ने इसका संज्ञान लेकर इसी तरह का अभियान चलाने की जरूरत है,चूँकि आध्यात्मिक आस्था की प्रतीक भारतीय देवभूमि पर आस्था पूजा श्रद्धा के नाम पर ठगी व नकली बाबाओं पर शिकंजा कसा जा रहा है, इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, सरकार का ऑपरेशन कालनेमि-ढोंगी नकली पाखंडी साधु संतों में भारी हड़कंप- सभी राज्यों ने इसका संज्ञान लेना समय की मांग है।

साथियों बात अगर हम ढोंगी नकली पाखंडी बाबाओं को समझने की करें तो,ढोंगी पाखंडी बाबा को होते हैं जिनके पास, न तो शिक्षा और ना ही किसी मंदिर या मठ का दस्तावेज है, ऐसे ही लोगों को पकड़ने के निर्देश दिए गए हैं, इसी के चलते शुक्रवार को देहरादून पुलिस ने ऐसे 25 लोगों को गिरफ्तार किया है,जिनके पास ना तो कोई ज्योतिष शास्त्र की शिक्षा है और ना ही उनके पास किसी मठिया मंदिर का कोई ऐसा दस्तावेज जिससे वह साबित कर पाए कि वह सही मायने में साधु या संत है,ऐसे लोगों को गिरफ्तार किया गया, इन पकड़े गए 25 ढोंगी बाबाओ मैं अनेकों राज्यों के लोग शामिल है, उत्तर प्रदेश,हरियाणा, राजस्थान, असम ,उत्तराखंड के लोग हैं। वहीं इन 25 लोगों में से एक व्यक्ति बांग्लादेश का मूल निवासी भी पाया गया है, पुलिस को अंदेशा है कि साधु संन्यासियों का वेश अपनाकर कई मुजरिम भी आम जनमानस के बीच मौजूद हो सकते हैं जिसको ध्यान में रखते हुए इस अभियान को आगे भी जारी रखने की बात कही गई है, इसमें सभी जिले के सभी पुलिस अधिकारियों को निर्देश दिए गए हैं कि वह अपने जिले में इस तरह के साधु-संतों का पेज धारण कर सड़क के किनारे या फिर गली मोहल्ले में घूमने वाले बाबो को भी चिन्हित कर पकड़े।

साथियों बात अगर हम उत्तराखंड में ढोंगी बाबाओ को पकड़ने ऑपरेशन कालनेमि की करें तो, देवभूमि कहे जाने वाले उत्तराखंड की छवि को धूमिल करने वाले पाखंडी बाबाओं के खिलाफ उत्तराखंड सरकार द्वारा सख्त रुख़ अपनाया गया है, इसी के तहत ऑपरेशन कालनेमि के नाम से एक अभियान की शुरुआत की गई है,इस अभियान के अंतर्गत जो भी लोग नक़ली साधु बन कर या साधुओं की वेशभूषा अपनाकर लोगों को ठगने का काम कर रहे हैं।देवभूमि उत्तराखंड में पग-पग पर आध्यात्मिक स्थल हैं, उसके बाहर साधु-संत और बाबा भी मौजूद रहते हैं, इनमें से कई तो सच्चे साधु-संत हैं लेकिन कई फर्जी भी, इन फर्जी बाबाओं के पास ज्ञान तो ना के बराबर होता है लेकिन आडंबर पूरा,अब उत्तराखंड पुलिस ने ऐसे फर्जी बाबाओं को धर-पकड़ के लिए एक विशेष अभियान छेड़ा है, ऑपरेशन कालनेमि इस ऑपरेशन के तहत देहरादून में 25 फर्जी बाबाओं को गिरफ्तार किया गया है ये सभी नकली साधु या बाबा आम लोगों को ठगने का काम कर रहे थे, पुलिस ने इन सभी लोगों को गिरफ्तार किया है,उन लोगों पर कठोर कार्रवाई करने के निर्देश राज्य सरकार ने दिए हैं, कुछ दिन पहले ही मुख्यमंत्री ने ऐसे लोगों को पकड़ने के लिए ऑपरेशन कालनेमि की शुरुआत थी,इसमें सभी जिले के सभी पुलिस अधिकारियों को निर्देश दिए गए हैं कि वह अपने जिले में इस तरह के साधु-संतों का पेज धारण कर सड़क के किनारे या फिर गली मोहल्ले में घूमने वाले बाबो को भी चिन्हित कर पकड़े, इस अभियान पर कार्यवाही करते हुऐ दून पुलिस को बड़ी कामयाबी हाथ लगी है. पुलिस द्वारा चलाए गए विशेष चेकिंग अभियान के दौरान 25 ऐसे बाबाओं को हिरासत में लिया गया है, जो कि किसी प्रकार के संगठन से जुड़े हुए दस्तावेज़ नहीं प्रस्तुत कर सके,पुलिस को अंदेशा है कि साधु संन्यासियों का वेश अपनाकर कई मुजरिम भी आम जनमानस के बीच मौजूद हो सकते हैं जिसको ध्यान में रखते हुए इस अभियान को आगे भी जारी रखने की जरूरत है तथा इसे पूरे भारत में सभी राज्यों ने लागू करने की आवश्यकता है। मुख्यमंत्री ने स्पष्ट निर्देश दिए हैं कि पाखंड और अंधविश्वास के नाम पर जनता को गुमराह करने वालों की पहचान कर उनके खिलाफ तुरंत कानूनी कार्रवाई की जाए. उन्होंने कहा कि ऐसे लोगों की धार्मिक, जातीय या पंथीय पहचान की परवाह किए बिना राज्य सरकार जीरो टॉलरेंस की नीति अपनाएगी और सख्त कदम उठाएगी, जनता से यह अपील गई गई है कि अगर उन्हें किसी भी फर्जी बाबा या ढोंगी के बारे में जानकारी हो, तो तुरंत प्रशासन को इसकी जानकारी दें, ताकि उनके विरुद्ध सख्त कदम उठाए जा सकें,सीएम ने स्पष्ट निर्देश दिए हैं कि पाखंड और अंधविश्वास के नाम पर जनता को गुमराह करने वालों की पहचान कर उनके खिलाफ तुरंत कानूनी कार्रवाई की जाए,उन्होंने कहा कि ऐसे लोगों की धार्मिक, जातीय या पंथीय पहचान की परवाह किए बिना राज्य सरकार जीरो टॉलरेंस की नीतिअपनाएगी और सख्त कदम उठाएगी,जनता से यह अपील गई गई है कि अगर उन्हें किसी भी फर्जी बाबा या ढोंगी के बारे में जानकारी हो, तो तुरंत प्रशासन को इसकी जानकारी दें, ताकि उनके विरुद्ध सख्त कदम उठाए जा सकें।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि सरकार का ऑपरेशन कालनेमि- ढोंगी नकली पाखंडी साधु संतों में भारी हड़कंप- सभी राज्यों ने इसका संज्ञान लेना समय की मांग,आध्यात्मिक आस्था की प्रतीक भारतीय देवभूमि पर आस्था पूजा श्रद्धा के नाम पर ठगी करने वाले नकली बाबाओं पर शिकंजा कसना ज़रूरी, आध्यात्मिक आस्था व देवभूमि की छवि धूमिल करने वाले पाखंडी ढोंगी नकली बाबाओं की सफ़ल धरपकड़-उत्तराखंड सरकार का कालनेमि ऑपरेशन सराहनीय है।

भारत में जल्द लॉन्च होगा एकदम नया वीएलएफ मोबसटर स्कूटर, शानदार डिजाइन और बेहतरीन फीचर्स से है लैस

परिवहन विशेष न्यूज

Motohaus India ने VLF Mobster स्कूटर को भारत में लॉन्च करने की घोषणा की है। यह स्कूटर ICE के साथ आने वाला VLF का पहला स्कूटर होगा। इसमें दमदार डिजाइन और कई शानदार फीचर्स मिलेंगे। इसमें डिस्क ब्रेक डिजिटल TFT डिस्प्ले USB चार्जिंग पोर्ट जैसे फीचर्स होंगे। इंजन के बारे में अभी जानकारी नहीं दी गई है लेकिन यह 125cc या 180cc इंजन के साथ आ सकता है।

नई दिल्ली। Motohaus India ने आधिकारिक तौर पर घोषणा कर दी है कि VLF Mobster स्कूटर भारत में लॉन्च होगा। Mobster, VLF का भारत में पहला ICE (इंटरनल कम्बशन इंजन) स्कूटर होगा। इसे कई बेहतरीन फीचर्स और डिजाइन के साथ भारत में लॉन्च किया जाएगा। आइए इसके बारे में विस्तार में जानते हैं।

डिजाइन होगा दमदार

VLF Mobster का लुक बाकी स्कूटरों से अलग और बेहद आक्रामक है। फ्रंट एप्रन पर ट्विन-हेडलैंप सेटअप इसे एक स्पोर्टी और मस्कुलर लुक देता है, जो भारतीय बाजार में किसी और स्कूटर में देखने को नहीं मिलता। सिंगल-पीस सीट और साइड पैनल का खास डिजाइन इसकी स्टाइल को और उभारता है। चौड़ा, स्ट्रीट बाइक स्टाइल हैंडलबार भी इस स्कूटर को बाकी स्कूटर्स से अलग खड़ा करता है। यह डिज़ाइन एलीमेंट्स इसे युवा राइडर्स के लिए और आकर्षक बनाते हैं।

फीचर्स मिलेंगे काफी शानदार

VLF Mobster को कंपनी ने प्रीमियम सेगमेंट में उतारने की तैयारी की है। इसमें कई बेहतरीन फीचर्स शामिल हैं। इसमें डिस्क ब्रेक सेटअप, टेलीस्कोपिक फ्रंट फोर्क्स और रियर डुअल शॉक एब्जॉर्बर, फ्रंट में 120-सेक्शन और रियर में 130-सेक्शन टायर्स के साथ 12-इंच अलॉय व्हील्स, 5-इंच का पूरी तरह डिजिटल TFT कलर डिस्प्ले, जिसमें मोबाइल स्क्रीन मिररिंग की सुविधा मिलेगी, USB चार्जिंग पोर्ट, स्विचेबल डुअल-चैनल ABS, लाइव डैशकैम फीचर, जो भारतीय सड़कों के हिसाब से काफी उपयोगी साबित हो सकता है

इंजन और परफॉर्मेंस

VLF Mobster में कौन सा इंजन मिलेगा, इस पर अभी कंपनी ने पूरी तरह से पर्दा नहीं उठाया है। कंपनी दो ऑप्शन्स पर विचार कर रही है। इसे 125cc इंजन के साथ पेश किया जा सकता है, जो 12 bhp की पावर और 11.7 Nm का टॉर्क जनरेट करेगा। इसमें 180cc इंजन के साथ भी पेश किया जा सकता है जो ज्यादा दमदार 18 bhp की पावर और 15.7 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसे स्कूटर ग्रे, व्हाइट, रेड और यलो जैसे कलर ऑप्शन्स में लाया जा सकता है।

क्या फ्लॉप हो रही है एलोन मस्क की टेस्ला साइबरट्रक? जानिए क्या है पीछे का कारण

टेस्ला साइबरट्रक जिसका प्रचार Elon Musk ने खूब किया उम्मीदों पर खरी नहीं उतरी। इसकी बिक्री में भारी गिरावट आई है दूसरी तिमाही में 52% तक की कमी देखी गई। ऊंची कीमत विवादास्पद डिज़ाइन और कम रेंज के कारण यह आम खरीदारों के लिए मुश्किल है। Tesla को अब Rivian Ford और GM जैसी कंपनियों से कड़ी चुनौती मिल रही है जिससे निवेशकों का भरोसा डगमगा सकता है।

नईदिल्ली। दुनिया की सबसे पॉपुलर इलेक्ट्रिक कारों में से एक Tesla Cybertruck है। टेस्ला कंपनी के मालिक Elon Musk ने इसका बढ़ चढ़कर प्रचार किया। इसके साथ ही इसकी खूबियों के बारे में काफी प्रचार किया। जिस तरह से साइबरट्रक का प्रचार किया गया था, उस तरह से यह खरी नहीं उतरी है। जब Elon Musk ने पहली बार Cybertruck को पेश किया था, तो उन्होंने इसे एक फ्यूचरिस्टिक की कार बताया था। सीएनएन की एक रिपोर्ट के मुताबिक, Cybertruck ने ना केवल Tesla के वादों को पूरा करने में असफलता पाई, बल्कि कंपनी की प्रतिष्ठा को भी झटका दिया है। आइए जानते हैं कि आखिर किस तरह से Cybertruck उस तरह से परफॉर्म नहीं कर पाई, जिस तरह से कंपनी चाहती थी?

Tesla Cybertruck की बिक्री में गिरावट

Tesla आमतौर पर अपने मॉडल्स की बिक्री के आंकड़े सार्वजनिक रूप से नहीं बताती है, लेकिन कंपनी के जरिए जारी किए गए आंकड़ों के मुताबिक, दूसरी तिमाही (अप्रैल-जून 2025) में Tesla की कुल ग्लोबल डिलीवरी में 13.5% की गिरावट आई है, जो अब तक की सबसे बड़ी तिमाही गिरावट मानी जा रही है।

Cybertruck की बिक्री को Tesla की दूसरे मॉडल्स की कैटेगरी में छिपा देती है, जिससे Model S, Model X, और Cybertruck शामिल होते हैं। इस कैटेगरी की बिक्री 21,500 से घटकर सिर्फ 10,400 यूनिट रह गई है, यानी करीब 52% की गिरावट, जो सीधे तौर पर एक क्लियर फेलियर को दिखाता है।

Cybertruck के फ्लॉप होने के पीछे के कारण

Cybertruck की कीमत लगभग $80,000 से $100,000 (68.40 लाख से 85.50 लाख रुपये) के बीच है, जो इसे आम खरीदारों की पहुंच से बाहर कर देती है। जल्द ही कई बाजारों में इलेक्ट्रिक व्हीकल्स पर मिलने वाले टैक्स बेनेफिट्स खत्म हो सकते हैं, जिससे इसकी लागत और भी बढ़ जाएगी। इसका डिजाइन काफी अनोखा है, जिसकी वजह से इसके डिजाइन को काफी आलोचना मिली है और आम उपभोक्ता इसे प्रैक्टिकल नहीं मानते है। Elon Musk ने शुरुआत में 500 मील की रेंज का दावा किया गया है, लेकिन वास्तविकता में यह केवल लगभग 200 मील ही दे पा रही है। Cybertruck को कई बार वापस बुलाया गया, जिनमें एक मामला ऐसा भी था जहां चलते ट्रक से स्टील पैनल गिर गया।

क्या Cybertruck Tesla को डुबो देगा?

Tesla की बाकी कारें जैसे Model 3 और Model Y अभी भी बाजार में अच्छा कर रही हैं, लेकिन उनकी तरह Cybertruck की बिक्री नहीं हो रही है। Tesla को अब Rivian, Ford, और GM जैसी कार निर्माता कंपनियों से भी कड़ी चुनौती मिल रही है। इसके साथ ही चीन की कंपनी BYD तेजी से Tesla से आगे निकल रही है। भले ही Tesla के स्टॉक्स लंबे समय में अच्छा प्रदर्शन करते रहे हों, लेकिन अगर प्रोडक्ट्स की गुणवत्ता और विश्वसनीयता में गिरावट जारी रही, तो निवेशकों का भरोसा भी डगमगा सकता है।

महिंद्रा की ये दमदार एसयूवी ऑस्ट्रेलिया में हुई लॉन्च, पावरफुल इंजन और शानदार फीचर्स से है लैस

परिवहन विशेष न्यूज

महिंद्रा ने अपनी सब-4 मीटर एसयूवी Mahindra XUV 3XO को ऑस्ट्रेलिया में लॉन्च किया है। यह ऑस्ट्रेलिया में लॉन्च होने वाली कंपनी की चौथी गाड़ी है। XUV 3XO में 1.2L mStallion टर्बो पेट्रोल इंजन दिया गया है जो 110 hp की पावर जनरेट करता है। इसमें 10.25-इंच HD टचस्क्रीन डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर और ADAS जैसे फीचर्स हैं। साथ ही और भी कई बेहतरीन फीचर्स से लैस है।

नई दिल्ली। महिंद्रा ने अपनी सब-4 मीटर SUV Mahindra XUV 3XO को अब ऑस्ट्रेलिया में भी लॉन्च कर दिया है। ऑस्ट्रेलिया में लॉन्च होने वाली यह कंपनी की चौथी गाड़ी है। इससे पहले Mahindra Scorpio, XUV700 और S11 4X4 Pikup लॉन्च किया जा चुका है, जिन्हें काफी अच्छा रिस्पॉन्स मिला है। आइए XUV 3XO के बारे में विस्तार में जानते हैं कि इसे ऑस्ट्रेलिया में किन फीचर्स के साथ लॉन्च किया गया है?

Mahindra XUV 3XO के ऑस्ट्रेलियन वैरिएंट्स और कीमतें

AX5L : AUD 23,490 (लगभग 13.18 लाख रुपये)

AX7L : AUD 26,490 (लगभग 14.87 लाख रुपये)

ये कीमतें ड्राइव-अवे प्राइस हैं, जिसमें टैक्स, रजिस्ट्रेशन और सभी ऑन-रोड खर्च शामिल हैं। यह इंट्रोडक्टरी ऑफर 31 अगस्त 2025 तक वैध है। सितंबर से कीमत में AUD 500 की बढ़ोतरी होगी।

XUV 3XO का डिजाइन

डिजाइन के मामले में Mahindra XUV 3XO का एक्सटीरियर भारतीय वर्जन जैसा ही है। इसमें C-शेप LED DRLs, बोल्ड फ्रंट ग्रिल, इनोवेटिव Infinity टेललैंप्स, AX5L में 16-इंच डायमंड कट अलॉय व्हील्स, AX7L में 17-इंच बड़े अलॉय व्हील्स दिए गए हैं। इसे ऑस्ट्रेलिया में Everest White, Galaxy Grey, Stealth Black और Tango Red के साथ लॉन्च किया गया है, लेकिन AX7L में Citrine Yellow एक्सक्लूसिव कलर के साथ पेश किया गया है।

XUV 3XO का इंटीरियर्स

यह एक फुल-लोडेड स्मार्ट SUV है। इसके पीछे की वजह इसमें मिलने वाले फीचर्स है। इसमें 10.25-इंच HD टचस्क्रीन और डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर, वायरलेस Android Auto और Apple CarPlay, ड्यूल जोन क्लाइमेट कंट्रोल, लेदर रैप्ड स्टीयरिंग और गियर नॉब, इलेक्ट्रिक फोल्डिंग ORVMs जैसे फीचर्स दिए गए हैं। वहीं, AX7L वेरिएंट को स्काईरूफ, Harman Kardon प्रीमियम साउंड सिस्टम, ब्लैक लेदरेट सीट्स और सॉफ्ट टच डैशबोर्ड, 360 डिग्री कैमरा और ब्लाइंड व्यू मॉनिटर और ADAS सिस्टम के ऑटो इमरजेंसी ब्रेकिंग, फॉरवर्ड कोलिजन अलर्ट, ट्रैफिक साइन रिकग्निशन जैसे फीचर्स से लैस किया गया है।

XUV 3XO का इंजन

ऑस्ट्रेलिया में Mahindra XUV 3XO को सिर्फ 1.2L mStallion टर्बो पेट्रोल इंजन के साथ पेश किया गया है। यह इंजन 110 hp की पावर और 200 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसके इंजन को साथ में 6-स्पीड टॉर्क कन्वर्टर ऑटोमैटिक गियरबॉक्स के साथ जोड़ा गया है। XUV 3XO का मुकाबला ऑस्ट्रेलिया में Chery Tiggo 4, Mazda CX-3, MG ZS, Kia Stonic और Hyundai Venue जैसी कॉम्पैक्ट SUVs से होगा।

टाटा हैरियर ईवी ने मचाया धमाल, सिर्फ 24 घंटे में हुई 10,000 से ज्यादा बुकिंग

टाटा मोटर्स ने हाल ही में इलेक्ट्रिक व्हीकल Tata Harrier EV को लॉन्च किया जिसकी बुकिंग 2 जुलाई से शुरू हुई। इस इलेक्ट्रिक कार को 24 घंटे में 10000 से ज्यादा बुकिंग मिलीं। Harrier EV दो बैटरी विकल्पों के साथ आती है जो 65 kWh और 75 kWh है। इसमें कई बेहतरीन फीचर्स दिए गए हैं। इसमें कई एडवांस सेफ्टी फीचर्स भी मिलते हैं।

नई दिल्ली। टाटा मोटर्स ने हाल ही में इलेक्ट्रिक व्हीकल Tata Harrier EV को लॉन्च किया है। इसकी बुकिंग 2 जुलाई से शुरू हुई थी। टाटा की इस इलेक्ट्रिक कार की महज 24 घंटे में 10,000 से ऊपर पहुंच गई। इस सेगमेंट में यह दूसरी सबसे बड़ी बुकिंग रिकॉर्ड है। इससे पहले इसी साल फरवरी में Mahindra XEV 9e को लॉन्च के दिन 16,900 बुकिंग्स मिली थीं। इसकी बुकिंग के बाद डिलीवरी जुलाई 2025 से शुरू हो जाएगी। आइए जानते हैं कि हैरियर ईवी को किन फीचर्स के साथ पेश किया जाता है?

Harrier EV के स्पेसिफिकेशन्स

हैरियर ईवी को दो बैटरी ऑप्शन के साथ पेश किया जाता है, जो 65 kWh और 75 kWh है। इसका 65 kWh बैटरी पैक फुल चार्ज होने के बाद MIDC रेंज 538 किमी है। इसके 75 kWh बैटरी पैक के MIDC रेंज 627 किमी है। Harrier EV का टॉप वैरिएंट QWD में आता है, जिसमें बड़ा 75 kWh बैटरी पैक इस्तेमाल किया गया है।

इसके RWD वैरिएंट्स में 238 PS की पावर और 315 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसका QWD ड्यूल मोटर वैरिएंट में फ्रंट मोटर से 158 PS और रियर मोटर से 238 PS की पावर के साथ ही 504 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। RWD में Eco, City और Sport ड्राइव मोड्स, जबकि QWD में बाकि मोड्स के साथ ही एक Boost मोड भी मिलता है।

Harrier EV के फीचर्स

Tata Harrier EV में कई बेहतरीन फीचर्स दिए गए हैं। इसमें ड्यूल टोन इंटीरियर दिया गया है। इसमें पैनोरमिक सनरूफ, 36.9 सेमी QLED इंफोटेनमेंट सिस्टम, ड्यूल जोन टेंपरेचर मोड्स, एंबिएंट लाइट्स, ऑटो पार्क सिस्टम, की-लैस एंट्री, फोन एक्सेस एंट्री, 540 डिग्री सराउंड व्यू सिस्टम, E-iRVM, जेबीएल ऑडियो सिस्टम, एंड्राइड ऑटो, कार प्ले, छह टैरेन मोड्स नॉर्मल, मड, रॉक क्रॉल, सैंड, स्नो/ग्रास और कस्टम मोड्स, 22 सेफ्टी फीचर्स के साथ Level-2 ADAS, OTA, इन कार पेमेंट, रेंज पॉलिगॉन, OTA अपडेट, V2L, V2V, Arcade में 25 से ज्यादा एप, चार साल कनेक्टिड कार फीचर्स, फ्रंट वेंटिलेटिड सीट्स, पावर बॉस मोड, फ्रंट पावर्ड सीट्स, 502 से 999 लीटर बूट स्पेस जैसे कई बेहतरीन सुविधाएं दी गई हैं।

Harrier EV की कीमत

भारतीय बाजार में Tata Harrier EV को 21.49 लाख रुपये से लेकर 30.23 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत के बीच ऑफर किया जाता है।

VinFast VF6 और VF7 की बुकिंग 15 जुलाई से शुरू, भारत में 32 डीलरशिप के साथ करेगी एंट्री

वियतनाम की इलेक्ट्रिक वाहन निर्माता VinFast भारतीय बाजार में प्रवेश करने जा रही है। कंपनी 15 जुलाई 2025 से VF6 और VF7 इलेक्ट्रिक SUVs की प्री-बुकिंग शुरू करेगी। VinFast की शुरुआत 32 डीलरशिप के साथ होगी जो 27 शहरों में फैली होंगी। कंपनी Global Assure के साथ 24x7 रोडसाइड असिस्टेंस और BatX Energies के साथ बैटरी रीसाइक्लिंग पर भी काम करेगी। VF6 Hyundai Creta Electric को टक्कर देगी।

नई दिल्ली। वियतनाम की इलेक्ट्रिक वाहन निर्माता कंपनी VinFast अब भारतीय बाजार में अपने कमद जामने जा रही है। कंपनी की तरफ से धोषणा की गई है कि 15 जुलाई 2025 से VinFast VF6 और VF7 इलेक्ट्रिक SUVs की प्री-बुकिंग शुरू की जाएगी। इन दो गाड़ियों की प्री-बुकिंग शुरू करने के साथ ही भारत में एंट्री करेगी। कंपनी की शुरुआत 32 डीलरशिप के मजबूत नेटवर्क के साथ होने जा रही है।

भारत में VinFast का डीलर नेटवर्क

VinFast की पहली डीलरशिप देश के 27 बड़े शहरों में खोली जाएंगी, जिनमें दिल्ली, गुरुग्राम, नोएडा, चेन्नई, बेंगलुरु, हैदराबाद, पुणे, जयपुर, अहमदाबाद, कोलकाता, कोचीन, भुवनेश्वर, तिरुवनंतपुरम, चंडीगढ़, लखनऊ, कोयंबटूर, सूरत, कालीकट, विशाखापट्टनम, विजयवाड़ा, शिमला, आगरा, झाँसी, ग्वालियर, वापी, बड़ौदा और गोवा शामिल हैं। कंपनी का लक्ष्य 2025 के अंत तक अपनी डीलरशिप को 35 तक बढ़ाना है।

VinFast भारत में सिर्फ गाड़ियां बेचने तक सीमित नहीं रहना चाहती। कंपनी Global Assure के साथ मिलकर 24x7 रोडसाइड असिस्टेंस, कॉल सेंटर सपोर्ट और मोबाइल सर्विस उपलब्ध कराएगी। वहीं, myTVS और RoadGrid के साथ साझेदारी कर पैन-इंडिया EV चार्जिंग नेटवर्क और सर्विस सपोर्ट को मजबूत किया जा रहा है। बैटरी के रीसाइक्लिंग और रीपर्पजिंग के लिए कंपनी BatX Energies के साथ भी काम करेगी।

कैसी हैं VinFast VF6 और VF7

भारत में VinFast VF6 और VF7 का असेंबली काम तमिलनाडु के तूतीकोरिन में बनने वाले नए प्लांट में होगा। दोनों मॉडल Vietnam से CKD यूनिट्स के रूप में आएंगे और भारत में असेंबल किए जाएंगे। VF6 को कंपनी ज्यादा मास मार्केट सेगमेंट के लिए उतारेगी, जो Hyundai Creta Electric, Tata Curvv EV और Mahindra BE 6 जैसी गाड़ियों को टक्कर देगी। दूसरी ओर, VF7 थोड़ा प्रीमियम सेगमेंट में रहेगा और Mahindra XEV 9e और BYD Atto 3 जैसे मॉडल्स से मुकाबला करेगा।

मेड इन इंडिया मारुति सुजुकी ई विटारा जापान में हुई पेश

भारत की सबसे बड़ी कार निर्माता कंपनी मारुति सुजुकी अब इलेक्ट्रिक वाहनों में कदम रख रही है। मारुति सुजुकी की पहली इलेक्ट्रिक SUV eVitara भारत में बन रही है और इसे पूरी दुनिया में एक्सपोर्ट किया जाएगा। कंपनी ने इसे जापान में पेश किया है। यह eVX Concept पर आधारित है जिसका डिजाइन आकर्षक है। यह इलेक्ट्रिक कार गुजरात में बनेगी और भारत से दूसरे देशों को भेजी जाएगी।

नई दिल्ली। भारत की सबसे बड़ी कार निर्माता कंपनी Maruti Suzuki अब कंपनी इलेक्ट्रिक वाहनों की दुनियां में कदम रखने जा रही है। Maruti Suzuki की पहली इलेक्ट्रिक SUV, eVitara को पूरी तरह से भारत में बनाया जा रहा है और इसे पूरी दुनिया में एक्सपोर्ट किया जाएगा। इसके साथ ही कंपनी ने देश के कई शोरूम में इसे शोकेस भी करना शुरू कर दिया है। इसे अब जापान में पेश किया गया है। आइए जानते हैं कि भारत में तैयार की गई और उसके बाद जापान में पेश हुई Maruti Suzuki eVitara में क्या कुछ दिया गया है?

जापान में Maruti Suzuki eVitara हुई पेश

हाल ही में Maruti Suzuki eVitara को जापान के हमामात्सु स्टेशन के शिंकानसेन टिकट गेट पर पेश किया गया है। Suzuki जापान ने अपने आधिकारिक X अकाउंट पर इसकी फोटो को शेयर किया गया है। eVitara असल में eVX Concept पर बेस्ड इलेक्ट्रिक SUV है, जो कई बड़े इंटरनेशनल मार्केट्स में लॉन्च की जाएगी। eVitara का डिजाइन काफी स्टाइलिश और मॉडर्न है। इसका लुक इसे बाकी इलेक्ट्रिक SUVs से अलग बनाता है।

भारत से दूसरे देशों की जाएगी एक्सपोर्ट

Maruti Suzuki की यह पहली इलेक्ट्रिक कार पूरी तरह भारत के गुजरात प्लांट में बनेगी। यहीं से इसे भारत के पोर्ट्स के जरिए दुनिया भर में भेजा जाएगा। इससे भारत की मैन्युफैक्चरिंग और इकोनॉमी को बड़ा फायदा मिलेगा। Suzuki और Toyota की साझेदारी के तहत इसी eVitara पर आधारित एक और मॉडल Urban Cruiser EV भी बनाया जाएगा, जो Maruti Suzuki के गुजरात प्लांट में ही बनेगा।

Maruti Suzuki eVitara के फीचर्स

Maruti Suzuki eVitara की लंबाई 4,275 mm, चौड़ाई 1,800 mm और ऊंचाई 1,640 mm है। इसका व्हीलबेस 2,700 mm और ग्राउंड क्लीयरेंस 180 mm है। eVitara दो बैटरी ऑप्शन्स के साथ आएगी, जो 49 kWh और 61 kWh है। इसका 49 kWh बैटरी वाला वेरिएंट 142 bhp पावर और 192.5 Nm टॉर्क जनरेट करेगा, जबकि 61 kWh बैटरी वाला वेरिएंट 172 bhp की पावर जनरेट करेगा। All-Wheel Drive (AWD) वेरिएंट में ड्यूल मोटर सेटअप मिलेगा, जो कुल 184 bhp और 300 Nm टॉर्क जनरेट करेगा।

प्रेरणादायक भारतीय पर्यावरणविदों ने ग्रीनर फ्यूचर को आकार दिया

विजय गर्ग
सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद, गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

प्रतिष्ठित सूची में ऐसे व्यक्ति हैं जिन्होंने पर्यावरण संरक्षण के कारण के लिए असाधारण समर्पण और प्रतिबद्धता दिखाई है।

हमारा ग्रह, धरती माता, जीने के लिए एक अद्भुत जगह है, लेकिन स्वस्थ रहने के लिए इसे हमारी मदद की आवश्यकता है। हर साल प्रदूषण और वनों की कटाई जैसी समस्याओं से लड़ने के लिए दस लाख से अधिक लोग पर्यावरण दिवस में हिस्सा लेते हैं। कूड़े को उठाकर पेड़ लगाने जैसी चीजें करके, हम अपनी दुनिया को जीने के लिए एक खुशहाल और स्वस्थ जगह बना सकते हैं।

यह सूची उन भारतीय पर्यावरणविदों को हाइलाइट करती है जो हमारी दुनिया को स्वच्छ और बेहतर बनाने के लिए कड़ी मेहनत कर रहे हैं। व्यापारिक नेताओं से लेकर कारणों से लड़ने वाले लोगों तक, इन पर्यावरणविदों ने दिखाया है, वे वास्तव में हमारे पर्यावरण और हमारे ग्रह की परवाह करते हैं।

1.।वायरल देसाई,

वायरल देसाई एक प्रसिद्ध उद्योगपति हैं, जिन्होंने पर्यावरण के प्रति अपने प्यार और सभी के लिए एक हरियाली भविष्य बनाने के उद्देश्य से कई प्रयासों के कारण ग्रीनमैन का सोब्रिकेट अर्जित किया है। उन्होंने 6.50 लाख से अधिक पेड़ों के रोपण और वितरण का समर्थन किया है और कई शहरी जंगलों का विकास किया है, लेकिन उनकी सबसे बड़ी सफलता लाखों लोगों को पर्यावरण योद्धा बनने के लिए प्रेरित करने में निहित है। उनके उल्लेखनीय योगदान ने उन्हें राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण पुरस्कार और विभिन्न अन्य राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रशंसा के छह बार प्राप्तकर्ता बना दिया है।

2.। विशाल एस। बुधिया, स्टीमहाउस इंडिया के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक

इसके अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक के नेतृत्व में विशाल एस। बुधिया, स्टीमहाउस इंडिया अभिनव और पर्यावरण के अनुकूल प्रौद्योगिकियों के चैंपियन में अग्रणी के रूप में उभरा है। स्टीमहाउस पहली भारतीय कंपनी है जो केंद्रीकृत भाप आपूर्ति के लिए समर्पित है, जिससे औद्योगिक इकाइयों को ऊर्जा-कुशल और टिकाऊ समाधान अपनाने में मदद मिलती है और उत्सर्जन में काफी कमी आती है। स्टीमहाउस ने गुजरात के प्रमुख औद्योगिक समूहों में उपस्थिति स्थापित की है और जलवायु परिवर्तन के खिलाफ लड़ाई में प्रभावशाली योगदान दे रहा है। यह औद्योगिक संचालन में हरित प्रथाओं को एकीकृत करने, एक स्थायी भविष्य को बढ़ावा देने के लिए एक मॉडल के रूप में कार्य करता है।

3।सद्गुरु, ईशा फाउंडेशन के संस्थापक

सद्गुरु ने ईशा फाउंडेशन की शुरुआत 1992 में कोयंबटूर, भारत में एक जगह की थी, जहां लोग आध्यात्मिकता और योग के बारे में जान सकते हैं। वह 1982 से योग सिखा रहा है। उनके नेतृत्व में, नींव पूरी दुनिया में कॉन्शियस प्लैनेट नामक

परियोजनाएं चलाती है। इन परियोजनाओं का उद्देश्य लोगों को ग्रह और एक दूसरे के बारे में अधिक जागरूक और देखभाल करना है। वे पर्यावरण, ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा, स्वास्थ्य और समुदायों की मदद करने जैसी बड़ी चीजों पर काम करते हैं।

तीन दशकों के दौरान, उनकी अभिनव पर्यावरण और सामाजिक पहल ने संयुक्त राष्ट्र, अंतर्राष्ट्रीय संघ फॉर कंजर्वेशन ऑफ नेचर, और विश्व आर्थिक मंच जैसे प्रतिष्ठित संगठनों से अंतर्राष्ट्रीय प्रशंसा प्राप्त की है। ये पहल व्यक्तियों को सशक्त बनाने और विश्व स्तर पर समुदायों को पुनर्जीवित करने के लिए सफल मॉडल के रूप में काम करती हैं।

4।अशोक ठाकुर, EARTHDAY.ORG के भारत सलाहकार और अनुकूलित ऊर्जा समाधान यूरोप के निदेशक

अशोक ठाकुर, EARTHDAY.ORG के भारत सलाहकार और अनुकूलित ऊर्जा समाधान यूरोप में निदेशक, अक्षय ऊर्जा, रसद, फार्मास्यूटिकल्स, और अधिक सहित विभिन्न क्षेत्रों में 15 से अधिक वर्षों का अनुभव समेटे हुए हैं। मीडिया और घटनाओं के उद्योग में प्रसिद्ध, विशेष रूप से जर्मन मीडिया में, वह नए उत्पाद विकास और बाजार प्रविष्टि में उत्कृष्टता प्राप्त करता है। पर्यावरण वकालत के बारे में भावुक, वह सक्रिय रूप से वृक्षारोपण ड्राइव में भाग लेता है और पृथ्वी दिवस नेटवर्क की सलाह देते हुए नवीकरणीय ऊर्जा अपनाने को बढ़ावा देता है। वह प्रकृति के प्रति स्वस्थ आदतों की भी वकालत कर रहे हैं।

5.।मेनका गांधी, लोकसभा की पूर्व सदस्य

मेनका गांधी वास्तव में जानवरों और प्रकृति की परवाह करती हैं। उन्होंने 1994 में पीपल फॉर एनिमल्स की शुरुआत की, जो भारत में सबसे बड़ा पशु संरक्षण समूह है। गांधी को लगता है कि जानवरों के लिए अच्छा होना और उन्हें चोट नहीं पहुंचाना सुपर महत्वपूर्ण है। यहां तक कि उनका अपना टीवी शो ह्हेड्स एंड टेल्स्र भी था और उन्होंने उसी नाम से एक किताब लिखी थी। अब, वह इंटरनेशनल एनर्जी ग्लोब फाउंडेशन के लिए सर्वश्रेष्ठ पर्यावरणीय विचारों को चुनने का प्रभारी है।

6। जयमल अमीन, रोहन अमीन, और रौनक पोरेचा - लुबी इंडस्ट्रीज एलएलपी के निदेशक

लुबी ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज, श्री के नेतृत्व में। लुबी इंडस्ट्रीज एलएलपी के निदेशक रौनक पोरेचा ने गुजरात के शिनवाडा में 4 मेगावाट के सोलर पावर प्लांट का उद्घाटन किया। यह दूरदर्शी परियोजना स्थिरता के लिए लुबी की प्रतिबद्धता को दर्शाती है, जिसमें 21% दक्षता के साथ 7270 मोनो-पीआरसी बाइफेशियल सौर मॉड्यूल हैं। प्रति दिन 22,000 इकाइयों का उत्पादन करते हुए, इसका उद्देश्य लुबी विनिर्माण संयंत्रों को बिजली देना है, जो कार्बन तटस्थता और एक हरियाली भविष्य के लिए समूह की प्रतिज्ञा के साथ संरेखित है।

7.। सुनीता नारायण, भारतीय पर्यावरणविद् और राजनीतिक कार्यकर्ता

सुनीता नारायण 1982 से विज्ञान और पर्यावरण केंद्र में हैं, अब इसके बॉस के रूप में। वह प्रकृति के लिए एक बड़ी आवाज है और 2005 में एक शीर्ष भारतीय पुरस्कार मिला।

उन्होंने एक जगह से गायब होने के बाद बाघों को बचाने के लिए, एक समूह का नेतृत्व किया जिसका नाम सरिस्का है। उन्होंने जलवायु परिवर्तन और नदियों की सफाई के साथ सरकार की भी मदद की है।

उन्होंने अतीत में महत्वपूर्ण रिपोर्ट लिखी, भारत के पर्यावरण के बारे में बात की और गांवों को हरियाली कैसे बनाई जाए। 2012 में उनकी नवीनतम रिपोर्ट भारतीय शहरों में पानी और प्रदूषण के बारे में थी।

8.।राजेंद्र सिंह, भारतीय संरक्षणवादी और पर्यावरणविद्

राजेंद्र सिंह भारत के राजस्थान के एक प्रसिद्ध पर्यावरणविद् हैं, जिन्हें ्रभारत का वाटरमैन्र कहा जाता है समुदायों को बचाने और पानी का बेहतर उपयोग करने में मदद करने के लिए उन्हें 2001 में एक बड़ा पुरस्कार मिला।

9।नित्या एनसेफ के निदेशक ईशान शाह

ईशान शाह एक जल विशेषज्ञ और सूरत स्थित नित्या एनसेफ के निदेशक हैं, जो अपशिष्ट जल रीसाइक्लिंग और अन्य पर्यावरणीय सेवाओं की अग्रणी प्रदाता हैं। उन्होंने पर्यावरण को प्राथमिकता देते हुए स्थायी विकास को बढ़ावा देने की दृष्टि से 2014 में कंपनी की स्थापना की। इन वर्षों में, नित्या एनसेफ ने दर्जनों परियोजनाओं को सफलतापूर्वक निष्पादित किया है, जिससे पर्यावरण पर महत्वपूर्ण सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। श्री शाह निरंतर सीखने में विश्वास रखते हैं और विभिन्न मंचों पर बोलकर अपने ज्ञान को दूसरों के साथ साझा करते हैं।

10।मेधा पाटकर, राजनेता और कार्यकर्ता

1954 में मुंबई में पैदा हुई मेधा पाटकर प्रकृति की रक्षा और लोगों के अधिकारों की लड़ाई के लिए मशहूर हैं। वह ज्यादातर नर्मदा बचाओ आंदोलन में अपने काम के लिए और पंजाब में सतलज नदी को बचाने के लिए एक अभियान शुरू करने के लिए जानी जाती हैं। पाटकर को लगता है कि नदियों हमारी माताओं की तरह हैं और उन्हें सुरक्षित रखा जाना चाहिए। वह जीने और काम करने के अधिकार जैसे बुनियादी अधिकारों के लिए लड़ती है, जिसकी गारंटी भारत के कानूनों से मिलती है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

कहानी: दोस्त

विजय गर्ग

मरीज के इतिहास को जानने के बाद डा. कृपा ने जैसे ही मरीज का नाम पढ़ा तो चौंक गईं. 'जयंत शुक्ला,' नाम तो यही लिखा था. कमरे में प्रवेश करते ही डा. कृपा अपना कोट उतार कर कुरसी पर धड़ाम से बैठ गईं. आज उन्होंने एक बहुत ही मुश्किल आपरेशन निबटाया था.

शाम को जब वे अस्पताल में अपने कक्ष में गईं, तो सिर्फ २ मरीजों को इंतजार करते हुए पाया. आज उन्होंने कोई अपौइंटमैंट भी नहीं दिया था. इन २ मरीजों से निबटने के बाद वे जल्द से जल्द घर लौटना चाहती थीं. उन्हें आराम किए हुए एक अरसा हो गया था. वे अपना बैग उठा कर निकलने ही वाली थीं कि अपने नाम की घोषणा सुनी, "डा. कृपा, कृपया आपरेशन थिएटर की ओर प्रस्थान करें."

माइक पर अपने नाम की घोषणा सुन कर उन्हें पता चल गया कि जरूर कोई इमरजैंसी केस आ गया होगा.

मरीज को अंदर पहुंचाया जा चुका था. बाहर मरीज की मां और पत्नी बैठी थीं.

मरीज के इतिहास को जानने के बाद डा. कृपा ने जैसे ही मरीज का नाम पढ़ा तो चौंक गईं. 'जयंत शुक्ला,' नाम तो यही लिखा था. फिर उन्होंने अपने मन को समझाया कि नहीं, यह वह जयंत नहीं हो सकता.

लेकिन मरीज को करीब से देखने पर उन्हें विश्वास हो गया कि यह वही जयंत है, उन का सहपाठी. उन्होंने नहीं चाहा था कि जिंदगी में कभी इस व्यक्ति से मुलाकात हो. पर इस वक्त वे एक डाक्टर थीं और सामने वाला एक मरीज. अस्पताल में जब मरीज को लाया गया था तो ड्यूटी पर मौजूद डाक्टरों ने मरीज की प्रारंभिक जांच कर ली थी. जब उन्हें पता चला कि मरीज को दिल का जबरदस्त दौरा पड़ा है तो उन्होंने दौरे का कारण जानने के लिए एंजियोग्राफी की थी, जिस से पता चला कि मरीज की मुख्य रक्तनलिका में बहुत ज्यादा अवरोध है. मरीज का आपरेशन तुरंत होना बहुत जरूरी था. जब मरीज की पत्नी व मां को इस बात की सूचना दी गई तो पहले तो वे बेहद घबरा गईं, फिर मरीज के सहकर्मियों की सलाह पर वे मान गईं. सभी चाहते थे कि उस का आपरेशन डा. कृपा ही करें. इत्तफाक से डा. कृपा अपने कक्ष में ही मौजूद थीं.

मरीज की बीवी से जरूरी कागजों पर हस्ताक्षर लिए गए. करीब 5 घंटे लगे आपरेशन में. आपरेशन सफल रहा. हाथ धो कर जब डा. कृपा आपरेशन थिएटर से बाहर निकलीं तो सभी उन के पास भागेभागे आए.

डा. कृपा ने सब को आश्वासन दिया कि आपरेशन सफल रहा और मरीज अब खतरे से बाहर है. अपने कमरे में पहुंच कर डा. कृपा ने कोट उतार कर एक ओर फेंक दिया और धड़ाम से कुरसी पर बैठ गईं.

आंखें बंद कर आरामकुरसी पर बैठते ही उन्हें अपनी आंखों के सामने अपना बीता कल नजर आने लगा. जिंदगी के पन्ने पलटते चले गए.

कृपा शक्लसूरत में अपने पिता पर गई थी

उन्हें अपना बचपन याद आने लगा… जयपुर में एक मध्यवर्गीय परिवार में वे पलीबढ़ी थीं. उन का एक बड़ा भाई था, जो मांबाप की आंखों का तारा था. कृपा की एक जुड़वां बहन थी, जिस का नाम रूपा था. नाम के अनुरूप रूपा गोरी और सुंदर थी, अपनी मां की तरह. कृपा शक्लसूरत में अपने पिता पर गई थी. कृपा का रंग अपने पिता की तरह काला था. दोनों बहनों की शक्लसूरत में मीनआसमान का फर्क था. बचपन में जब उन की मां दोनों का हाथ थामे कहीं भी जातीं, तो कृपा की तरफ उंगली दिखा कर सब यही पूछते कि यह कौन है?

उन की मां के मुंह से यह सुन कर कि दोनों उन की जुड़वां बेटियां हैं, लोग आश्चर्य में पड़ जाते. लोग जब हंसते हुए रूपा को गोद में उठा कर प्यार करते तो उस का बालमन बहुत दुखी होता. तब कृपा सब का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिए रोती, मचलती.

तब उसे पता नहीं था कि मानवमन तो सुंदरता का पुजारी होता है. तब वह समझ नहीं पाती थी कि लोग क्यों उस के बजाय उस की बहन को ही प्यार करते हैं. एक बार तो उसे इस तरह मचलते देख कर किसी ने उस की मां से कह भी दिया था कि लीला, तुम्हारी इस बेटी में न तो रूप है न गुण.

धीरेधीरे कृपा को समझ में आने लगा अपने और रूपा के बीच का यह फर्क.

मां कृपा को समझातीं कि बेटी, समझदारी का मानदंड रंगरूप नहीं होता. माइकल जैकसन काले थे, पर पूरी दुनिया के चहेते थे. हमारी बेटी तो बहुत होशियार है. पढ़लिख कर उसे मांबाप का नाम रोशन करना है. बस, मां की इसी बात को कृपा ने गांठ बांध लिया. मन लगा कर पढ़ाई करती और कक्षा में हमेशा अव्वल आती.

कृपा जब थोड़ी और बड़ी हुई तो उस ने लड़कों और लड़कियों को एकदूसरे के प्रति आकर्षित होते देखा. उस ने बस, अपने मन में डाक्टर बनने का सपना संजो लिया था. वह जानती थी कि कोई उस की ओर आकर्षित नहीं होगा. यदि मनुष्य अपनी कमजोर रग को पहचान ले और उसे अनदेखा कर के उस क्षेत्र में आगे बढ़े जहां उसे महारत हासिल हो, तो उस की कमजोर रग कभी उस की दुखती रग नहीं बन सकती. इसीलिए जब जयंत ने उस की ओर हाथ बढ़ाया तो उस ने उसे ठुकरा दिया.

कृपा का ध्यान सिर्फ अपने लक्ष्य की ओर था. एक दिन उस ने जयंत को अपने दोस्तों से यह कहते हुए सुना कि मैं कृपा से इसलिए दोस्ती करना चाहता हूं, क्योंकि वह बहुत ईमानदार लड़की है, कितने गुण हैं उस में, हमेशा हर कक्षा में अव्वल आती है, फिर भी जमीन से जुड़ी है. उस दिन के बाद कृपा का बरताव जयंत के प्रति नरम होता गया.

१२वीं कक्षा की परीक्षा में अच्छे नंबर आना बेहद जरूरी था, क्योंकि उन्हीं के आधार पर मैडिकल में दाखिला मिल सकता था. सभी को कृपा से बहुत उम्मीदें थीं.

जयंत बेझिझक कृपा से पढ़ाई में मदद लेने लगा. वह एक मध्यवर्गीय परिवार से संबंध रखता था. खाली समय में ट्यूशन पढ़ाता था ताकि मैडिकल में दाखिला मिलने पर उसे पैसों की दिक्कत न हो.

कृपा लाइब्रेरी में बैठ कर किसी एक विषय पर अलगअलग लेखकों द्वारा लिखित किताबें लेती और नोट्स तैयार करती थी.

पहली बार जब उस ने अपने नोट्स की एक प्रति जयंत को दी तो वह कृतार्थ हो गया. कहने लगा कि तुम ने मेरी जो मदद की है, उसे जिंदगी भर नहीं भूल पाऊंगा.

अब जब भी कृपा नोट्स तैयार करती तो उस की एक प्रति जयंत को जरूर देती.

एक दिन जयंत ने कृपा के सामने प्रस्ताव रखा कि यदि हमारा साथ जीवन भर का हो जाए तो कैसा हो?

कृपा ने मीठी झिड़की दी कि अभी तुम पढ़ाई पर ध्यान दो, मजनू. ये सब तो बहुत बाद की बातें हैं.

कृपा ने झिड़क तो दिया पर मन ही मन वह सपने बुनने लगी थी.

जयंत स्कूल से सीधे ट्यूशन पढ़ाने जाता था, इसलिए कृपा रोज जयंत से मिल कर थोड़ी देर बातें करती, फिर जयंत से चाबी ले कर नोट्स उस के कमरे में छोड़ आती. चाबी वहीं छोड़ आती, क्योंकि जयंत का रूममेट तब तक आ जाता था.

एक दिन लाइब्रेरी से बाहर आते समय कृपा ने हमेशा की तरह रुक कर जयंत से बातें कीं. जयंत अपने दोस्तों के साथ खड़ा था, पर जातेजाते वह जयंत से चाबी लेना भूल गई. थोड़ी दूर जाने के बाद अचानक जब उसे याद आया तो वापस आने लगी. वह जयंत के पास पहुंचने ही वाली थी कि अपना नाम सुन कर अचानक रुक गई.

जयंत का दोस्त उस से कह रहा था कि तुम ने उस कुरूपा (कृपा) को अच्छा पटाया. तुम्हारा काम तो आसान हो गया, यार. इस साथी को जीवनसाथी बनाने का इरादा है क्या?

जयंत ने कहा कि दिमाग खराब नहीं हुआ है मेरा. उसे इसी गलतफहमी में रहने दो. बनेबनाए नोट्स मिलते रहें तो मुझे रोजरोज पढ़ाई करने की जरूरत ही नहीं पड़ेगी. परीक्षा से कुछ दिन पहले दिनरात एक कर देता हूं. इस बार देखना, उसी के नोट्स पढ़ कर उस से भी अच्छे नंबर लाऊंगा.

जयंत के मुंह से ये सब बातें सुन कर कृपा कांप गई. उस के पैरों तले से जमीन खिसक गई. इतना बड़ा धोखा? वह उलटे पांव लौट गई. भाग कर घर पहुंची तो इतनी देर से दबी रुलाई फूट पड़ी. मां ने उसे चुप कराया. सिसकियों के बीच कृपा ने मां को किसी तरह पूरी बात बताई.

कुछ देर के लिए तो मां भी हैरान रह गईं, पर वे अनुभवी थीं. अतः उन्होंने कृपा को समझाया कि बेटे, अगर कोई यह सोचता है कि किसी सीधेसादे इनसान को धोखा दे कर अपना उल्लू सीधा किया जा सकता है, तो वह अपनेआप को धोखा देता है. नुकसान तुम्हारा नहीं, उस का हुआ है. व्यवहार बैलेंस शीट की तरह होता है, जिस में जमाघटा बराबर होगा ही. जयंत को अपने किए की सजा जरूर मिलेगी. तुम्हारी मेहनत तुम्हारे साथ है, इसलिए आज तुम चाबी लेना भूल गईं. पढ़ाई में तुम्हारी बराबरी इन में से कोई नहीं कर सकता. प्रकृति ने जिसे जो बनाया उसे मान कर उस पर खुश हो कर फिर से सब कुछ भूल कर पढ़ाई में जुट जाओ.

मां की बातों से कृपा को काफी राहत मिली, पर यह सब भुला पाना इतना आसान नहीं था.

हिम्मत जुटा कर दूसरे दिन हमेशा की तरह कृपा ने जयंत से चाबी ली, पर नोट्स रखने के लिए नहीं, बल्कि आज तक उस ने जो नोट्स दिए थे उन्हें निकालने के लिए. अपने सारे नोट्स ले कर चाबी यथास्थान रख कर कृपा घर की ओर चल पड़ी. २-4 दिनों में छुट्टियां शुरू होने वाली थीं, उस के बाद इम्तिहान थे. चाबी लेते समय उस ने जयंत से कह दिया था कि अब छुट्टियां शुरू होने के बाद ही उस से मिलेगी, क्योंकि उसे २-4 दिनों तक कुछ काम है. घर जाने पर उस ने मां से कह दिया कि वह छुट्टियों में मौसी के घर रह कर अपनी पढ़ाई करेगी.

जिस दिन छुट्टियां शुरू हुईं, उस दिन सुबह ही कृपा मौसी के घर की ओर प्रस्थान कर गई. जाने से पहले उस ने एक पत्र जयंत के नाम लिख कर मां को दे दिया.

छुट्टियां शुरू होने के बाद एक दिन जब जयंत ने नोट्स निकालने के लिए दराज खोली तो पाया कि वहां से नोट्स नदारद हैं. उस ने पूरे कमरे को छान मारा, पर नोट्स होते तो मिलते. तुरंत भागाभागा वह कृपा के घर पहुंचा. वहां मां ने उसे कृपा की लिखी चिट्ठी पकड़ा दी. कृपा ने लिखा था, 'जयंत, उस दिन मैं ने तुम्हारे दोस्त के साथ हुई तुम्हारी बातचीत को सुन लिया था. मेरे बारे में तुम्हारी राय जानने के बाद मुझे लगा कि मेरे नोट्स का तुम्हारी दराज में होना कोई माने नहीं रखता, इसलिए मैं ने नोट्स वापस ले लिए. मेरे परिवार वालों से मेरा पता मत पूछना, क्योंकि वे तुम्हें बताएंगे नहीं. मेरी तुम से इतनी विनती है कि जो कुछ भी तुम ने मेरे साथ किया है, उस का जिक्र किसी से न करना और न ही किसी के साथ ऐसी धोखाधड़ी करना वरना लोगों का दोस्ती पर से विश्वास उठ जाएगा. शुभ कामनाओं सहित, कृपा.'

पत्र पढ़ कर जयंत ने माथा पीट लिया. वह अपनेआप को कोसने लगा कि यह कैसी मूर्खता कर बैठा. इस तरह खुल्लमखुल्ला डींगें हांक कर उस ने अपने पैरों पर खुद कुल्हाड़ी मार ली थी. उस के पास किताबें खरीदने के लिए पैसे नहीं थे, न ही इतना वक्त था कि नोट्स तैयार करता.

इम्तिहान से एक दिन पहले कृपा वापस अपने घर आई. दोस्तों से पता चला कि इस बार जयंत परीक्षा में नहीं बैठ रहा है.

उस के बाद कृपा की जिंदगी में जो कुछ भी घटा, सब कुछ सुखद था. पूरे राज्य में अव्वल श्रेणी में उत्तीर्ण हुई थी कृपा. दूरदर्शन, अखबार वालों का तांता लग गया था उस के घर में. सभी बड़े कालेजों ने उसे खुद न्योता दे कर बुलाया था.

मुंबई के एक बड़े कालेज में उस ने दाखिला ले लिया था.

एम.बी.बी.एस. की पढ़ाई पूरी करने के बाद उस ने आगे की पढ़ाई के लिए प्रवेश परीक्षाएं दीं. यहां भी वह अव्वल आई. उस ने हृदयरोग विशेषज्ञ बनने का फैसला लिया. एम.डी. की पढ़ाई करने के बाद उस ने ३ बड़े अस्पतालों में विजिटिंग डाक्टर के रूप में काम करना शुरू किया. समय के साथ उसे काफी प्रसिद्धि मिली.

इधर उस की जुड़वां बहन की पढ़ाई में खास दिलचस्पी नहीं थी. मातापिता ने उस की शादी कर दी. उस का भाई अपनी पत्नी के साथ दिल्ली में रहता था. भाई कभी मातापिता का हालचाल तक नहीं पूछता था. बहू ने दूरी बनाए रखी थी. जब अपना ही सिक्का खोटा था तो दूसरों से क्या उम्मीद की जा सकती थी.

बेटे के इस रवैए ने मांबाप को बहुत पीड़ा पहुंचाई थी. कृपा ने निश्चय कर लिया था कि मातापिता और लोगों की सेवा में अपना जीवन बिता देगी. कृपा ने मुंबई में अपना घर खरीद लिया और मातापिता को भी अपने पास ले गई.

चर्मरोग विशेषज्ञ डा. मनीष से कृपा की अच्छी निभती थी. दोनों डाक्टरी के अलावा दूसरे विषयों पर भी बातें किया करते थे, पर कृपा ने उन से दूरी बनाए रखी. एक दिन डा. मनीष ने डा. कृपा से शादी करने की इच्छा जाहिर की, पर दूध का जला छाछ भी फूंकफूंक कर पीता है.

डा. कृपा ने दृढ़ता के साथ मना कर दिया. उस के बाद डा. मनीष की हिम्मत नहीं हुई दोबारा पूछने की. मां को जब पता चला तो मां ने कहा, "बेटे, सभी एक जैसे तो नहीं होते. क्यों न हम डा. मनीष को एक मौका दें."

डा. मनीष अपने किसी मरीज के बारे में डा. कृपा से सलाह करना चाहते थे. डा. कृपा का सेलफोन लगातार व्यस्त आ रहा था, तो उन्होंने डा. कृपा के घर फोन किया.

डा. कृपा घर पर भी नहीं थी. उस की मां ने डा. मनीष से बात की और उन्हें दूसरे दिन घर पर खाने पर बुला लिया. मां ने डा. मनीष से खुल कर बातें कीं. 4-5 साल पहले उन की शादी एक सुंदर लड़की से तय हुई थी, पर २-३ बार मिलने के बाद ही उन्हें पता चल गया कि वे उस के साथ किसी भी तरह सामंजस्य नहीं बैठा सकते. तब उन्होंने इस शादी से इनकार कर दिया था.

मां की अनुभवी आंखों ने परख लिया था कि डा. मनीष ही डा. कृपा के लिए उपयुक्त वर हैं. अब तक डा. कृपा भी घर लौट चुकी थी. सब ने एकसाथ मिल कर खाना खाया. बाद में मां के बारबार आग्रह करने पर डा. मनीष से बातचीत के लिए तैयार हो गई डा. कृपा. उस ने डा. मनीष से साफसाफ कह दिया कि उस की कुछ शर्तें हैं, जैसे मातापिता की देखभाल की जिम्मेदारी उस की है, इसलिए वह उन के घर के पास ही घर ले कर रहेंगे. वह डा. मनीष के घर वालों की जिम्मेदारी भी लेने को तैयार थी, लेकिन इमरजैंसी के दौरान वक्तबेवक्त घर से जाना पड़ सकता है, तब उस के परिवार वालों को कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए, वगैरह.

डा. मनीष ने उस की सारी शर्तें मान लीं और उन का विवाह हो गया. डा. मनीष जैसे सुलझे हुए व्यक्ति को पा कर कृपा को जिंदगी से कोई शिकायत नहीं रह गई थी. कुछ साल पहले डा. कृपा अपनेआप को कितनी कोसती थी. लेकिन अब उसे लगने लगा कि उस की जिंदगी में अब कोई अंधेरा नहीं है, बल्कि चारों तरफ उजाला ही उजाला है.

डा. कृपा धीरेधीरे वर्तमान में लौट आई. इस के बाद उस का सामना कई बार जयंत से हुआ. पहली बार होश आने पर जब जयंत ने डा. कृपा को देखा तो चौंकने की बारी उस की थी. कई बार उस ने डा. कृपा से बात करने की कोशिश की, पर डा. कृपा ने एक डाक्टर और मरीज की सीमारेखा से बाहर कोई भी बात करने से मना कर दिया. डा. कृपा सोचने लगी, आज वह डा. मनीष के साथ कितनी खुश है. जिंदगी में कटु अनुभवों के आधार पर लोगों के बारे में आम राय बना लेना कितनी गलत बात है. कुदरत ने सुख और दुख सब के हिस्से में बराबर मात्रा में दिए हैं. जरूरत है तो दुख में संयम बरतने की और सही समय का इंतजार करने की. किसी की भी जिंदगी में अंधेरा अधिक देर तक नहीं रहता है, उजाला आता ही है.

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

शादियाँ में नई सामाजिक बीमारी

विजय गर्ग

कुछ समय पहले तक शहर के अंदर मैरिज हॉल मैं शादियाँ होने की परंपरा चली परंतु वह दौर भी अब समाप्ति की ओर है।

अब शहर से दूर महंगे रिसोर्ट में शादियाँ होने लगी हैं। #शादी के 2 दिन पूर्व से ही ये रिसोर्ट बुक करा लिया जाते हैं और शादी वाला परिवार वहां शिफ्ट हो जाता है। #आगंतुक और मेहमान सीधे वहीं आते हैं और वहीं से विदा हो जाते हैं।

जिसके पास चार पहिया वाहन है वही जा पाएगा। #दोपहिया वाहन वाले नहीं जा पाएंगे। बुलाने वाला भी यही स्टेटस चाहता है, और वह निमंत्रण भी उसी श्रेणी के अनुसार देता है।

दो तीन तरह की श्रेणियां आजकल रखी जाने लगी है।

किसको सिर्फ लेडीज संगीत में बुलाना है।

किसको सिर्फ रिसेप्शन में बुलाना है।

किसको कॉकटेल पार्टी में बुलाना है।

और किस वीआईपी परिवार को इन सभी कार्यक्रमों में बुलाना है।

इस निमंत्रण में अपनापन की भावना खत्म हो चुकी है। सिर्फ मतलब के व्यक्तियों को या परिवारों को आमंत्रित किया जाता है।

महिला संगीत में पूरे परिवार को नाच गाना सिखाने के लिए महंगे कोरियोग्राफर 10-15 दिन ट्रेनिंग देते हैं।

मेहंदी लगाने के लिए आर्टिस्ट बुलाए जाने लगे है। मेहंदी में सभी को हरी ड्रेस पहनना अनिवार्य है जो नहीं पहनता है उसे हीन भावना से देखा जाता है लोअर केटेगरी का मानते हैं

फिर हल्दी की रस्म आती है, इसमें भी सभी को पीला कुर्ता पाजामा पहनना अति आवश्यक है इसमें भी वही समस्या है जो नहीं पहनता है उसकी इज्जत कम होती है।

इसके बाद वर निकासी होती है, इसमें अक्सर देखा जाता है जो पंडित को दक्षिणा देने में 1 घंटे डिस्कशन करते है। वह #बारात प्रोसेशन में 5 से 10 हजार नाच गाने पर उड़ा देते हैं।

इसके बाद रिसेप्शन स्टार्ट होता है। #स्टेज पर वरमाला होती है पहले लड़की और लड़के वाले मिलकर हंसी मजाक करके वरमाला करवाते थे। आजकल स्टेज पर #धुंए की धूनी छोड़ देते है।

दूल्हा-दुल्हन को अकेले छोड़ दिया जाता है, बाकी सब को दूर भगा दिया जाता है

और फिल्मी स्टाइल में स्लो मोशन में वह एक दूसरे को वरमाला पहनाते है, साथ ही नकली आतिशबाजी भी होती है।

स्टेज के पास एक स्क्रीन लगा रहता है, उसमें प्रीवेडिंग सूट की वीडियो चलती रहती है।उसमें यह बताया जाता है की शादी से पहले ही लड़की लड़के से मिल चुकी है और कितने अंग प्रदर्शन वाले कपड़े पहन कर

कहीं चट्टान पर
कहीं बगीचे में
कहीं कुएं पर
कहीं बावड़ी में
कहीं श्मशान में कहीं नकली फूलों के बीच

अपने परिवार की इज्जत को नीलाम कर के आ गई है।

प्रत्येक परिवार अलग-अलग कमरे में ठहरेगा।

जिसके कारण दूरदराज से आए बरसों बाद रिश्तेदारों से मिलने की उत्सुकता कहीं खत्म सी हो गई है।

क्योंकि सब अमीर हो गए हैं पैसे वाले हो गए है। मेल मिलाप और आपसी स्नेह खत्म हो चुका है।

रस्म अदायगी पर मोबाइलों से बुलाये जाने पर कमरों से बाहर निकलते है। सब अपने को एक दूसरे से रईस समझते है।

और यही अमीरीयत का दंभ उनके व्यवहार से भी झलकता है।

कहने को तो रिश्तेदार की शादी में आए हुए होते हैं

परंतु अहंकार उनको यहां भी नहीं छोड़ता।

वे अपना अधिकांश समय करीबियों से मिलने के बजाय अपने अपने कमरो में ही गुजार देते है।

हमारी संस्कृति को दूषित करने का बीड़ा ऐसे ही अति संपन्न वर्ग ने अपने कंधों पर उठाए रखा है।

मेरा अपने मध्यमवर्गीय समाज बंधुओं से अनुरोध है

आपका पैसा है, आपने कमाया है। आपके घर खुशी का अवसर है खुशियां मनाएं, पर किसी दूसरे की देखा देखी नहीं।

कर्ज लेकर अपने और परिवार के मान #सम्मान को खत्म मत करिएगा

जितनी आप में क्षमता है उसी के अनुसार खर्चा करिएगा

4 - 5 घंटे के रिसेप्शन में लोगों की जीवन भर की पूंजी लग जाती है !

दिखावे की इस सामाजिक बीमारी को अभिजात्य वर्ग तक ही सीमित रहने दीजिए !

अपना दांपत्य जीवन सर उठा के, स्वाभिमान के साथ शुरू करिए और खुद को अपने परिवार और अपने समाज के लिए सार्थक बनाइए !

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

आर्क थेरेपी मुश्किल कैंसर को हरा देती है पास के ऊतक को बख्शते हुए

विजय गर्ग

अमेरिका में विशेषज्ञों का एटम है पहली बार किसी मरीज के एडेनॉइड सिस्टिक कार्सिनोमा को टोबट्रीट करने के लिए स्टेप-एंड-शूट स्पॉट-स्कैनिंग प्रोटॉन आर्क थेरेपी नामक तकनीक का सफलतापूर्वक उपयोग किया गया। एसपीआर्क सुर बख्शते समय प्रोटॉन के साथ ट्यूमर को लक्षित करके काम करता है गोल ऊतक। कोरवेल हेल्थ विलियम ब्यूमोंट यूनिवर्सिटी अस्पताल में टीम के निष्कर्ष थे इंटरनेशनल जर्नल ऑफ पार्टिकल थेरेपी के जून २०२५ अंक में प्रकाशित। टीम ने तीन तकनीकों के परिणामों की तुलना की: एसएफउ-आईएमपीटी(देखभाल का वर्तमान मानक), चरण- और शूट एसपीआर्क, और पूरी तरह से गतिशील एसपीआर्क (कंप्यूटर के साथ नकली)। एसपीआर्क के तरीकों ने ब्रेनस्टेम (10% तक), ऑप्टिकल चियास्म (५6%), मौखिक गुहा को वितरित विकिरण को कम कर दिया (7२%), और पर रीढ़ की हड्डी की नहर (90%)। प्रमुख एसएफउ- आईएमपीटी सलाहकार, हेड एंड नेक सर्जिकल नारायण सुब्रमण्यम ने कहा, "यह निश्चित रूप से महत्वपूर्ण है बेंगलुरु के एस्टर इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ ऑन्कोलॉजी में ऑन्कोलॉजी ने कहा। "सिर और गर्दन के ट्यूमर में, जोखिम में अंगों को खुराक वितरण सीमित करना उपचार योजना का एक प्रमुख विचार है। जब ये अंग प्राप्त होते हैं विकिरण की उच्च खुराक से वे बर्दाश्त कर सकते हैं, वे अपूरणीय से गुजरते हैं क्षति जबकि पूरी तरह से गतिशील एसपीआर्क बेहतर प्रदर्शन किया, दो चाप शैलियों के बीच अंतर छोटा था, टीम ने लिखा। गतिशील एसपीआर्क में, खुराक की ऊर्जा और वितरण का बिंदु है लगातार समायोजित किया जाता है, जबकि चरण-और-शूट में थीमाचिन एक पूर्व-प्रोग्राम पैटर्न का अनुसरण करता है। शोधकर्ताओं ने लिखा है कि गतिशील एसपीआर्क अभी भी विकास के अधीन है और मौजूदा ऑन्कोलॉजी सूचना प्रणालियों के साथ नियामक निकासी और एकीकरण की प्रतीक्षा कर रहा है। स्टेप-एंड-शूट एसपीआर्क प्राप्त करने वाला पहला व्यक्ति 46 वर्षीय महिला थी जिसका पैरोटिड-ग्रंथि कैंसर उसके चेहरे की तंत्रिका के साथ फैल गया था उसकी खोपड़ी का आधार। जून-अगस्त २०२४ में, टीम ने कहा कि उसने चरण-और-शूट एसपीआर्क के साथ ३३ सत्र पूरे किए। इस दौरान महिला को कथित तौर पर त्वचा में जलन और कोई समस्या नहीं थी खाना या काम जारी रखना। अमेरिकन कैंसर सोसाइटी के अनुसार, सिर और गर्दन के कैंसर के लिए विकिरण चिकित्सा के पारंपरिक दुष्प्रभावों में थकान, मतली, निगलने में परेशानी आदि शामिल हैं। डॉ. सुब्रमण्यम ने कहा प्रौद्योगिकी "ट्यूमर में मूल्यवान होने की संभावना है जो खोपड़ी के आधार जैसे शारीरिक रूप से जटिल क्षेत्रों में स्थित हैं … जहां खुराक वितरण को आसपास के महत्वपूर्ण क्षेत्रों में कम बिखराव के साथ सटीक होना चाहिए। यह बड़े या व्यापक ट्यूमर में मूल्यवान होने की भी संभावना है, जहां ट्यूमर को आसपास के ऊतकों को सीमित संपार्श्विक क्षति के साथ सटीक रूप से लक्षित किया जा सकता है उपचार प्रोटोकॉल में एक कंप्यूटर प्रोग्राम शामिल था जो सभी संभावित स्थानों के माध्यम से स्कैन किया गया था और ऊर्जा परतें जहां प्रोटॉन बीम वितरित किए जा सकते हैं। एक ऊर्जा परत ऊतक का एक टुकड़ा है जो एक विशिष्ट के प्रोटॉन बीम प्राप्त करता है ऊर्जा। ऊर्जा बीम की सीमा निर्धारित करती है: यह कितनी दूर तक पाई करने में सक्षम है ऊतक को ट्रेट करें। जब मशीन एक ऊर्जा स्तर को ठीक करती है, तो इसकी स्कैनिंग नोजल दर्जनों उपयुक्त स्थानों को स्वीप करती है और उस ऊर्जा परत में विकिरण खुराक जमा करती है। फिर मशीन अगले ऊर्जा स्तर पर स्विच करती है और प्रक्रिया को दोहराती है, इस बार थोड़ी अधिक रेंज के साथ एक बीम वितरित करती है। इस तरह से पूरा ट्यूमर 'चित्रित' है विकिरण। प्रत्येक सत्र में, एक बार महिला स्थिति में थी, टीम ने एक शंकु-बीम का प्रदर्शन किया जिसकी गणना फोटोग्राफी (सीबीसीटी) स्कैन से की गई थी। एक मशीन लर्निंग मॉडल ने सीबीसीटी डेटा को एक सिंथेटिक सीटी में बदल दिया, जिसके साथ टीम वितरित की जाने वाली खुराक को ट्रैक कर सकती है। पहले दो हफ्तों में, सिंथेटिक सीटी से पता चला कि महिला का वजन कम हो गया था और ट्यूमर की खुराक कोव इस प्रकार एरेज ३-5% फिसल गया था। टीम ने 13 वें दिन से इसके लिए समायोजित किया। गैन्ट्री को नौ बीम कोणों के लिए स्थापित किया गया था जो महिला के चारों ओर 1800 चाप को कवर करते हैं। यह डिलीवर की गई खुराक, २०० चला गया, दूसरा दिया, २०० चला गया, तीसरा दिया, और इसी तरह। पेपर में कहा गया है कि प्रत्येक सत्र में 15-18 मिनट और उपचार हुआ निकट निरंतर विकिरण वितरण से लाभान्वित। एसएफउ- आईएमपीटी और (नकली) गतिशील एसपीआर्क विधियों ने एक ही लक्ष्य योजना का उपयोग किया और था एक ही लक्ष्य: ३३ दैनिक उपचारों में एक निश्चित कुल खुराक प्रदान करें और प्रो सुनिश्चित करें टन रेंज ३.5% से अधिक बंद नहीं है। "बहुत सटीक रेडियोथेरेपी वितरण के साथ, चिंता यह है कि छोटे ट्यूमर को याद किया जा सकता है, जिसे भौगोलिक कहा जाता है याद आती है, सांस लेने के रूप में सूक्ष्म के रूप में आंदोलनों अपनी स्थिति बदल सकते हैं, और वे आकार में सिकुड़ सकते हैं इलाज और परिणाम के दौरान अवर कैंसर इलाज दर, "डॉ. सुब्रा ने कहा। "एक और महत्वपूर्ण चिंता लागत है, "उन्होंने कहा। ये प्रौद्योगिकियां बहुत महंगी हैं और अक्सर एक छोटी रोगी आबादी के लिए उपयुक्त हैं। इसके परिणामस्वरूप स्वास्थ्य सेवा प्रणाली पर एक महत्वपूर्ण वित्तीय बोझ होता है और यह जोखिम कि इसका उपयोग उन स्थितियों में किया जा सकता है जहां यह इंगित नहीं किया गया है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

"गिरते पुल, ढहती ज़िम्मेदारियाँ: बुनियादी ढांचे की सड़न और सुधार की ज़रूरत"

वडोदरा में पुल गिरना कोई अकेली घटना नहीं, बल्कि भारत के जर्जर होते बुनियादी ढांचे की डरावनी सच्चाई है। पुरानी संरचनाएं, घटिया सामग्री, भ्रष्टाचार और निरीक्षण की अनुपस्थिति — यह सब मौत को दावत दे रहा है। राbजनीतिक घोषणाएं तो बहुत होती हैं, लेकिन टिकाऊ निर्माण और जवाबदेही की योजनाएँ नदारद हैं। अब वक़्त है कि सरकार केवल निर्माण नहीं, निरीक्षण और संरक्षण को भी प्राथमिकता दे। वरना पुल ही नहीं, जनता का भरोसा भी बार-बार ढहेगा। विकास सिर्फ रफ्तार नहीं, मज़बूत नींव और ज़िम्मेदारी मांगता है — जो अभी बहुत कमज़ोर है।

✍ डॉ सत्यवान सौरभ

वडोदरा में 40 साल पुराने पुल का हालिया ढहना न केवल एक स्थानीय त्रासदी है, बल्कि यह पूरे भारत के बुनियादी ढांचे की बिखरती हकीकत की नुमाइश है। ऐसे हादसे अब चौंकाते नहीं, बल्कि लगातार दोहराए जाने वाले ₹सिस्टम फेल्योर₹ के आदतन प्रमाण बन चुके हैं। हर बार हादसे के बाद वही रटे-रटाए बयान, वही दिखावटी जांच कमेटी, और फिर वही खामोशी — जब तक अगला पुल न गिर जाए।

भारत विकास के पथ पर दौड़ रहा है, लेकिन इस दौड़ में जिन सड़कों, पुलों और इमारतों पर यह प्रगति टिकी है, वे खुद कब की चरमराने लगी हैं। सवाल यह नहीं कि वडोदरा में पुल क्यों गिरा, सवाल यह है कि देशभर में ऐसे कितने और पुल गिरने की कगार पर हैं और हमने अब तक उनसे क्या सीखा?

भारत में बीते एक दशक में सार्वजनिक बुनियादी ढाँचे के ढहने की घटनाओं की एक लंबी सूची है। 2016 में कोलकाता का विवेकानंद फ्लाईओवर निर्माण के दौरान ही गिर गया, जिसमें 27 लोगों की जान गई। 2018 में वाराणसी में एक पुल का हिस्सा ढहने से कई लोग मारे गए। 2022 में गुजरात के मोरबी में केबल ब्रिज गिरने से 130 से अधिक लोग मारे गए। और अब 2024 में वडोदरा में पुल गिरा। इससे पहले बिहार, उत्तराखंड, हिमाचल और असम में भी पुल ढहने की घटनाएं हुई हैं।

इन हादसों का पैटर्न स्पष्ट है — पुरानी संरचना, घटिया निर्माण सामग्री, लचर निरीक्षण व्यवस्था और पूरी तरह से अनुपस्थित जवाबदेही।

भारत के अधिकांश पुल, इमारतें और सार्वजनिक संरचनाएं 30 से 60 साल पहले बनी थीं। उस समय न तो जलवायु परिवर्तन की मार इतनी तीव्र थी, न ही ट्रैफिक और जनसंख्या का भार इतना अधिक। परंतु इन्हें कभी समय रहते मरम्मत नहीं मिली। ₹बन गया तो बन गयाह की मानसिकता ने इन ढांचों को धीरे-धीरे मौत के कुएं में बदल दिया। टेंडर प्रक्रिया में सबसे कम बोली लगाने वाले

ठेकेदार को ठेका देना, फिर उसी ठेकेदार का बजट काटना, सस्ती सामग्री का उपयोग करना — यह सब इतना आम हो चुका है कि हम इसे भ्रष्टाचार मानना ही भूल गए हैं। यह एक संस्थागत भ्रष्टाचार है जिसमें प्रशासन, ठेकेदार और कभी-कभी राजनेता भी शामिल होते हैं।

क्या कभी आपने किसी पुल के पास बोर्ड देखा है जिस पर लिखा हो — ₹यह पुल अंतिम बार कब जांचा गया था?₹ शायद ही कभी। कारण स्पष्ट है — निरीक्षण नाम की प्रक्रिया कागजों में सिमट चुकी है। टेक्नोलॉजी का युग होने के बावजूद भारत के पास कोई केंद्रीकृत पुल स्वास्थ्य निगरानी प्रणाली नहीं है।

पिछले कुछ वर्षों में असामान्य बारिश, बाढ़, अत्यधिक गर्मी और भूकंप जैसी घटनाओं में तेजी आई है। लेकिन हमारे अधिकांश ढांचों का डिज़ाइन इन नई चुनौतियों को ध्यान में रखकर नहीं हुआ था। कमजोर नींव, जल निकासी की खराब व्यवस्था और भूस्खलन की अनदेखी इसका परिणाम है।

भारत में बुनियादी ढांचे को राजनीतिक स्टंट के रूप में तो खूब इस्तेमाल किया जाता है, लेकिन दीर्घकालीन संरचनात्मक मजबूती की कोई गंभीर योजना शायद ही कहीं देखी जाती है। ₹फिट फॉर फोटो₹ परियोजनाएं बनती हैं, जो जल्दी ढह भी जाती हैं।

हर साल सरकारें इंफ्रास्ट्रक्चर पर हजारों करोड़ का बजट पास करती हैं। पुल निर्माण, सड़क विस्तार, शहरी आवास योजना जैसी परियोजनाओं में भारी निवेश होता है। लेकिन यह बजट वास्तव में कहाँ जाता है? यदि पुल गिर रहा है तो इसका मतलब है कि या तो बजट जमीनी स्तर तक पहुँचा ही नहीं, या उसका दुरुपयोग हुआ।

भारत में अब विकास की चर्चा अर्थव्यवस्था की रफ्तार से नहीं, गिरने वाले पुलों की संख्या से होनी चाहिए।

अगर हमें भारत को सुरक्षित, सतत और सशक्त बनाना है तो हमें बुनियादी ढांचे की विश्वसनीयता सुनिश्चित करनी ही होगी।

बीस साल से अधिक पुराने सभी पुलों, इमारतों, फ्लाईओवर आदि का हर तीन वर्ष में एक बार स्वतंत्र संरचनात्मक परीक्षण अनिवार्य किया जाए। इसके निष्कर्ष सार्वजनिक पोर्टल पर उपलब्ध हों।

एक स्वतंत्र राष्ट्रीय बुनियादी ढांचा निरीक्षण प्राधिकरण का गठन किया जाए जो केवल निरीक्षण, रेटिंग और रिपोर्टिंग के लिए जिम्मेदार हो। इसकी रिपोर्ट सरकार के हस्तक्षेप से मुक्त हो।

पुलों में कंपन, भार, तापमान आदि की निगरानी के लिए सेंसर लगाए जाएं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित प्रणाली किसी भी अनियमितता पर तुरंत चेतावनी दे सकती है।

अब समय है कि टेंडर प्रणाली को केवल न्यूनतम बोली पर आधारित होने से रोका जाए। गुणवत्ता, तकनीकी क्षमता और पूर्व प्रदर्शन के आधार पर निर्माण एजेंसियों का चयन होना चाहिए।

स्थानीय निकायों को छोटे ढांचों की निगरानी में भागीदार बनाया जाए। ग्रामीण और शहरी स्तर पर नागरिकों को प्रशिक्षण दिया जाए ताकि वे संभावित जोखिम की जानकारी समय रहते दे सकें।

हर संरचना को जलवायु परिवर्तन के खतरों को ध्यान में रखकर डिज़ाइन किया जाए। भारतीय मानक ब्यूरो और सड़क विकास परिषद जैसे संस्थानों के मानकों को सख्ती से लागू किया जाए।

जहां सरकार की नीयत कमजोर होती है, वहाँ मीडिया और नागरिक समाज की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। पुल गिरने के बाद कवरेज तो होता है, पर क्या हमने कभी उस निर्माण एजेंसी का नाम याद रखा? क्या किसी ठेकेदार पर आपराधिक मामला दर्ज हुआ?

आरटीआई कार्यकर्ताओं, पत्रकारों और टेक्नोलॉजी विशेषज्ञों को साथ लाकर एक जन-जवाबदेही मॉडल बनाना ज़रूरी है।

तेजी से हो रहे शहरीकरण और विकास की होड़ में भारत कहीं सुरक्षा और स्थिरता को नजरअंदाज कर रहा है। ऐसे में यह प्रश्न उठता है — क्या हम केवल पुल बना रहे हैं या विश्वास के पुल भी बना रहे हैं? क्योंकि जब कोई पुल गिरता है तो सिर्फ कंक्रीट नहीं टूटता, जनता का प्रशासन पर से विश्वास भी चकनाचूर हो जाता है।

भारत का भविष्य शानदार हो सकता है, लेकिन उसके लिए नींव का मजबूत होना जरूरी है।

वडोदरा का पुल गिरा है, कल कहीं और गिरेगा — अगर हमने अपनी दृष्टि और नीति नहीं बदली। हमें प्रतिक्रियात्मक शासन से आगे बढ़कर सक्रिय बुनियादी ढांचा नीति की ओर बढ़ना होगा। नहीं तो हम हर साल पुलों की कब्रगाहें बनाते रहेंगे और नागरिकों की लाशें उठाते रहेंगे।

बुनियादी ढांचे को केवल निर्माण की दृष्टि से नहीं, बल्कि मानव जीवन की सुरक्षा के आधार पर देखना होगा। केवल निर्माण नहीं, संरक्षण और सुधार की नीति ही देश को टिकाऊ भविष्य की ओर ले जाएगी।

मासिक धर्म—जीवन का उत्सव या अपराध? स्कूल की क्रूरता पर सवाल

मासिक धर्म को अपराध ठहराने का पाप: कब बदलेगी हमारी सोच?

जब एक स्कूल, जो नन्हे मन के सपनों को पंख देने और उनके भविष्य को गढ़ने का पवित्र मंदिर माना जाता है, वही उनकी मासूमियत को कुचलने और आत्मसम्मान को तार-तार करने का अखाड़ा बन जाए, तो क्या हमारा समाज वास्तव में सभ्य कहलाने का हक रखता है? महाराष्ट्र के ठाणे जिले के शाहपुर में एक निजी अंग्रेजी माध्यम स्कूल में हुई 08 जुलाई की घटना महज एक वाकया नहीं, बल्कि हमारी सामाजिक संवेदनाओं और शैक्षिक व्यवस्था पर एक जोरदार तमाचा है। मासिक धर्म, जो प्रकृति की अनमोल देन और नारीत्व का गौरव है, उसे शर्मिंदगी का हथियार बनाकर कक्षा 5 से 10 तक की मासूम छात्राओं की गरिमा को बेरहमी से रौंदा गया। यह कहानी उन कोमल हृदयों की है, जिनके सुनहरे सपनों को अपमान की काली स्याही से दागदार कर दिया गया। यह घटना हमारी अंतरात्मा से एक चीखता सवाल पूछती है—क्या हम अपने बच्चों को वह सम्मान, सुरक्षा और संवेदना दे पा रहे हैं, जिसके वे सच्चे हकदार हैं? यह सिर्फ एक स्कूल की कहानी नहीं, बल्कि हमारे समाज के नैतिक पतन का आईना है, जो हमें झकझोरकर आत्ममंथन के लिए मजबूर करता है।

जब सूरज की सुनहरी किरणें धरती को नहला रही थीं, ठाणे के शाहपुर तहसील में एक निजी स्कूल का सभागार एक दिल दहलाने वाले मंजर का साक्षी बन रहा था। इस स्कूल में, जहां नर्सरी से दसवीं तक की करीब 600 छात्राएं अपने भविष्य के सुनहरे सपने संजोती हैं, उस दिन कक्षा 5 से 10 तक की मासूम लड़कियों को ऐसी यातना सहनी पड़ी, जो सभ्य समाज के माथे पर कलंक है। स्कूल की प्रिंसिपल और एक महिला कर्मचारी ने शौचालय की दीवारों पर खून के धब्बे देखकर ऐसा क्रूर और अमानवीय कदम उठाया, जिसने शिक्षा के पवित्र मंदिर को तार-तार कर दिया। कक्षा 5 से 10 तक की इन नन्हीं बच्चियों को सभागार में बुलाया गया, जहां प्रोजेक्टर पर शौचालय की दीवारों और फर्श पर खून के धब्बों की तस्वीरें प्रदर्शित की गईं। इसके बाद शुरू हुआ एक अपमानजनक और हृदयविदारक पूछताछ का दौर—"क्या तुम्हें मासिक धर्म हुआ है? यह खून किसका है?" मानो ये मासूम बच्चियां अपराधी हों, जिनसे बेरहमी से सवाल-जवाब किया जा रहा हो। जिन लड़कियों ने मासिक धर्म से गुजरने की बात कबूल की, उनके अंगूठे के निशान लिए गए, मानो वे किसी जघन्य अपराध की सजा पाने वाली कैदी हों। जिन्होंने मासिक धर्म न होने की बात कही, उन्हें एक महिला अटेंडेंट के साथ शौचालय ले जाकर उनकी अंडरगारमेंट्स तक की तलाशी ली गई—एक ऐसा घिनौना कृत्य, जो न केवल उनकी निजता को तार-तार करता है, बल्कि किसी भी बच्चे के कोमल मन को आजीवन आघात पहुंचाने की क्रूरता रखता है।

कई अभिभावकों ने बताया कि उनकी बेटियों को, सैनिटरी पैड्स का उपयोग करने के बावजूद, झूठ बोलने का इल्ज़ाम झेलना पड़ा। इस अपमान ने इन नन्हीं आत्माओं को मानसिक रूप से कुचलकर रख दिया। कई लड़कियां सदमे की शिकार हैं, कुछ ने स्कूल के दरवाजे की ओर मुंह मोड़ लिया, और कुछ इस दर्द को शब्दों में बयां करने की हिम्मत तक खो चुकी हैं। 2019 के यूनिसेफ के सर्वे के अनुसार,

देश में हर साल 2.3 करोड़ लड़कियां मासिक धर्म शुरू होने पर स्कूल छोड़ देती हैं, और इस उम्र में करीब 54 प्रतिशत लड़कियां एनीमिक होती हैं, जिनमें छोटे शहरों और गांवों की लड़कियां अधिक हैं। ऐसी घटनाएं मासिक धर्म से जुड़े सामाजिक कलंक को और गहरा करती हैं, जिसके चलते लाखों लड़कियां शिक्षा से वंचित हो जाती हैं। एक मां की शिकायत पर पुलिस ने प्रिंसिपल, एक अटेंडेंट, चार शिक्षकों और दो ट्रस्टियों के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की धारा के तहत मामला दर्ज किया। क्या यह कानूनी कार्रवाई उन गहरे, रिसते घावों को भर पाएगी, जो इन मासूम बच्चियों के मन पर हमेशा के लिए नासूर बन चुके हैं?

मासिक धर्म—प्रकृति का वह अनमोल उपहार, जो नारी को जीवन रचने की दिव्य शक्ति देता है। फिर क्यों इसे शर्मिंदगी का लबादा ओढ़ाया जाता है? क्या शौचालय में खून के धब्बों का कारण जानने के लिए इतना क्रूर, अमानवीय और अपमानजनक रास्ता चुनना जरूरी था? क्या स्कूल प्रशासन ने एक पल के लिए भी सोचा कि 10 से 15 साल की इन मासूम बच्चियों के कोमल मन पर इस बर्बर कार्रवाई का क्या असर पड़ेगा? यह घटना केवल एक स्कूल की विफलता नहीं, बल्कि हमारी उस रूढ़िगत, संकुचित सोच का काला सच है, जो मासिक धर्म को आज भी पाप और लज्जा का पर्याय मानती है। पिछले साल, मिनिस्ट्री ऑफ एजुकेशन के तहत डिपार्टमेंट ऑफ स्कूल एजुकेशन एंड लिटरेसी ने बोर्ड परीक्षाओं के दौरान स्कूलों के लिए एक एडवाइजरी जारी की थी, जिसमें कहा गया कि 10वीं और 12वीं की छात्राओं को मासिक धर्म के दौरान मुफ्त सैनिटरी नैपकिन, जरूरत पड़ने पर ब्रेक, और परीक्षा केंद्रों पर रेस्टरूम की सुविधा उपलब्ध होनी चाहिए। इसके बावजूद, इस स्कूल ने इन दिशानिर्देशों की अवहेलना की और नन्हीं आत्माओं को अपराधी की तरह कठघरे में खड़ा कर दिया। यह घिनौना कृत्य न केवल इन छात्राओं की निजता को तार-तार करता है, बल्कि उनके आत्मविश्वास और मानसिक स्वास्थ्य पर गहरा, कभी न भरने वाला आघात पहुंचाता है। मनोवैज्ञानिक चेतावनी देते हैं कि ऐसी घटनाएं बच्चों में आजीवन डर, शर्मिंदगी और आत्मसम्मान की कमी का जहर बो सकती हैं।

इस दिल दहलाने वाली घटना से निपटने और भविष्य में ऐसी त्रासदियों को रोकने के लिए तुरंत और अटल कदम उठाने होंगे। स्कूलों को मासिक धर्म को एक स्वाभाविक, सम्मानजनक और गौरवपूर्ण विषय के रूप में पढ़ाने की जिम्मेदारी लेनी होगी।

छांगुर बाबा के साम्राज्य का अंत लेकिन कितने बाकी

राजेश कुमार पासी

अकसर हिन्दू संगठन लव जिहाद का मुद्दा उठाते रहते हैं लेकिन उनका मजाक उड़ाते हैं कि ये उनकी साम्प्रदायिक सोच है, ऐसा कुछ नहीं है। विडम्बना यह है कि बार-बार लव जिहाद के मामले सामने आते रहते हैं लेकिन उनकी अनदेखी कर दी जाती है। लव जिहाद कुछ और नहीं है बल्कि हिन्दू लड़कियों का धर्म परिवर्तन करवाने का एक तरीका है। यह भी बार-बार सुनने में आता है कि लव जैहाद के लिए मुस्लिम लड़को को पैसा दिया जाता है ताकि वो हिन्दू लड़कियों को अपने प्यार के जाल में फंसाकर उनसे शादी करें और इसके बाद उन्हें इस्लाम कबूल करवायें। यूपी के बलरामपुर के उतरौला के छांगुर बाबा के मामले ने एक बार फिर साबित कर दिया है कि इस देश में सुनियोजित तरीके से धर्म परिवर्तन का धंधा चल रहा है। मुस्लिम देशों से इसके लिए बेइंतहा पैसा आ रहा है इसलिए इस धंधे के लिए पैसे की कोई कमी नहीं है।

मुस्लिम लड़कों के लिए ये दोगुने फायदे का काम है। एक तो उन्हें इस काम के लिए मोटी रकम मिलती है तो दूसरी तरफ उन्हें इस काम से धर्म की सेवा का मौका भी मिलता है। मौलाना उन्हें इस काम के बदले जन्नत का लालच देते हैं। उतरौला में पैदा होने वाला छांगुर बाबा कभी भीख मांग कर गुजारा करता था और इसके बाद उसने नकली अंगूठी बेचने का धंधा शुरू किया लेकिन जब उसने धर्म परिवर्तन का धंधा शुरू किया तो वो सैकड़ों करोड़ का स्वामी बन गया। आसपास के इलाकों में उसका इतना दबदबा हो गया कि उसके खिलाफ मुंह खोलना किसी के लिए संभव नहीं था। वास्तव में उसने अपने इलाके में पुलिस-प्रशासन और अदालत में इतनी पकड़ बना रखी थी कि उसके खिलाफ आवाज उठाने वाले के ऊपर फर्जी मुकदमें ठोक दिये जाते थे। हैरानी की बात है कि कई एकड़ की सरकारी भूमि पर उसने कब्जा करके बड़ी इमारत बनाकर अपना साम्राज्य स्थापित कर लिया था लेकिन वहां का प्रशासन आँखे बंद करके बैठा रहा।

सवाल यह है कि पिछले 15-16 सालों से बलरामपुर में गैरकानूनी धंधे कर रहे छांगुर बाबा पर पुलिस और प्रशासन इतने मेहरबान क्यों थे। मैं सरकारी सेवा में 27 साल रहा हूं, अच्छी तरह जानता हूं कि अफसर सब कुछ देखकर अनदेखा क्यों करते हैं। इस सच को भी जानता हूं कि इस अनदेखी के लिए पैसा ऊपर से नीचे तक जाता है। मतलब साफ है कि स्थानीय प्रशासन में बैठे लोगों को सब कुछ पता था लेकिन उन्हें अनजान बने रहने के लिए छांगुर बाबा नियमित रूप से मोटा पैसा दे रहा होगा। मुख्यमंत्री योगी कितने भी सख्त प्रशासक हों लेकिन अभी भी पुराना इको सिस्टम काम कर रहा है। सच यह भी है कि अगर योगी मुख्यमंत्री नहीं होते तो यह बाबा कभी पकड़ में नहीं आता। ये योगी ही हैं जिनके कारण प्रशासन उसके खिलाफ कार्यवाही करने को मजबूर हुआ अन्यथा ये मामला दबा दिया जाता।

आज ईडी भी उसके खिलाफ जांच कर रही है लेकिन सवाल यह है कि लगभग 300 करोड़ की फंडिंग जुटा लेने वाले बाबा पर किसी की नजर पहले क्यों नहीं पड़ी। मुझे ऐसा लगता है कि छांगुर पर कार्यवाही के साथ-साथ उन अधिकारियों और कर्मचारियों के खिलाफ भी कार्यवाही की जानी चाहिए जो उसकी मदद कर रहे थे। मेरा तो मानना है कि बाबा के खिलाफ कार्यवाही से पहले इनके खिलाफ कार्यवाही होनी चाहिए क्योंकि उनके लालच ने ही ऐसा बाबा पैदा किया था। सरकार से वेतन लेने वाले ये लोग देश के खिलाफ जाकर बाबा का काम कर रहे थे। घर का एक छज्जा इन्हें दिखाई दे जाता है लेकिन 70 कमरों वाला महल इन्हें दिखाई नहीं दिया। बैंक खातों में इतने बड़े लेनदेन के बावजूद आरबीआई को इसकी सूचना क्यों नहीं दी गई। उसने अपनी इमारत की दीवार बहुत ऊंची बनाई हुई थी।

व्यंग्य : टॉनिक,टॉनिक, कितना टॉनिक!

कस्तूरी दिनेश

आजकल मेरे मित्र-बन्धु और पड़ोसी मेरे स्वास्थ्य को लेकर बड़े चिंतित हैं। उनकी चिंता से मैं भी चिंतित हो गया हूँ। जो भी मिलता है, वह कहता है कि दिनेश जी आप पहले से दुबले हो गये हो! मैं खोपड़ी नीचे करके अपनी बॉडी पर एक विहंगम दृष्टि डालता हूँ और चिंतित हो जाता हूँ। घर में आदमकद आईने के सामने खड़ा होकर उपर-नीचे, दायें-बाएं निहारता हूँ, चिंता बढ़ती जाती है। पत्नी से पूछता हूँ—"क्यों जी, आजकल सब कहने लगे हैं कि मैं दुबला हो रहा हूँ क्या ये सच है... ?वह आटा गूंदते हुए बिना मेरी तरफ देखे सपाट जवाब देती है—"पहले ही कौन से टार्जन थे, छिपकली के छिपकली...!"

उनके इस कटाक्ष से आहत मुझे, पल भर के लिए लगता है कि मैं पांडवों के रंग-महल में कुंड के पानी को समतल जमीन समझकर डुबकियां खाता दुर्योधन हूँ और वह छज्जे पर खिलखिलाती खड़ी द्रौपदी! आहत मन मैं शाम को अँधेरे में परिचितों से बचता सीधे पड़ोस के मेडिकल स्टोर पहुँच जाता हूँ। अँधेरे में इसलिए कि कोई मित्र-बन्धु मुझे देखकर फिर मेरे दुबलेपन पर चिंता न प्रगट करने लगे! होना तो यह चाहिए कि मैं किसी अच्छे डॉक्टर के पास जाऊं पर अगर डॉक्टर के पास गया तो वह पहले नाड़ी छूएगा, जीभ देखेगा, आला लगाकर छाती की धड़कन सुनेगा, फिर हजार पांच सौ की फीस सहित दवाओं के साथ दो तीन टॉनिक लिख देगा! अब मरो! इस महंगाई में सेहत के नाम पर दो-तीन हजार रूपये की जबरदस्ती हजामत हो जाए तो उलटे ऊस्तरे से मूड़नेवाले डाक्टर का लिखा टॉनिक क्या ख़ाक असर करेगा!

मेडिकल स्टोर के अमूमन सभी रेक सुंदर-सुगठित महिलाओं तथा पुरुषों के आकर्षक मुस्कुराते फोटो वाले डिब्बों में बंद दवाइयों, टॉनिकों और इंजेक्शनों से खचाखच सजे हुए थे! ऐसे आकर्षक डिब्बे कि भले बीमारी हो न हो मन करे कि दो-चार तो खरीद ही लो यार! मेडिकल स्टोर के मालिक गुप्ता जी मेरे परिचित हैं। जरा हंसोड़ और बातूनी स्वभाव है पर दिल के अच्छे हैं। गुप्ता जी फुर्सत से बैठे अखबार के पन्ने पलट रहे थे। मैंने कहा—"अग्रवाल जी, एकाध बढ़िया जोरदार टाईप का टॉनिक होगा क्या...?"उन्होंने नजर उठाकर पहले मुझे देखा फिर मेरी सिकिया पहलवान बॉडी की तरफ गौर से देखकर मुस्कुराते हुए पूछा—"आपके लिए न सर.....? कौन सा लेंगे, आयुर्वेदिक कि एलोपैथी और हाँ यदि होमियोपैथी में लेना है तो बाजू में मेरे भाई की दुकान है, वहाँ चले जाइए...। अश्वगंधारिष्ट, दशमूलारिष्ट, प्रोटीनेक्स, प्रोटीटॉस यहाँ सब मिल जाएगा...!आजकल अच्छी सेहत के लिए आम जिन्दगी में कोई न कोई टॉनिक जरूर लेते रहना चाहिए...! देखिये न, अब तो राजनीति भी इससे अछूती नहीं रही! पिछले बहुत दिनों से मुम्बई वाले ठाकरे ब्रदर्स की राजनीति की सेहत एकदम खराब चल रही है तो स्वास्थ्य-सुधार के लिए उन्होंने हिन्दी-मराठी के "भाषा-टॉनिक" का डोज मारना शुरू कर दिया! अब यह बात अलग है कि इस टॉनिक से उनकी सेहत सुधरती है या नहीं? हाँ, तो बोलिए, कौन सी लेंगे...?" मेरे अंदर का मिडिल क्लास जरा कुनमुनाया और सकुचाते हुए पूछा—"कीमत क्या होगी?" उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा—"बस यही छहः सात सौ के आसपास...!"

कीमत सुनकर मेरा दिल धक से रह गया। महीने भर के बजट के फेल होने की सम्भावना उठ खड़ी हुई! मैंने खिसियाहट भरे मुस्कुराहट के साथ कहा—"गुप्ता जी, जरा रुक जाईये। जरा आपके भाई की होमियोपैथी दुकान का भी एक चक्कर मारकर पता कर लूं...!" मैं धीरे से मुड़ा और वहाँ से खिसककर सीधे घर चला आया! मन ने कहा, टार्जन होना अपने बस का नहीं...। छिपकली हैं तो छिपकली ही सही!

पुस्तक समीक्षा: "बोल म्हारी माटी"

लेखक: डॉ. सत्यवान सौरभ
प्रकाशक: आर.के. फीचर्स, प्रज्ञानशाला, भिवानी
मूल्य: ₹260/-
पृष्ठ संख्या: 120
ISBN: 978-7-1862-8282-6
भाषा: हरियाणवी (देवनागरी लिपि)
विधा: काव्य-संग्रह | लोक साहित्य | समकालीन सामाजिक कविता
समीक्षक: वेदप्रकाश भारत
माटी री बोली में घुली कविता री आत्मा

हरियाणा रा नाम आवै तो मन मैं दूध-दही, खेत-खलियाण, पहलवान, चौपाल, बागड़ी-जेबड़ी बोली अर सादगी भर्यो जिन्दगी सै। पर इस हरियाणा री धरती तले जड़ी माटी में एक आंधरी बात सै – संवेदना। डॉ. सत्यवान सौरभ की किताब ₹बोल म्हारी माटी₹ इस संवेदना नै कविता में ढाल के हमारे ताईं ल्याई सै। ई बही केवल कवितां रो संग्रह ना, एक दस्तावेज़ सै – हरियाणवी माटी, बोली, संस्कृति अर् लोक चेतना रो।

बोल म्हारी माटी – इब केवळ एक किताब ना सै, ये तो हरियाणवी जीवन का झरोखा सै। इसमें गाँव री खुरदरी बोली सै, माँ की थपकी सै, बापू के खेत सै, फौजी का जुनून सै, छोरी का गुस्सा सै, और चौपाल की हंसी सै। हर, हर दोहा, हर कुण्डलिया – एक किस्सा सुनावै सै। मैं इस संग्रह के ज़रिए अपने हरियाणे नै सलाम करूं सै – उसकी मिट्टी नै, उसकी छाया नै, उसकी बोली नै। जइसे-जइसे आप पढ़ोगे, हर शब्द में अपने गांव की छाया पाओगे।

जड़ां तै जुड़ी बानी

डॉ. सौरभ रा लेखन जमीन तै जुड़्या सै। के नै देखो:

रोटी अर् लीलू प्याज सै,
दुपहर की घणी माज सै।
घणी-घणी कर मत पाछे हो,
म्हारा बखत भी आज सै।

ई पंक्तियां मजदूर रा दर्द भी बखाणे सै अर उस रे आत्मगौरव भी। भाषा बिलकुल लोक बोली की सै – जैसे दादी-नानी बतावें, चौपाल में होवे चर्चा।

कविता में हरियाणवी छोरी

संग्रह में छोरी रा चित्रण एक दम सजीव सै। डॉ. सौरभ छोरी नै केवल बेबस ना बतावै, वो बदलण आली ताकत दिखावै सै।

घूँघट की ओट में ढलती जिन्दगी,
अब किताबां की हेडलाइन बनगी।
लुगाई नै छोरा समझ कै पढाओ,
सच माणो, अर नॅ बदलाओ।

ई कविता में घूँघट हट रया सै, कलम हाथ में आ रई सै, अर छोरी समाज री रीढ़ बन रई सै।

किसानी, खलिहाण अर मजदूर

हरियाणवी किसान माटी तै जुड़्या होया सै, अर सौरभ जी उकरे हर दर्द नै लफ्जां में पिरोया सै।

म्हारी जमीन भले बंजर हो,
हौंसले रा बीज जमावां सै।
खून-पसीने से सींची माटी,
म्हारे बाबुल का भावां सै।

ई कविता माटी रा मान बढ़ावै सै। कविता में पसीना भी सै, अर बगावती आत्मा भी।

आंदोलन री आवाज

संग्रह में आंदोलन, सरकार रा जुल्म, बेरोजगारी अर शोषण पे कई कविता सै। एक कविता देखो:

धान का दाना दे कै,
गन्ना का रस चूंस कै,
सरकार नै थप्पड़ मारे,
म्हारे झोले सै छूं-सकै!

ये पंक्तियां केवल विरोध ना, चेतना सै – किसान री, मजदूर री, गरीब री।

बालपन रा रंग

बाल जीवन पे लिख्या खंड बचपन रा रंग सच्ची मासूमियत सै भर्या सै।

नंगे पांव दौड़या करते,
गलियां नै अपनावें सै।
मिट्टी रा कंचा लुढ़कावें,
अर् मन का गीत गावें सै।

ई पंक्तियां सुन के लागै सै जैसे अपने बचपन के दिन लौट आवें।

छंद, शैली अर सौंदर्य

संग्रह में दोहा, चौपाई, कुण्डलिया, मुक्तछंद – सब मिलकै कविता नै जीवंत बना दिया। पर सब में हरियाणवी बानी रो ठाठ सै।

माटी की बातां में, सच्चाई का शोर,
झूठ का रंग फीका पड़े, जब बोले गांव का मोर।

छोटा छंद, पर बात गहरी – ई डॉ. सौरभ री खासियत सै।

लोक संस्कृति री जीती-जागती तस्वीर

बोल म्हारी माटी में हरियाणवी संस्कृति री हर परत नजर आवै सै – तीज-त्यौहार, घाघरा-ओढ़णी, चूल्हा-धूणी, गीत-नाच, किस्सा-कहाणी। ई किताब एक सांस्कृतिक दस्तावेज़ सै। जे कोए भी हरियाणा नै समझना चावै, वो पहले ई किताब पढ़ै। ₹बोल म्हारी माटी₹ कोई किताब भर ना सै, ई तै हरियाणा की धरती की धड़कन सै। इब के जमाने में जब लोग अपनी बोली तै शर्माण लागे सै, तब या संग्रह उन सब नै याद दिलावै सै के अपनी माटी, अपनी जुबान, अर अपनी जड़ नै कदे भूलणा ना चाहिए। इस किताब में जो एं सै, वो सीधे मन सूं निकळी सै – किसान की थकी पीठ सूं, नारी की चुप आंखां सूं, बेरोजगार छोरे की हँसी सूं, मास्टर की मजबूरी सूं, अर राजनीति के रंगमंच की खामोशी सूं। हर 16-16 पंक्तियों की सै, अर हर 4 पंक्ति के बाद एक सांस लेण ताईं जगह दी गई सै — ज्यूं जिंदगी में ठहराव होवै सै। लेखक नै कोई चौंकावण की या दिखावटी बात ना करी — जे जैसा समाज में देख्या, समझ्या, और सह्या, वैसा ही लिख दिया। इब चाहे आप गांव में रहो या शहर में, पढ़ कै आपनै लागैगा के – ₹हां, ई बात तो मेरी भी सै।₹ ये संग्रह लख्मीचंद की चौपाल सूं उठी बोली नै इब की पीढ़ी ताईं पहुंचावै का काम करै सै — ताकि वो समझ सकै के केवल किताब में ना, जिंदगी में भी होवे सै।

आखिरी बात, क्यों पढ़ो ई बही?

हरियाणा रा असल चेहरा देखणा हो – पढ़ो। हरियाणवी बोली में साहित्य के स्तर की समझ चाहीए – पढ़ो। छोरी, मजदूर, किसान, आंदोलन, बचपन – सबकी आवाज़ सुणणी हो – पढ़ो। ई बही केवल कवितां का ढेर ना, ई हरियाणवी आत्मा री पुकार सै। डॉ. सत्यवान सौरभ की ₹बोल म्हारी माटी₹ हरियाणा री बोली, रीति-नीति, अर् आत्मा नै लफ्जां में सजा दे सै। ई संग्रह हर घर, हर पाठशाला, हर शोधार्थी ताईं पहुंचणा चाहीए।

मैं अब सीधे चुनाव नहीं लड़ूंगा, अब युवा पीढ़ी को मौका दूंगा : केंद्रमंत्री जुएल ओराम

मनोरंजन सासमल , बरिष्ठ पत्रकार

भूबनेश्वर : सुंदरगढ़ सांसद केन्द्रमंत्री जुएल ओराम का बड़ा ऐलान। अब दोबारा चुनाव नहीं लड़ेंगे। संबलपुर में आयोजित रोजगार मेले में जुएल का बयान। उन्होंने कहा, मैं 10 बार चुनाव जीत चुका हूँ। 8 बार सांसद और 2 बार विधायक बना हूँ। पार्टी में रहकर पार्टी के लिए काम करूँगा। संगठन को मज़बूत करूँगा। पार्टी चाहेगी तो राज्यसभा भेजूँगा।मैं युवाओं को मौका दूँगा। मैंने पिछले चुनाव में घोषणा की थी कि मैं सांसद, विधायक का चुनाव नहीं लड़ूँगा। मेरे जीवन में कोई भी प्रतिहिंसा जैसी बात नहीं होगी। मैं पूरी तरह संतुष्ट हूँ, मैंने दी गई ज़िम्मेदारी को बखूबी निभाया है।'

केंद्रीय मंत्री जुएल ओराम पहली बार 1998 में सुंदरगढ़ लोकसभा क्षेत्र से सांसद चुने गए थे। अटल बिहारी वाजपेयी सरकार द्वारा नवगठित जनजातीय मामलों के मंत्रालय में उन्हें मंत्री पद मिला था।2004 में, वे तीसरी बार लोकसभा के लिए चुने गए।2009 में वे हार गए। वे 2014, 2019 और 2024 में सुंदरगढ़ लोकसभा क्षेत्र से चुने गए।जुएल ने 2014 में मोदी सरकार के पहले कार्यकाल में जनजातीय मामलों के मंत्री के रूप में शपथ ली। लगातार लोकसभा सीटें जीतते आ रहे जुएल को 2019 से 2024 तक मंत्री पद नहीं मिला। उस समय अर्जुन मुंडा को जनजातीय मामलों के मंत्रालय का प्रभार सौंपा गया था। पाँच साल बाद, जुएल को फिर मौका मिला। उन्हें अपना पुराना जनजातीय मामलों का मंत्रालय मिल गया।

"एक तस्वीर दिखाओ !" – डोभाल की ललकार और झूठ की चादर फाड़ते सैटेलाइट

[जब भारत ने दिखाया—हम न झुकते हैं, न डरते हैं, न छोड़ते हैं]

जब भारत की हुंकार गूंजी, तो दुश्मन की नींद उड़ गई। राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल ने जब पाकिस्तान के झूठ का पर्दाफाश किया, तो वह पल भारत के अडिग संकल्प और सामरिक शक्ति का स्वर्णिम अध्याय बन गया। ऑपरेशन सिंदूर की वह ऐतिहासिक रात, 7 मई, जब भारत ने अपनी स्वदेशी तकनीक और रणनीतिक सूझबूझ से आतंकी ठिकानों को राख में मिला दिया, न केवल एक सैन्य विजय थी, बल्कि भारत की उस अटूट नीति का दमदार ऐलान थी, जो आतंकवाद को जड़ से उखाड़ने के लिए कटिबद्ध है। डोभाल के शब्द, "मुझे एक तस्वीर दिखाओ, जिसमें भारत को नुकसान हुआ हो !"—ये शब्द हर भारतीय के दिल में गर्व की ज्वाला प्रज्वलित करते हैं। यह भारत का वह पराक्रम है, जो विश्व मंच पर नई इबारत लिखता है, जो दुश्मन को ललकारता है, और जो हर भारतीय को सिर उठाकर जीने की प्रेरणा देता है।

२२ अप्रैल को पहलगाम में हुआ वह कायराना आतंकी हमला भारत के दिल पर गहरी चोट था—हमारी संप्रभुता को चुनौती, हमारे नागरिकों की सुरक्षा पर प्रहार। मगर भारत ने चुप्पी नहीं साधी; उसने ऑपरेशन सिंदूर के जरिए ऐसी हुंकार भरी, जिसने पाकिस्तान के आतंकी ढांचे को जड़ से उखाड़ फेंका। नौ आतंकी ठिकाने—एक भी सीमावर्ती क्षेत्र में नहीं—भारत की सटीकता और सैन्य पराक्रम के सामने राख में तब्दील हो गए। महज २३ मिनट में, भारत ने अपनी स्वदेशी तकनीक और रणनीतिक सूझबूझ से न केवल दुश्मन को धूल चटाई, बल्कि यह भी सुनिश्चित किया कि कोई अनावश्यक नुकसान न हो। यह था भारत का वह शौर्य, जो सैन्य ताकत और नैतिकता का अद्भुत संगम बनकर विश्व पटल पर चमका।

पाकिस्तान और कुछ विदेशी मीडिया ने दुष्प्रचार का जहरीला जाल बुनने की कोशिश की, दावे किए कि भारत को भारी क्षति हुई। मगर अजीत डोभाल की एक ललकार ने उनके झूठ की नींव हिला दी—"एक तस्वीर, एक वीडियो, एक सबूत दिखाओ, जिसमें भारत का एक कांच भी टूटा हो !" यह सवाल न केवल पाकिस्तान के झूठ को बेनकाब करता है, बल्कि उन विदेशी मीडिया घरानों की साख को भी धूल में मिला देता है, जिन्होंने बिना सबूत के भ्रामक कहानियां गढ़ीं। सैटेलाइट तस्वीरों ने सच को दुनिया के सामने ला खड़ा किया—पाकिस्तान के 13 प्रमुख एयरबेस, सरगोधा, चकलाला, और रहीम यार खान, तबाही के मंजर में डूबे थे। रनवे, हैंगर, और इमारतें मलबे में तब्दील, जबकि भारत की धरती पर एक खरोंच तक नहीं! यह था भारत की तकनीकी श्रेष्ठता और रणनीतिक दक्षता का अटल प्रमाण, जो हर भारतीय के सीने में गर्व की लौ जलाता है।

ऑपरेशन सिंदूर भारत की आत्मनिर्भरता का वह स्वर्णिम पन्ना है, जिसने दुनिया को हमारी ताकत का लोहा मनवाया। अजीत डोभाल ने गर्व से ऐलान किया कि इस ऑपरेशन में स्वदेशी हथियारों और अत्याधुनिक तकनीक ने कमाल दिखाया—गार्ड-एक्स की सटीकता और राफेल विमानों की गर्जना ने दुश्मन को घुटनों पर ला दिया। यह महज एक सैन्य विजय नहीं थी; यह भारत के वैज्ञानिकों, इंजीनियरों और सैनिकों की उस अटूट मेहनत का उत्सव था, जिसने आत्मनिर्भर भारत का परचम लहराया। यह वह आत्मविश्वास था, जो चीख-चीखकर कहता है—हम न केवल अपनी धरती की हिफाजत कर सकते हैं, बल्कि दुश्मन को उसके घर में घुसकर सबक भी सिखा सकते हैं।

पाकिस्तान के झूठ का किला तब धराशायी हुआ, जब यह उजागर हुआ कि उसे चीन और तुर्की जैसे देशों का साथ मिल रहा था। हथियारों की सप्लाई हो या रीयल-टाइम सैटेलाइट तस्वीरें—उसके मित्रों ने हरसंभव कोशिश की, मगर भारत की रणनीतिक चतुराई और अचूक निशाने ने सारी साजिशें धूल में मिला दीं। डोभाल ने न्यूयॉर्क टाइम्स जैसे विदेशी मीडिया की बेबुनियाद खबरों को ललकारा, जिन्होंने बिना सबूत भारत को बदनाम करने की हिमाकत की। यह भारत का वह नया युग है, जो अब चुप नहीं रहता। आज का भारत हर झूठ का जवाब देता है—न केवल शब्दों से, बल्कि डंके की चोट पर, अपनी ताकत और सच्चाई के दम पर।

ऑपरेशन सिंदूर महज एक सैन्य कार्रवाई नहीं, बल्कि भारत की अटूट सुरक्षा और स्वाभिमान का दमदार ऐलान था। अजीत डोभाल की बुलंद आवाज ने न केवल पाकिस्तान को ललकारा, बल्कि विश्व मंच पर यह सिद्ध कर दिया कि भारत अब अपनी ताकत को छिपाता नहीं, बल्कि उसे गर्व के साथ ललकारता है। इस ऑपरेशन की गूंज आज भी पाकिस्तान के गलियारों में भय का सबब बनी हुई है—एक ऐसी गूंज, जो तब तक थमेगी नहीं, जब तक आतंकवाद का नामो-निशान मिट नहीं जाता। भारत ने अपने शत्रुओं को न केवल सबक सिखाया, बल्कि अपनी स्वदेशी तकनीक और अडिग संकल्प के दम पर यह जता दिया कि हमारा पराक्रम अजेय है। यह वह भारत है—जो न झुकता है, न रुकता है, और न ही अपने दुश्मनों को कभी बख्शता है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

आम बस कर्मचारी ने एक यात्री पर हमला किया और उसे बस से धक्का दे दिया !आम बस से यात्रा सुरखित नहीं क्या !

मनोरंजन सासमल , बरिष्ठ पत्रकार

भुबनेश्वरः राजधानी में आम बस स्टाफ की दादागिरी। हमारे बस स्टाफ ने एक यात्री पर हमला किया और उसे बस से धक्का दे दिया। स्टाफ ने उसे इसलिए पीटा क्योंकि उसने गलती से इमरजेंसी बटन दबा दिया था। कल, एक यात्री हमारी बस से भुवनेश्वर से कटक जा रहा था। सुबह 10:16 बजे पहल चैक के पास बस ने ब्रेक लगा दिए।एक यात्री को गिरने के डर से अपना संतुलन खोना पड़ा और उसने लोहे की छड़ पकड़ ली। उसका हाथ उस छड़ से लगे आपातकालीन बटन से टकरा गया। परिणामस्वरूप, बस रुक गई। इस घटना पर हमारे बस कर्मचारी तुरंत भड़क गए।

दो कर्मचारियों ने समूह बनाकर उस पर हमला कर दिया और उससे पूछा कि उसने आपातकालीन बटन क्यों दबाया। उन्होंने अन्य यात्रियों की मौजूदगी में बस के अंदर उस यात्री पर हमला किया। उन्होंने उसे घूँसे मारे और बस से बाहर धकेल दिया। वे उसे बाहर ले गए, उसकी पिटाई की और अस्पष्ट भाषा में गालियाँ दीं। कुछ यात्रियों ने इसका विरोध किया, लेकिन हमारे बस कर्मचारियों ने एक न सुनी। हमारे बस कर्मचारियों द्वारा उसे पीटने का वीडियो अब सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है।

युवा पीढ़ी के साथ सामंजस्य बिठाते हुए बढ़ें आगे !

हाल ही में हरियाणा के गुरुग्राम में नेशनल लेवल की टेनिस खिलाड़ी राधिका यादव(२५ वर्ष) की उसके ही पिता द्वारा गोली मारकर हत्या कर दी गई, वास्तव में यह बहुत ही दुखद और त्रासद है। अब यहां सवाल यह उठता है कि यह मामला ऑनर किलिंग का है या इसके पीछे बात कुछ और थी ? जो भी हो निर्मम हत्या की खबर ने हर किसी को झकझोर के रख दिया है। राधिका यादव की घटना के अलावा इधर नारनौंद उपमंडल के गांव बास के एक निजी स्कूल संचालक पर भी दो छात्रों ने हमला कर दिया, जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई, यह बहुत ही दुखद है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार गुरुवार गुरु पूर्णिमा के दिन, नारनौंद के एक स्कूल के दो छात्रों ने स्कूल संचालक पर चाकू से हमला कर दिया था, जहां एक निजी अस्पताल में इलाज के दौरान स्कूल संचालक की मौत हो गई तथा हमले के बाद दोनों आरोपी छात्र मौके से फरार हो गए। दोनों ही घटनाओं में रिश्तों और आत्मीय अहसासों का कत्ल हुआ है ।यह बहुत ही दुखद है कि आज हमारे समाज में रिश्ते तार-तार होते चले जा रहे हैं और रिश्तों में एक घुटन पैदा हो चुकी है। यह ठीक है कि समय के साथ आज मनुष्य की जरूरतें, इच्छाएं और प्राथमिकताएं बदलीं हैं,शादी, बच्चे, नौकरी, या किसी अन्य शहर में रिहायश से रिश्तों में आमूलचूल परिवर्तन आएं हैं। पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव भी हमारे रिश्तों-नातों पर कहीं न कहीं अवश्य ही पड़ा है ।काम के दबाव, सामाजिक दबाव, या परिवार के सदस्यों के हस्तक्षेप जैसे बाहरी कारकों ने भी रिश्तों को कहीं न कहीं प्रभावित किया है। आपसी विश्वास, भरोसे की कमी रिश्तों में दूरियां पैदा कर रही है ।समय के साथ, मनुष्य की रुचियां और प्राथमिकताएं बदली हैं, जिससे रिश्तों में बदलाव आएं हैं ।एकल परिवार भी एक बड़ा कारण है, लेकिन रिश्तों को निभाने के लिए आपसी संवाद, विश्वास, भरोसा एक दूसरे की भावनाओं और जरूरतों को समझने के साथ ही साथ एक दूसरे के लिए समय निकालने, तथा जब कोई समस्या या परेशानी आती है, तो उसे नज़रअंदाज़ करने के बजाय, एक-दूसरे के साथ मिलकर उसका समाधान खोजने का प्रयास करने की आवश्यकता होती है। वास्तव में, कहना ग़लत नहीं होगा कि रिश्तों को बनाए रखने के लिए, धैर्य, समझ, और प्रयासों की आवश्यकता होती है। हमें यह बात अपने जेहन में रखनी चाहिए कि रिश्ते समय के साथ विकसित होते हैं, और कभी-कभी बदलाव होना स्वाभाविक है ।गुरु ग्राम और नारनौंद में जो घटना हुई है,इन घटनाओं ने हर किसी के मन और आत्मा को विचलित किया है कि आखिर क्यों ऐसी घटनाएं हमारे समाज में क्योंकर घटित हो रहीं हैं ? आज हमारे में न सहनशीलता ही रही है और न ही धैर्य और संयम ।हम छोटी-छोटी या यूं कहें कि ज़रा-ज़रा सी बातों को अपने 'इगो' (अहम) हिस्सा बना लेते हैं और क्रोध या तैसे में आकर ऐसा कुछ कर बैठते हैं कि फिर पश्चाताप के अलावा हमारे पास करने को कुछ शेष नहीं बचता है। आज आए दिन मीडिया की सुर्खियों में हम रिश्तों के कत्ल की खबरें पढ़ते-सुनते हैं, यह दर्शाता है कि आज हमारा समाज एक ग़लत दिशा में और अनैतिकता की ओर जा रहा है। गुरु ग्राम घटना के संदर्भ में सोशल मीडिया पर राधिका यादव का एक वीडियो वायरल हो रहा है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार यह वीडियो एक साल पहले शूट किया गया था। सवाल यह भी उठ रहा है कि क्या यह वीडियो तो राधिका की हत्या की वजह नहीं ? मीडिया में आई खबरों के अनुसार राधिका यादव ने एक साल पहले म्यूजिशियन इनामुल के साथ एक वीडियो बनाया था। इसमें लव स्टोरी दिखाई गई थी। राधिका की हत्या के बाद यह वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। हालांकि घटना के पीछे का सारा सच क्या है यह तो जांच पड़ताल के बाद ही सामने आ पाएगा। बहरहाल, यहां सवाल यह भी उठता है कि क्या जनरेशन गैप के कारण समाज में ऐसी घटनाएं जन्म ले रही हैं अथवा इसके पीछे कोई अन्य कारण हैं ? यह ठीक है कि अलग-अलग पीढ़ियों के लोगों के बीच सोच, मूल्यों, व्यवहार और दृष्टिकोणों में अंतर पाया जाता है, लेकिन जरूरत इस बात की है कि दोनों ही पीढ़ियां (बुजुर्ग और युवा) एक दूसरे के दृष्टिकोण, व्यवहार और मूल्यों को समझें। यह ठीक है कि युवा पीढ़ी निर्णयों में बुजुर्गों की तुलना में कुछ ज्यादा उतावली व आक्रामक होती है, लेकिन बुजुर्गों का यह दायित्व बनता है कि वे युवा पीढ़ी का नैतिक व सही मार्गदर्शन करें, उन्हें समझाएं-बुझाएं। जानकारी के अनुसार राधिका सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर बनना चाहती थी,उनकी हत्या से खेल जगत गमगीन है। आज 'बेटी बचाओ,बेटी पढ़ाओ' का जमाना है और हरियाणा की लड़कियां तो वैसे भी दुनिया में हर क्षेत्र में बेहतरीन काम कर रहीं हैं। इस संदर्भ में ओलंपिक में स्वर्ण पदक जीतने वाले नीरज चोपड़ा ने यह बात कही है कि परिवार को लड़कियों को हर तरह का सहयोग देना चाहिए। प्रत्येक मनुष्य की तरह ही एक लड़की के भी अपने अरमान और सपने होते हैं, ऐसे में यदि कोई लड़की कुछ बनना चाहती है, अथवा अपने सपनों को पंख देना चाहती है तो परिवार का यह दायित्व बनता है वह उसके सहयोग के लिए आगे आए, न कि उसके सपनों,अरमानों के आगे रोड़ा बने ।दो साल पहले लगी चोट के कारण टेनिस में करियर बनाने से दूर रहने के बाद, राधिका सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर बनने की ख्वाहिश रखती थीं और वह अक्सर इंस्टाग्राम पर रील बनाकर अपलोड करती थीं। दीपक अपनी बेटी की सोशल मीडिया पर मौजूदगी से नाराज था। उसने उसे रील डिलीट करने को भी कहा था ।जानकारी के अनुसार दीपक अपनी बेटी के टेनिस अकादमी चलाने, उसके बढ़ते कद और आर्थिक आजादी से भी खुश नहीं था। दीपक ने पुलिस के सामने यह कबूल किया है कि गांव वालों के तानों ने उसके गुस्से को और भड़का दिया, जो यह कहते थे कि वह अपनी बेटी की कमाई पर पल रहा है। गौरतलब है कि राधिका ने विभिन्न टेनिस टूर्नामेंटों में हरियाणा और देश का प्रतिनिधित्व किया था और कई पदक और पुरस्कार जीते थे। विभिन्न समाचार-पत्रों में गुरुग्राम में राज्य स्तरीय टेनिस खिलाड़ी की हत्या की वजह उसके रील बनाने का जुनून बताया गया है, तो अन्य पत्रों में बेटी द्वारा टेनिस अकादमी खोलने से पिता का नाराज होना बताया गया है, लेकिन वास्तव में ये कोई ऐसी वजह नजर नहीं है कि पिता ही अपने ही जिगर के टुकड़े को गोली मार दे। जाहिर है विवाद व टकराव की लंबी पृष्ठभूमि रही होगी। बहरहाल, कहना ग़लत नहीं होगा कि आज हमारे सामाजिक परिवेश में लगातार बदलाव आ रहें हैं। नई पीढ़ी के सोचने-समझने के तरीके बुजुर्ग पीढ़ी से अलग व जुदा हैं। ऐसे में हमारी युवा पीढ़ी, बुजुर्गों के साथ सामंजस्य नहीं बिठा पा रही है ।नई पीढ़ी की स्वच्छंदता व स्वतंत्रता और अपने बड़े फैसले स्वयं लेने की प्रवृत्ति बुजुर्ग पीढ़ी को रास नहीं आ रही है, जिसका प्रतिकार या यूं कहें कि विरोध वे हिंसक तरीके से करने लगे हैं। वहीं नारनौंद में हुई घटना हमें आक्रामक होते किशोरों की हकीकत पर विचार करने को बाध्य करती है। दो छात्रों ने प्रिंसिपल की हत्या किस वजह से की, उसकी हकीकत की असली तस्वीर हालांकि पूरी जांच के बाद ही सामने आ पाएगी, लेकिन बात कोई भी हो किसी छात्र द्वारा गुरु की हत्या करने की वजह नहीं हो सकती ।कहा जा रहा है कि प्रिंसिपल सख्त और बेहद अनुशासनप्रिय थे, लेकिन ये वजह किसी शिक्षक की हत्या को तार्किकता नहीं दे सकती। अनुशासनप्रिय होना अच्छी बात है, लेकिन यह बहुत ही दुखद है कि आज की युवा पीढ़ी अनुशासन में कम ही रहना चाहती है। कहना ग़लत नहीं होगा कि आज की युवा पीढ़ी कड़े अनुशासन को बर्दाश्त करने को तैयार नहीं है। पहले के जमाने में तो शिक्षा अध्यापक केंद्रित थी और अनुशासन तोड़ने पर छात्रों की पिटाई आम बात हुआ करती थी, लेकिन आज की शिक्षा छात्र केंद्रित हो गई है। इसका यह मतलब तो नहीं है कि छात्र अपनी मनमर्जी से किसी भी तरह का व्यवहार करें। छात्रों को यह चाहिए कि वे अनुशासन में रहें और अपने अध्यापकों की नसीहतों, उनके सुझावों,उनकी बातों को ध्यान में रखकर उनका पालन करें, न कि उनका बात-बात में विरोध करें। कोई भी अध्यापक किसी भी छात्र को कभी भी ग़लत राय या ग़लत शिक्षा नहीं देता है। छात्रों को संयम व धैर्य रखते हुए नैतिकता व अच्छे स्वभाव का परिचय देना चाहिए ।हमारे सोशल साइंटिस्ट को भी ऐसी घटनाओं(नारनौंद घटना) के आलोक में बदलते परिवेश में किशोरों की आक्रामकता के कारणों का मंथन करने की आवश्यकता महती है। बहरहाल, गुरु ग्राम की घटना के संदर्भ में राधिका के पिता ने बेटी को तब गोली मारी, जब वह रसोई बना रही थी, तथा उस दिन उसकी मां का जन्मदिन भी था ।इस संदर्भ में जांच-पड़ताल लगातार जारी है, तथा पुलिस हर कोण से पूछताछ कर रही है। पिता ने हत्या की बात कुबूल ली है और उसके शुरुआती जवाब से यही लगता है कि कथित सम्मान के नाम पर हत्या हुई है। राधिका 'वर्सेटाइल जीनियस'(बहुआयामी प्रतिभा) थी और जाहिर है, उसे जीनियस बनाने में उसके पिता का बड़ा हाथ था। ऐसे में यहां सवाल यह उठता है कि क्या राधिका के पिता से राधिका की ख्याति, तरक्की और उसकी आत्मनिर्भरता देखी नहीं गई ? राधिका अपनी टेनिस अकादमी के अलावा, सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर बनकर सोशल मीडिया से भी कमाई कर रही थी। वह अपने पिता या परिवार पर किसी भी तरह से बोझ नहीं थी, तो फिर आखिर क्यों उसका पिता ही अपनी ही बेटी का दुश्मन हो गया ?अगर पिता ने यह बताया है कि लोग उसे बेटी की कमाई खाने वाला बताकर अपमानित करते थे, तो यह बहुत ही शर्मनाक और निंदनीय बात है। बहरहाल, कहना चाहूंगा कि आज बेटियाँ हर क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर देश का नाम रोशन कर रही हैं और वे बोझ नहीं हैं बल्कि हमारे समाज, हमारे देश का अभिमान हैं। यह बहुत ही दुखद है कि आज भी बेटियों को समाज में बेटों के समान स्थान प्राप्त नहीं है। हमें जरूरत इस बात की है कि हम समाज की बेटियों के प्रति इस मानसिक सोच को बदलें, इसमें परिवर्तन लाएं। इससे बड़ी बात भला और क्या हो सकती है कि आज के इस आधुनिक युग में भी बेटियों को कमतर आंकने वालों या पराया धन मानने वालों की कमी नहीं है। बहरहाल, आज जरूरत इस बात की है कि हम महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और व्यक्तिगत रूप से सशक्त बनाने की दिशा में काम करें, ताकि वे जीवन में अपने लक्ष्यों, उद्देश्यों को प्राप्त कर सकें और आगे बढ़ सकें। वास्तव में, इसमें शिक्षा, स्वास्थ्य, आर्थिक अवसर और राजनीतिक भागीदारी जैसे क्षेत्रों में महिलाओं के लिए समान अवसर और अधिकार सुनिश्चित करना शामिल है। आज जरूरत इस बात की है कि हमारे समाज में नये बदलावों को स्वीकार करें और अपनी युवा पीढ़ी के साथ सामंजस्य बिठाते हुए आगे बढ़ें।

- सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट

राजस्व कर्मचारी चढ़ा एसीबी के हाथ

ओडिशा का पूर्व राजस्व जिला बना बिहार , झारखंड में भूमि- भ्रष्टाचार का बड़ा अड्डा

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

सरायकेला ,भ्रष्टाचार का बारूदी ढेर पर बसा सरायकेला खरसावां जिले का जमीन खरीद विक्री, अधिग्रहण , उद्योग स्थापित के नाम कागजी प्रक्रिया, सरकारी स्वीकृति , नामांतरण आदि का बड़ा जरिया रहा है कार्यालयों मे कमाई का जहां भ्रष्टाचार रूपी काल राज करता रहा है निर्विरोध 1948 से। इसी क्रम में आज चांडिल इलाके में वाहां के एक राजस्व कर्मचारी शमि वर्मन को एंटी करप्शन विभाग ने जमशेदपुर से आकर दस हजार रूपये रिश्वत लेते धरा दबोचा है । जो 10 हजार मामूली सी रकम भर है । पर बड़े चूहे विल में रहते राजनीतिक व प्रशासनिक छत्रछाया में ।

प्राप्त जानकारी के अनुसार एक आदिवासी युवक राजेश हेम्ब्रम की शिकायत के आधार पर एसीबी ने धाबा बोला है ।जिसने उसकी पुश्तैनी जमीन से जुड़े दस्तावेज ऑनलाइन पंजी-2 में नाम दर्ज कराने के लिए कर्मचारी द्वारा घूस मांगने के बाद रकम ली जा रही थी।

इस शिकायत पर त्वरित कार्रवाई करते हुए एक ही बी की टीम ने जाल बिछाया और जैसे ही राजस्व कर्मचारी शनि बर्मन ने रिश्वत की राशि ली, टीम ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। इसके बाद उन्हें हिरासत में लेकर आगे की पूछताछ शुरू कर दी गई है।

झारखंड मामला न केवल व्यक्तिगत भ्रष्टाचार का उदाहरण है, बल्कि यह सरकारी तंत्र में व्याप्त उस गहरी समस्या है, विशेष कर इसी जिले में जिससे ।यहां उल्लेखनीय है कि सरायकेला खरसावां दो देशी रियासत का विलय ओडिशा में हुआ था तथा ओडिशा का एक राजस्व जिला रहा।

जिसे षड्यंत्र के तहत बिहार में एक वर्ष के लिये जे जाया गया था जो आज तक वापस ओडिशा को लौटाया नहीं गया । यहां की जमीनें जो मूलवासी है उनसे दलाल विगत पचास साठ वर्ष से लूट रहे हैं । पूर्व एवं आर डी सी सरायकेला सरोज श्रीवास्तव , प्रशासनिक अधिकारी लक्ष्मी सिंह (कालान्तर में मुख्य सचिव , झारखंड) की सराहना के जमीन संबंधी कार्यकाल से छवि रंजन एवं अरवा राजकमल तक (उपायुक्त , रवि शंकर ने कुछ पाबंदी अवश्य लगा रखी थी) देखा जाय तो न जाने कितने अधिकारी सलाखों के पीछे होंगे !!

मारवाड़ी युवा मंच पर्ल महिला शाखा सिकंदराबाद द्वारा पुस्तक वितरण पढ़ेगा इंडिया तो बढ़ेगा इंडिया का प्रथम चरण संपन्न हुआ

जगदीश सीरवी

तेलंगाना। सिकंदराबाद शाखा मंत्री सुमन घोड़ेला द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार शाखा की अध्यक्षता शीतल जैन की नेतृत्व में यह कार्यक्रम शाखा की सदस्य की तरफ से गुप्त दान और संतोष देवी जैन की पुण्य स्मृति में राकेश कुमार साहिल एवं मेघा की तरफ से गवर्नमेंट प्राइमरी मडफोरट स्कूल सिख विलेज तिरुमला गिरी मंडल के 290 बच्चों को 1500 पुस्तक ,स्टेशनरी का सामान पेंसिल, रबर, शॉपनर दिए गए।।

इस प्रोग्राम को सफल बनाने में प्रीति सोनी, मंजू घोड़ेला, योगिता अलीजार, चंदा मोदी, वीना जैन, ज्योति मखाना, ममता पीरगल, उर्मिला ढल्ला, ममता चौरडिया, अंजू बाफना, शीला धोखा, रेखा कारगवाल और रिया सिंघी रहे हैं। नरीचेतना संयोजिका मेघा सिंघी ने सभी का आभार व्यक्त किया।।

मधुश्री का कमाल अवैध बालू हायबा पकड़ रात भर मचाई धमाल एनजीटी आदेश को धत्ता बताकर झारखंड से करोड़ रू की रेत चोरी

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड- झारखंड

रांची। नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल के सख्त आदेश के बावजूद सरायकेला खरसावां जिले के इचागढ़ अनुमंडल अवैध बालू कारोबार का जोन बना हुआ है । यद्यपि खनन विभाग ने कड़ा रूख अपनाया है, परन्तु ये माफिया देर रात बालू चला रहे हैं ।आज जिला परिषद उपाध्यक्ष तेज तर्रार महिला मधु श्री महतो ने देर रात से अवैध बालू से लदे दो हायबा को ग्रामिणों के जरिये पकड़ लिया ।जहां रात से सुबह पौ फटने तक सैकड़ो की संख्या में लोग उनके साथ उपस्थित रहे ।वे पुलिस एवं प्रशासन की निष्क्रियता से खपा थे।स्वयं मधुश्री ने कमान संभाल रखी थी तथा अंचल के राजस्व अधिकारी एवं जिला खनन पदाधिकारी को इसकी जानकारी दी गयी । मधुश्री के अनुसार उन्होंने अनेकों बार माफियाओं के खिलाफ अभियान चलाया तथा तिरूलडीह थाना एवं अंचल कुकुडू के अधिकारी की अतंर लिप्तता बताई है । जहां उपायुक्त के निर्देश पर खनन विभाग के तेजतर्रार अधिकारी ज्योति शंकर सतपथी ने सुसंगत तरीके से कानूनी कारवाई भी की है ।

मधुश्री के अनुसार जब आम जनता के एक ट्रेक्टर पकड़ते हैं तो वहीं बड़े 60 टन की हायबा का संचालन होना प्रशासन की मिली भगत को दर्शाता है । आज इन दो हायबा को खनन विभाग के हवाले किया गया ।सच तो यह है कि यहां बड़े बड़े माफिया इस कारोबार को वर्षे से संभाले हुए हैं ।करोड़ों की राजस्व लूट में परिवहन विभाग की भी चांदी कटती है ।यहां से मलाई अनेकों को बंटने की सूचना है ।एन जी टी की दिल्ली एवं क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता को इस दिशा में कमर कसने का समय आ गया है।

सच पुछा जाय तो झारखंड बंगाल सीमावर्ती इलाके में पुलिस एवं प्रशासनिक अधिकारी दिल्ली के बड़े मिडिया को सही ढंग जबाब देने के बजाय थोड़ी सी बात कर फोन काट देते हैं ।जिससे प्रतिमाह करोड़ों का राजस्व इस झारखंड बंगाल सीमावर्ती इलाके से झारखंड सरकार को क्षति हो रही है ।

प०सिंहभूम में माओवादियों से दो आईईडी जप्त, पांच बंकर नष्ट

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

चाईबासा मुख्यालय , झारखंड के पश्चिमी सिंहभूम जिले में सुरक्षा बलों के जवान जिला पुलिस बल के साथ मिलकर लगातार जंगलों में सर्च ऑपरेशन चला रहे हैं । यहां वन क्षेत्र में सुरक्षा बलों ने माओवादियों के 5 बंकर ध्वस्त कर दिये । उनके द्वारा लगाये गये 2 परिष्कृत विस्फोटक उपकरण (आईईडी) बरामद किये. पुलिस ने शनिवार को यह जानकारी दी ।

पश्चिमी सिंहभूम के पुलिस अधीक्षक राकेश रंजन ने एक बयान में कहा कि सुरक्षा बलों को जानकारी मिली थी कि माओवादियों ने नक्सल रोधी कार्रवाई को बाधित करने के लिए छोटानागरा क्षेत्र के जंगलों में बड़ी मात्रा में विस्फोटक छिपा रखे हैं। इसी सूचना के आधार पर सुरक्षा बलों की संयुक्त टीम ने तलाशी अभियान शुरू किया।

एसपी चाईबासा ने बताया कि शुक्रवार को अभियान के दौरान सुरक्षाकर्मियों ने 2 आईईडी बरामद किये और माओवादियों के 5 बंकरों को ध्वस्त कर दिया. पुलिस अधीक्षक ने बताया कि टीम ने बंकरों से डेटोनेटर और 3 बम सहित अन्य सामान भी बरामद किये।

एसपी कार्यालय की ओर से जारी एक बयान में कहा गया है कि बम निरोधक दस्ते ने सभी विस्फोटकों को मौके पर ही निष्क्रिय कर दिया। एसपी ने कहा कि झारखंड से नक्सलियों के खात्मे के लिए सुरक्षा बलों और पुलिस बल का अभियान लगातार जारी रहेगा।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023